सम्मेलन की साहित्य-रत्न परीक्षा उत्तीर्ण कर आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से 'हिन्दी उपनामों का अनुशीलन एवं अन्वेषण' विषय में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है। सम्प्रति नेशनल लाइब्रेरी में आप वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी हैं।



आप बहुभाषाविद् हैं – हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला, गुजराती, मराठी तथा फ्रेंच भाषाओं के आप आधिकारिक ज्ञाता हैं। अपने शोध प्रपत्रों (पेपर्स) का वाचन आप अखिल भारतीय प्राच्य सम्मेलन, अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन, अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन एवं अन्य कान्फ्रेंसों में कर चुके हैं।

आप कुशल वक्ता तथा अन्वेषी लेखक हैं। आप की प्रमुख प्रकाशित कृतियाँ हैं – पुस्तकालय : एक चिन्तन, उपनाम : एक अध्ययन, भारतीय व्याकरण एवं रचना। सात आधुनिक एकांकी, साहित्य सरोज, विशिष्ट पुस्तकालयों की भारतीय संघ पत्रिका तथा अंग्रेजी भाषा में आथर्स टेबल फार इंडियन नेम्स का आपने सम्पादन किया है।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय की कार्यकारिणी के आप सदस्य रह चुके हैं तथा आप के शोध-प्रबन्ध इसके विभिन्न ग्रन्थों में प्रकाशित होते रहते हैं, यथा – सूरदास : विविध सन्दर्भों में, वन्देमातरम शतवर्ष पूर्ति स्मारिका, हल्दीघाटी चतुःशती स्मारिका, शिवाजी राज्यारोहण त्रिशताब्दी स्मारिका।

भारत सरकार द्वारा आयोजित प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ परीक्षाओं में आप परीक्षक एवं पर्यवेक्षक रह चुके हैं। विभिन्न नाट्य एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में आप निर्णायक बन चुके हैं।

हिन्दी साहित्य तथा पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए आप सम्मानित हो चुके हैं। गांधी शताब्दी समारोह में राष्ट्रपति द्वारा आप प्रशस्ति-पत्र तथा स्वर्ण पदक से अलंकृत हुए। उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा आप को ५००० रुपये का पुरस्कार प्रदत्त किया गया।

आप अन्वेषक विद्वान तथा कर्मठ हिन्दी साहित्यसेवी हैं। ●

रंगनाथ त्रिपाठी 'राकेश'

आप का जन्म १६ अगस्त १९३५ ई० को जौनपुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय से हिन्दी तथा संस्कृत साहित्य में एम. ए. की उपाधि प्राप्त कर आप ज्ञानपीठ की पत्रिकाओं – ज्ञानोदय, आदि के सह-सम्पादक रह चुके हैं। सम्प्रति कलकत्ता



से भारत सरकार द्वारा प्रकाशित 'राजभाषा भारती' के आप उप-सम्पादक हैं।

आप कृती रचनाकार भी हैं। आप की प्रायः ५०० कविताएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं

में प्रकाशित हो चुकी हैं। आप की ८ पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। बंगला की अनेक कविताओं, कहानियों तथा उपन्यासों का हिन्दी भाषा में आप ने अनुवाद किया है। समसामयिक विषयों पर आप के लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

आप सजग तथा कर्त्तव्यनिष्ठ हिन्दी साहित्यसेवी हैं। •

डॉ. रामप्रीत उपाध्याय

आप का जन्म ५ अक्टूबर १९३६ ई० को असराढ़ी (रोहतास) में हुआ। शिवराज उपाध्याय के आप पुत्र हैं। अंग्रेजी एवं हिन्दी साहित्य में एम. ए. कर आप ने साहित्य-रत्न एवं पी-एच. डी. की उपाधि भी प्राप्त की। वर्त्तमान में आप कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में व्याख्याता हैं।



आप राष्ट्रवादी रचनाकार हैं। सशक्त व्यंग्य के सहारे आप सामाजिक विसंगतियों को बेनकाब करते हैं। आप की महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं – आधुनिक निबंध की रुपरेखा, निराला का काव्य दर्शन एवं शिल्प, तुलसी का काव्य दर्शन, हिमालय दर्शन, मालविका, सागरिका, मीरा पदावली, काफी हाउस आदि।

साहित्यिक पत्रिका अर्पणा का आप सम्पादन कर रहे हैं। आकाशवाणी से भी आप की वार्त्ताएं प्रसारित होती हैं।

आप जनवादी चिंतक तथा सर्जनात्मक लेखक हैं। •

स्व. उमापति दत्त पाण्डेय

आप का जन्म ५ नवम्बर १८७२ ई० को चिलहरी गाँव (भोजपुर) में हुआ था। प्रयाग विश्वविद्यालय से बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर सोनबरसा हाईस्कूल में आप प्रधानाध्यापक बन गए। १९०२ ई० में कलकत्ता आ कर आप विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय में संस्कृत के अध्यापक बन गए।

आप की रचनाएं हितवार्त्ता, हिन्दी प्रदीप, भारत मित्र तथा हिन्दी बंगवासी आदि प्रसिद्ध पत्रों में प्रकाशित होती थीं। ज्योतिष, भाषा विज्ञान, नीति तथा साहित्य – सभी पर आप साधिकार लिखते थे। जस्टिस शारदा चरण मित्र द्वारा स्थापित 'एक लिपि विस्तार परिषद' के मुखपत्र 'देवनागर' के सम्पादक के रूप में आपने भाषायी एकता में महत्वपूर्ण योगदान किया था। आप बहु भाषाविद् थे। फ्रेंच, जर्मन, सिंहली, स्यामी आदि विदेशी भाषाओं के आप ज्ञाता थे। आप ने अनेक विदेशियों को संस्कृत पढ़ायी। बंगाल सरकार के अनुवाद विभाग में आप सहायक के पद पर रहे।

विभिन्न साहित्यक संस्थाओं के आप सम्मानित सदस्य थे, यथा – एशियाटिक सोसाइटी आप बंगाल, रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ ग्रेट ब्रिटेन, बंगीय साहित्य परिषद, नागरी प्रचारिणी सभा (काशी एवं आरा)। आप की विद्वता की प्रशंसा पं० मदनमोहन मालवीय, पं० सुधाकर द्विवेदी तथा सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी प्रभृति अग्रगण्य विभूतियों ने भी की।

आप प्रकाण्ड विद्वान तथा कर्मठ हिन्दी सेवी थे। •

स्व. जस्टिस शारदाचरण मित्र

आप का जन्म १७ दिसम्बर १८४८ ई० को कलकत्ता में हुआ। अल्पावस्था में ही अनाथ हो जाने के बावजूद कठिन परिश्रम एवं दृढ़ निश्चय से आप ने कलकत्ता विश्व-विद्यालय से १८७० ई० में बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और केवल एक मास बाद ही एम. ए. की परीक्षा भी दी। इन दोनों में परीक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त कर आप मात्र २१ वर्ष की आयु में सुप्रसिद्ध 'प्रेसीडेन्सी कालेज' में अंग्रेजी के प्रवक्ता बन गए। कालान्तर में बी. एल. की उपाधि प्राप्त कर आप कलकत्ता उच्च न्यायालय में वकालत करने लगे और १८९२ ई० में न्यायाधीश (जस्टिस) बने।



अपने अनन्य साहित्यानुराग के लिए आप प्रख्यात थे। 'हावड़ा हितकारी' पत्र के आप सम्पादक थे। देवनागरी लिपि के आप प्रखर समर्थक थे। आप का यह दृढ़ विश्वास था कि भारत की एकता के लिए 'एक भाषा तथा एक लिपि' का होना अनिवार्य है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आप ने 'एक लिपि विस्तार परिषद' की स्थापना की, समग्र देश में तदर्थ आन्दोलन चलाया एवं 'देवनागर' पत्र का प्रकाशन किया, जिसमें समस्त भारतीय भाषाओं की प्रतिनिधि रचनाएँ देवनागरी लिपि में प्रकाशित होती थीं और साथ ही उनका हिन्दी अनुवाद भी रहता था।

आप सार्वजनिक तथा शैक्षणिक संस्थाओं से घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध थे। १८७८ ई० में आप कलकत्ता नगर निगम के पार्षद निर्वाचित हुए। १८८४ ई० में बंगाल टेक्स्ट बुक कमेटी के आप सदस्य मनोनीत हुए। १८८५ ई० में आप कलकत्ता विश्वविद्यालय के 'फेलो' चुने गए तथा १९०१ ई० में डीन आफ द फैकल्टी आफ आर्टस् बन गए। १९१३ ई० में आप बड़ाबाजार लाइब्रेरी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

आप का निधन १९१७ ई० में हुआ। हिन्दी भाषा के अनन्य प्रचारक के रूप में आप चिर-स्मरणीय रहेंगे। •

पं. देवनारायण द्विवेदी

आप का जन्म १८९७ ई० में भइसा गाँव (मिर्जापुर) में हुआ। पं० रामप्रसाद द्विवेदी आप के पिता थे।

१९२१ ई० में असहयोग आन्दोलन में भाग लेकर आप जेल गए। 'हिन्दी नाट्य समिति' के संस्थापकों में आप थे। इसके माध्यम से 'पंजाब का हत्याकाण्ड' तथा अन्य पुस्तिकाएँ प्रकाशित कर जनसाधारण में स्वाधीनता की चेतना जागृत की।

१९२३ ई० के कांग्रेस अधिवेशन में आप ने "देश की बात" पुस्तिका बँटवाई। राजद्रोह का अभियोग लगा कर यह पुस्तिका अंग्रेजी शासन ने जब्त कर ली। यही स्थिति 'सुख - साधन' पुस्तिका की हुई। प्रखर राष्ट्रवादी पत्र 'काशी - समाचार' के आप सम्पादक रहे।

आप की अध्यक्षता में काशी की प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था 'ज्ञान मण्डल' (सम्प्रति दैनिक 'आज' समूह) ने वृहद् अंग्रेजी - हिन्दी कोष, वाङमयार्णव (संस्कृत कोष), हिन्दी साहित्य कोष (२ भाग में) प्रकाशित किए। कालान्तर में भाषा-विज्ञान कोष, अशोक अभिलेख, आदि सन्दर्भ ग्रन्थ भी आप के निर्देशन में

प्रकाशित हुए। अखिल भारतीय प्रकाशक संघ के आप दो बार अध्यक्ष रह चुके हैं।

दहेज, प्रणय, कर्त्तव्याघात, पश्चात्ताप आदि आप के प्रमुख मौलिक उपन्यास हैं। आप ने रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'गीतांजली' का हिन्दी में पद्यानुवाद किया। अरविन्द तथा शरत चन्द्र के साहित्य का भी आप ने हिन्दी में अनुवाद किया। तुलसीकृत रामचरित मानस, विनय पत्रिका, कवितावली एवं हनुमान बाहुक के आप ने भाष्य लिखे हैं।

आप सर्जनात्मक रचनाकार तथा निर्भय देशभक्त हैं। ●

बनारसी दास चतुर्वेदी

आप का जन्म २४ दिसम्बर १८९२ ई० को फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उच्च शिक्षा प्राप्त कर आप इन्दौर में प्राध्यापक हो गए। १९२० ई० में अध्यापन छोड़ कर आप दीनबन्धु एण्ड्रूज के सानिध्य में शान्ति निकेतन आ गए और साहित्य-सर्जन तथा पत्रकारिता के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।



बड़ाबाजार से प्रकाशित सुप्रसिद्ध पत्रिका 'विशाल भारत' के आप सम्पादक बन गये। श्रीराम शर्मा आप के सहयोगी थे। आप की पत्रिका में प्रकाशित साहित्यिक समालोचना बड़ी सटीक होती थी। आप स्पष्टवादी तथा दूरदर्शी समालोचक के रुप में विख्यात हो गए। १९३३ ई० में जब आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का लेख विशाल भारत में छपा था, तभी आप ने सम्पादकीय टिप्पणी उस पर लिख दी कि यह नवागत लेखक भविष्य में हम सब से आगे बढ़ जाएगा। 'उग्र' की कहानियों और कविताओं को आपने घासलेटी साहित्य घोषित कर उन की भर्त्सना की। 'मधुकर' एवं 'विंध्यवासिनी' पत्रों का भी आप ने सम्पादन किया।

आप ने बहुत सारी पुस्तकें लिखीं है, जिनमें प्रमुख हैं—हमारे आराध्य, रेखाचित्र, संस्मरण आदि। क्रांतिकारियों पर भी आपने पुस्तकें लिखी हैं, क्रांतिकारियों के पत्रों का संग्रह आपने प्रकाशित करवाया है।

कालान्तर में अपनी गौरवपूर्ण साहित्यिक उपलब्धियों के लिए आप राज्य सभा के सदस्य बनाए गए। १९७३ ई० में राष्ट्रपति ने आप को 'पद्म भूषण' से अलंकृत किया। सम्प्रति कोटवार (गढ़वाल) में आप वार्धक्य व्यतीत कर रहे हैं।

सर्जनात्मक रचयिता तथा निर्भय पत्रकार के रूप में आप सुविख्यात हैं। ●

मास्टर फिदा हुसैन उर्फ 'प्रेमशंकर नरसी'

आप का जन्म ११ मार्च १८९९ ई० को मोरादाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ। १९१९ ई० में न्यू अल्फ्रेड कम्पनी नामक पारसी नाट्य-दल से आप सम्बद्ध हो गए। इसके लेखक-निर्देशक पं० राधेश्याम कथा-वाचक से आप ने नाट्य-शिक्षा ग्रहण की।

१९३३ ई० में आप कलकत्ता आ कर भारतलक्ष्मी स्टूडियो में काम करने लगे। १९३७ ई० कज्जन बाई की मशहूर नाट्य-मंडली में आप निर्देशक तथा प्रमुख कलाकार के रूप में शामिल हुए। १९४१ ई० में

कानपुर में आप ने 'नरसी थियेटर कम्पनी' की स्थापना की, जो १९४२ ई० के आंदोलन में बंद हो गई। तब आप दिल्ली चले गए। वहीं पर जगद्गुरु शंकराचार्य ने 'नरसी भगत' नाटक देख कर आप को 'नरसी' की उपाधि दी। महामना पं० मदन मोहन मालवीय ने आपको 'प्रेमशंकर' की उपाधि भी यहीं दी।



१९४९ ई० में कलकत्ता पुनरागमन पर आप ताराचन्द स्ट्रीट स्थित मूनलाईट थियेटर से सम्बद्ध हो गए। १९६८-६९ में इसके बन्द होने तक आप इसके प्रमुख कलाकार तथा निर्देशक बने रहे। कुछ फिल्मों में भी आपने काम किया। एच. एम. वी. के लिए आपने प्रायः २०० गानों की रिकार्डिंग करवाई। आप के कई नाटकों के रिकार्ड भी बने।

हिन्दु-मुस्लिम एकता स्थापित करने में आप सदैव सचेष्ट रहते हैं। ८३ वर्ष की उम्र में भी आप स्वस्थ एवं जवान बने हुए हैं। सम्प्रति मोरादाबाद में रहते हुए आप जन-कल्याण के कार्यों में रूचि लेते हैं।

विलक्षण निर्देशक तथा लोकप्रिय अभिनेता के रूप में आप हिन्दी नाट्य जगत के प्रेरणा-स्रोत रहेंगे। •

स्व. गुलाब रत्न वाजपेयी 'गुलाब'

आप का जन्म १९०३ ई० में सुमेरपुर (उन्नाव) में हुआ था। कामेश्वर वाजपेयी के आप पुत्र थे। कलकत्ता महानगर ही आप का कार्यस्थल था।

तरुणावस्था से ही आप की काव्य-प्रतिभा प्रकट होने लगी। आप की ५२ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें प्रमुख हैं – आकर्षण शक्ति, स्त्री-पुरुष, कांटा, नारंगी, इंसान बदल गया, आदि। आकर्षण शक्ति का बंगला में तथा नारंगी का नेपाली भाषा में अनुवाद हो चुका है। सन्मार्ग तथा विश्वमित्र दैनिक पत्रों में आप की रचनाएँ बराबर प्रकाशित होती रहती थीं।

आप कुशल नाट्यकार भी थे। आप का रचित 'झांसी की रानी' नाटक मूनलाइट हाल में मंचस्थ होता रहा। भारतलक्ष्मी पिक्चर्स से भी आप सम्बद्ध रहे। 'गीता और पुराण' आप की अन्तिम फिल्म थी। आकाशवाणी से भी आप की वार्ताएं बराबर प्रसारित होती रहीं।

६ जुलाई १९६९ ई० को कलकत्ता काव्य-कुञ्ज सभा की ओर से आप का अभिनन्दन किया गया था। ३१ दिसम्बर १९७१ ई० को आप का कलकत्ता में देहावसान हुआ।

आप लोकप्रिय कवि तथा नाट्यकार थे। •

स्व. भगवती चरण वर्मा

आप का जन्म १९०३ ई० में शफीपुर (उन्नाव) में हुआ था। प्रसिद्ध वकील देवचरण वर्मा आपके पिता थे। बाल्यावस्था में ही आप को पितृ वियोग का दारुण दुःख सहन करना पड़ा। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी. ए., एल-एल. बी. की उपाधि उत्तीर्ण कर आपने वकालत प्रारंभ की पर कालांतर में साहित्य सृजन को समर्पित हो गए।

छात्रावस्था से ही आप की कविताएं 'प्रताप' में छपने लगीं। खिलते फूल, इन्स्टालमेन्ट, दो बाँके, आदि आप के कहानी संग्रह खूब लोकप्रिय हुए। उपन्यास के क्षेत्र

में आप की बहु चर्चित कृतियाँ हैं–चित्रलेखा, तीन वर्ष, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, आखिरी दाँव, भूले बिसरे चित्र, रेखा, सबहिं नचावत राम गोसाईं, आदि।



आप बड़े स्वाभिमानी तथा फक्कड़ तबीयत के आदमी थे। आजीविका की कठिन समस्या के हल हेतु ६ वर्ष तक आप बम्बई की फिल्मी दुनिया से सम्बद्ध रहे। फिर ६ वर्ष तक आप कलकत्ता में रहे। यहाँ आपका सम्पर्क फिल्म कॉरपोरेशन मे हुआ। यहीं आप ने 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' उपन्यास लिखना तथा 'विचार' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। पर १९४० ई० में आप पुनः बम्बई लौट गए और बम्बई टॉकीज से सम्बद्ध हो गये। १९४६ ई० में आपने बम्बई छोड़ दी और १९४८ ई० में 'नव जीवन' के प्रधान सम्पादक बन कर लखनऊ आ गए। शीघ्र ही इससे भी त्यागपत्र दे कर आप आकाशवाणी में हिन्दी सलाहकार बन गए। मारीशस में आयोजित द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में आप ने भाग लिया।

गांधीवाद से आप विशेष रूप से प्रभावित हुए तथा खद्दर के वस्त्र पहिनने लगे। १९४२ ई० के आन्दोलन में डॉ० केसकर को अपने यहाँ आपने छिपा कर रखा। १९७७ ई० में आप को राज्य सभा के लिए सांसद मनोनीत किया गया। ६ अक्टूबर १९८१ ई० को अखिल भारतीय आयुर्वेदिक संस्थान में गले के कैंसर से आप का निधन हो गया। मूर्धन्य उपन्यासकार के रूप में आप हिन्दी जगत में चिर-स्मरणीय रहेंगे। •

स्व. आद्या प्रसाद शुक्ल

आप का जन्म १९०७ ई० में दिवाकरपुर (जौनपुर) में हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. ए., बी. एल. की उपाधि आपने प्राप्त की। यद्यपि अध्यापन से आपने जीवनारम्भ किया, पर फिर वकालत करने लगे।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के सानिध्य में स्वाधीनता संग्राम में आपने योगदान किया। राष्ट्रभाषा प्रचार हेतु प० बंग हिन्दी प्रचार समिति की आपने स्थापना की। 'उलझन' तथा 'विश्वदूत' साप्ताहिक भी आपने प्रकाशित किए। आप की रचनाएं हैं – १५ अगस्त, न्यायालय का रंगमंच एवं जीवन-प्रश्न।



आप सनातन धर्म ब्राह्मण सभा के अध्यक्ष एवं सनातन धर्म विद्यालय के मंत्री बने। आप तुलसी स्मारक समिति (प० बं०) के अध्यक्ष थे तथा अपर इण्डिया एसोसियेशन से भी सम्बद्ध रहे। १९५२ ई० में आप का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया एवं अभिनन्दन ग्रन्थ भी भेंट दिया गया।

५ जुलाई १९६७ ई० को कलकत्ता में आप का स्वर्गवास हो गया। कर्मठ हिन्दी प्रचारक के रूप में आप समादृत रहेंगे। •

डॉ. प्रभाकर माचवे

आप का जन्म २६ दिसम्बर १९१७ ई० को ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में हुआ। बलवन्त माचवे आप के पिता थे। अंग्रेजी साहित्य तथा दर्शन शास्त्र में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप ने हिन्दी साहित्य में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

प्रारम्भ में उज्जैन में ११ वर्ष तक आप दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक रहे। १९५९ से १९६१ ई० तक अमेरिका के दो विश्व-विद्यालयों में 'विजटिंग प्रोफेसर' के रूप में आप ने गांधी दर्शन, भारतीय साहित्य तथा संस्कृति, हिन्दी भाषा एवं भक्ति काव्य आदि विषय पढ़ाये। आप केन्द्रीय साहित्य अकादमी से १९५४ से १९७५ ई० तक सम्बद्ध रहे।



आप बहुभाषाविद् हैं। आप ने राष्ट्रभाषा प्रचार तथा साक्षरता प्रसार में विशेष योग दिया। आकाशवाणी से भाषा-विज्ञान पर आप की वार्त्ताएं प्रायः प्रसारित होती रहती हैं।

मराठी, हिन्दी तथा अंग्रेजी–तीनों ही भाषाओं में आप ने साधिकार साहित्य-सर्जन किया है। आपकी ६५ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें कई प्रमुख कृतियां विभिन्न भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं।

वर्त्तमान में आप कलकत्ता महानगरी में अवस्थित 'भारतीय भाषा परिषद' संस्थान के निदेशक हैं। बड़ाबाजार अंचल की सार्वजनिक संस्थाएं अपने सांस्कृतिक अनुष्ठानों में आप को साग्रह आमंत्रित करती रहती हैं।

आप बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यकार के रूप में सुविख्यात हैं। ●

सीता देवी

आप का जन्म १९२० ई० में ढाका (सम्प्रति बांगला देश) में हुआ। गायिका के रूप में आपने जीवनारम्भ किया। एच. एम. वी. कम्पनी ने आपके अनेक गीतों के रिकार्ड बनाए।



१९५० ई० में आप कलकत्ता महानगर आ गईं और नाटकों में अभिनय करने लगीं। पहिले मूनलाईट और फिर मिनर्वा थियेटरों से आप सम्बद्ध रहीं। प्रायः २०० हिन्दी तथा बंगला नाटकों की आप प्रमुख कलाकार रहीं। अपने समय में हिन्दी नाट्य-सम्राज्ञी के रूप में आप कलकत्ता में सुविख्यात हो गईं। ●

बैजूलाल शाह

आप का जन्म अगस्त १९२८ ई० में महनार ग्राम (वैशाली) में हुआ। सीताराम शाह आप के पिता थे। १९४२ ई० में महात्मा गांधी के 'करो या मरो' आह्वान पर भूमिगत होकर आप संघर्ष करते रहे। मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप कलकत्ता आ गए।

१९४६ ई० में दैनिक 'विश्वबन्धु' में संवाददाता के रूप में अपने पत्रकार जीवन



का आप ने प्रारम्भ किया। १९५३ ई० से आपने 'रूपलेखा' मासिक का प्रकाशन प्रारम्भ किया, जिसे १९७५ ई० से दैनिक बना दिया। अंग्रेजी साप्ताहिक 'डेमोक्रेटिक फोरम' का प्रकाशन भी आप कर रहे हैं।

आप बंगाल फिल्म जर्नलिस्ट एसोसियेशन के उपसभापति तथा अखिल भारतीय लघु समाचार पत्र परिषद के प्रधान मंत्री रह चुके हैं। पश्चिम बंग लघु एवं मध्यम समाचार पत्र सम्मेलन के आप प्रधान सचिव हैं।

आप कर्मठ एवं प्रबुद्ध पत्रकार हैं। ●

डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र

आप का जन्म बलिहार (बलिया) में हुआ। काशीनाथ मिश्र के आप पुत्र हैं। काशी विश्वविद्यालय से एम. ए. की परीक्षा



उत्तीर्ण कर कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने हिन्दी पत्रकारिता पर शोध कर पी-एच.डी.की उपाधि प्राप्त की। सम्प्रति बंगवासी कालेज के प्रातःकालीन सत्र में आप हिन्दी विभाग के अध्यक्ष हैं।

आप ने त्रैमासिक लघु पत्रिका 'समिधा' का सम्पादन किया है। आप की कहानियाँ, निबन्ध तथा समीक्षाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आप की महत्वपूर्ण प्रकाशित पुस्तकें हैं – हिन्दी पत्र-कारिता : जातीय भूमिका और खड़ी बोली, साहित्य की निर्माण भूमि, आस्था और मूल्यों का संक्रमण, आलोकपन्था तथा बेहया का जंगल। आप की सद्यः प्रकाश्य पुस्तकें हैं – पत्रकारिता का इतिहास और प्रश्न, हिन्दी पत्रकारिता की साहित्यिक भूमिका तथा आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी विचार कोश।

आप प्रबुद्ध पत्रकार तथा सर्जनात्मक रचनाकार के रुप में सुविख्यात हैं। ●

डॉ. प्रतिभा अग्रवाल

आप का जन्म १९३० ई० में हुआ। बालकृष्ण दास अग्रवाल आप के पिता थे। पितामह राधाकृष्ण दास सुविख्यात हिन्दी सेवी थे। मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप शांतिनिकेतन आ गईं। कालान्तर में कलकत्ता में मदनमोहन अग्रवाल से आप का विवाह हुआ। एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप ने हिन्दी मुहावरों पर शोध के लिए डी. फिल. की उपाधि प्राप्त की। श्री शिक्षायतन कालेज में सुदीर्घ काल तक आप प्राध्यापिका रहीं।

नाट्यानुराग का प्रारम्भ ३० अगस्त १९४८ ई० में मारवाड़ी बालिका विद्यालय मंच पर दो एकांकी नाटकों के मंचन के साथ हुआ। फिर १९५० ई० में तरुण संघ से आप सम्बद्ध हुईं। १९५५ ई० में स्थापित सुप्रसिद्ध नाट्य-संस्था अनामिका की आप संस्थापक सदस्या हैं; साथ ही मंत्री,

कोषाध्यक्ष एवं अध्यक्ष भी रह चुकी हैं। अनामिका द्वारा प्रस्तुत आषाढ़ का एक दिन, मेरे बच्चे, आधे-अधूरे, गोदान आदि नाटकों में आपने श्रेष्ठ अभिनय किया है। अनामिका द्वारा प्रस्तुत अन्य भाषाओं के नाटक अधिकांशतः आप के द्वारा अनूदित या रूपान्तरित



हैं। बादल सरकार एवं धनंजय बैरागी (बंगला), शिवकुमार जोशी (गुजराती), इब्सन, आर्थर मिलर, पिरैंडेलो एवं सार्त्र (अंग्रेजी) के प्रसिद्ध नाटकों / उपन्यासों का अनुवाद एवं नाट्य-रूपान्तर इस विलक्षणता से आपने किया है कि मूल कृति की आत्मा उभर कर आई है और रूपायन मंचन की दृष्टि से सफल हुआ है। आप अनामिका की रजत जयन्ती की संयुक्त संयोजक तथा नाट्योत्सव ८० की संयोजक रह चुकी हैं।

आप की प्रकाशित पुस्तकें हैं—नगरवधू एवं सृजन का सुख-दुःख। उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी की आप 'फेलो' चुनी गयीं। स्थायी हिन्दी रंगमंच की स्थापना में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए नाट्य-जगत में आप समादृत हैं। •

स्व. भरत व्यास

आप का जन्म राजस्थान में हुआ था, पर शिक्षा प्राप्ति हेतु आप कलकत्ता आ गए। छात्रावस्था में आप पोद्दार छात्र निवास में रहे एवं कालेज तक शिक्षा प्राप्त की।

छात्रावस्था से ही आप हिन्दी तथा राजस्थानी में गीत लिखने लगे। एक कवि सम्मेलन में आपके राजस्थानी गीत 'केसरिया पगड़ी बनी रहे' पर सोहनलाल दूगड़ ने तत्काल २००० रुपये का पुरस्कार घोषित किया। इसी गीत के लिए मारवाड़ी सम्मेलन (बम्बई) ने भी आपको पुरस्कृत किया।

कालान्तर में आप बम्बई चले गए। वहाँ विभिन्न फिल्मों के लिए आपने हजारों गीत लिखे। आप के गीत शुद्ध हिन्दी में होते हुए भी गेय तथा लोकप्रिय होते थे। वी. शान्ताराम कृत 'स्त्री' फिल्म के लिए लिखे गीतों ने आप को विशेष प्रसिद्धि दिलवाई। कई फिल्मों में आपने अभिनय भी किया। १९८१ ई० में बम्बई में ही आप का निधन हुआ।

लोकप्रिय गीतकार के रूप में आप हमें याद रहेंगे। •

पी. एन. उपाध्याय

आप का जन्म १९३४ ई० में हल्दी (बलिया) में हुआ। ब्रह्मदत्त उपाध्याय के आप पुत्र हैं। वर्त्तमान में कलकत्ता महानगर में आप हिन्दी फिल्मी पत्रकारिता में संलग्न हैं। वेस्ट बंगाल फिल्म जर्नलिस्ट एसोसियेशन के विभिन्न पदों के दायित्व का भार आप ने वहन किया।

प्रारम्भ में १५ वर्ष तक आप 'हिन्दी स्क्रीन' से सम्बद्ध रहे। वर्त्तमान में आप 'रुपलेखा' दैनिक के सम्पादकीय विभाग से सम्बद्ध हैं। स्वयं भी आप 'प्रेमनगर' साप्ताहिक प्रकाशित कर रहे हैं। •

अरुण प्रकाश अवस्थी

आप का जन्म १७ दिसम्बर १९३८ ई० को मौरवां गाँव (उन्नाव) में हुआ। पं०

जगदीश नारायण अवस्थी के आप पुत्र हैं। आगरा विश्वविद्यालय से भूगोल तथा भागलपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम.ए. की उपाधि प्राप्त कर आपने साहित्य-रत्न की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। दैनिक विश्वमित्र के सम्पादकीय विभाग में आप प्राय: १२-१३ वर्ष कार्यरत रह चुके हैं। वर्त्तमान में आप सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया में राजभाषा अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं।

आप राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत कवि एवं नाट्यकार हैं। आप की प्रमुख कृतियाँ है– 'रावी तट', 'धर्म और अनुभूति', 'यह देश नहीं देवालय है' तथा 'वंदनीया युगे युगे'। 'माटी का सुहाग', 'राज्य और राज' एवं 'विक्रमादित्य' – आप के नाटक हैं। आप की काव्य-पुस्तकें 'महाराणा का पत्र' एवं 'क्रांति का देवता' शीघ्र प्रकाश्य हैं। आप का धारावाहिक उपन्यास 'आलोर का आलोक' दैनिक सन्मार्ग में प्रकाशित हुआ। इनके अतिरिक्त आप के शताधिक गीत, कहानियाँ एवं निबंध विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आकाशवाणी से अब तक आपके ८५ गीत प्रसारित हुए हैं।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी तथा श्री माहेश्वरी सभा संस्था-द्वय की हीरक-जयन्तियों पर प्रकाशित ग्रन्थों का आप ने सम्पादन किया। तुलसी पुष्पांजलि ग्रन्थ भी आप के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ।

दहेज, जातिवाद आदि कुरीतियों के आप विरुद्ध हैं। कान्यकुब्ज सभा एवं जन-कल्याण परिषद से आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध है। आप लोकप्रिय कवि तथा ऐतिहासिक नाट्यकार के रूप में समादृत हैं। •

मंगला प्रसाद अग्रवाल

आप का जन्म १ नवम्बर १९२५ ई० को कलकत्ता में हुआ। बलदेव दास अग्रवाल आप के पिता हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम. ए. तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से साहित्य-रत्न की उपाधि प्राप्त कर आप स्टील के व्यवसाय में संलग्न हैं।

स्वाधीनता संग्राम के दौरान लोकनायक जयप्रकाश के साथ आपने आन्दोलनों में भाग लिया और गिरफ्तार हो कर कारावास के दण्ड का वरण किया।

गांधी दर्शन के आप दृढ़ श्रद्धालु हैं। इसके प्रचार-प्रसार हेतु आप मूर्धन्य गांधी-वादी विचारकों को आमन्त्रित कर उनकी विचार-गोष्ठियां आयोजित करते रहते हैं। सम्प्रति गांधी दर्शन समिति के आप महामंत्री हैं। गांधी दर्शन पर आप के लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्राय: प्रकाशित होते रहते हैं। •

कन्हैयालाल वर्मा

आपका जन्म १० मार्च १९५५ ई० को सुजानगढ़ (राजस्थान) में हुआ। माणिक चंद वर्मा के आप पुत्र हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने बी.ए. तथा बी.कॉम. की उपाधि प्राप्त कर हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) से साहित्य-रत्न की परीक्षा भी उत्तीर्ण की।



सम्प्रति आकाशवाणी के कलकत्ता केन्द्र में हिन्दी विभाग में आप कार्यरत हैं।

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु आप सतत् उद्यमी हैं। अनेक उदीयमान लेखकों को आकाशवाणी के मंच से प्रोत्साहित करने में आप की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। •



बड़ाबाजार के कार्यकर्त्ता – स्मरण और अभिनन्दन ग्रंथ

स्व. जुगल किशोर बिड़ला

आप का जन्म २३ मई १८८३ ई० को पिलानी (राजस्थान) में हुआ। राजा बलदेवदास बिड़ला के आप ज्येष्ठ पुत्र थे। बाल्यावस्था में मुनीम पन्नालाल से पाटी-गणित की शिक्षा प्राप्त कर आप बम्बई में पिता के पास चले आए। पिता से व्यावसायिक दूरदर्शिता प्राप्त कर आप १६०१ ई० में कलकत्ता आ गए। १६०३ ई० से 'बिड़ला परिवार' का व्यावसायिक मुख्यालय कलकत्ता हो गया। कालान्तर में आप की प्रखर प्रतिभा तथा अनुज घनश्यामदास बिड़ला की विवेकपूर्ण औद्योगीकरण की नीति से अपार धन-सम्पदा अर्जित कर 'बिड़ला ब्रदर्स' देश का अग्रगण्य औद्योगिक घराना बन गया।



देशप्रेम में आप की दृढ़ अनुरक्ति रही। १६२० ई० में स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व सँभाल कर जब महात्मा गाँधी ने 'विलायती वस्त्र बहिष्कार' का आह्वान किया, तब आप ने भी लिवरपूल तथा मैनचेस्टर से आयातित वस्त्र का बहिष्कार किया। एक ओर देश को छल से पराधीन बनानेवाले अंग्रेजों के प्रति आप के मन में घोर विद्रोह की भावना थी, तो दूसरी ओर जापान, चीन, मलाया आदि एशियाई देशों के प्रति सहज भ्रातृत्व की भावना थी। अतः इन देशों से व्यावसायिक सम्बन्ध स्थापनार्थ अपने दो वाणिज्य प्रतिनिधि भेज कर आप ने अंग्रेज व्यापारियों के निरंकुश एकाधिकार को चुनौती दे कर देश में एक नवीन व्यावसायिक क्रान्ति का पथ प्रशस्त किया। शासन के प्रकोप की परवाह न कर आप ने जापान से धोतियों तथा साड़ियों का आयात किया।

प्रकृति से आप सत्यनिष्ठ, धर्मपरायण, प्राचीन आर्य संस्कृति के पोषक तथा सुधी गुणग्राही थे। आप के सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ १६०८ ई० में बड़ाबाजार में प्रवासी राजस्थानियों की महती जनसभा में सामाजिक कुरीतियों को दूर करने की अनिवार्यता पर प्रभावशाली भाषण करने के साथ हुआ। १६१३ ई० में जब 'मारवाड़ी सहायता समिति' (सम्प्रति मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी) का गठन हुआ, तब आप उसके संस्थापक-सभापति बने। हरिजनों के उन्नायक महात्मा गांधी (बापू) के आप घनिष्ठ मित्र तथा अनन्य सहायक थे। हरिजन मन्दिर प्रवेश अभियान में आप ने यथाशक्ति बापू को सहयोग दिया। हरिजनोद्धार के लिए आप ने अकूत धन व्यय व्यय किया। आप ने उनके लिए कुएँ-तालाब खुदवाए, विद्यालय तथा मन्दिर बनवाए, छात्रवृत्तियाँ दीं तथा पुजारी के रूप में हरिजनों की नियुक्ति की। होली के अवसर पर अपनी काशी स्थित कोठी के मेहतर झमकुआ को आप ने अबीर का टीका लगाया तथा खुद उससे टीका लगवाया – ऐसी थी आप की हरिजनों के प्रति आत्मीयता।

प्रारम्भ से ही आप दृढ़ निष्ठावान आर्यसमाजी विचारधारा के व्यक्ति थे। स्वधर्म परित्याग किए हुए आत्म-विस्मृत हिन्दुओं को 'शुद्धिकरण' द्वारा पुनः मूल सांस्कृतिक धारा में सम्मिलित करने के प्रयास में स्वामी श्रद्धानन्द तथा लाला लाजपतराय के साथ आप ने सोत्साह सहयोग किया। हिन्दू-बहुल जनसंख्यावाले विश्व के अन्यान्य देशों में

आप ने हिन्दू-धर्म के प्रचारक भिजवाए। गोशाला निर्माणार्थ आप ने १ लाख रुपए दान किए। 'बिड़ला जनकल्याण ट्रस्ट' स्थापित कर उसके तत्वावधान में आप ने समग्र भारतवर्ष के जीर्ण-शीर्ण मन्दिरों का पुनर्निमाण तथा उद्धार करवाया। आप ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रांगण में विश्वनाथ मन्दिर, दिल्ली में लक्ष्मीनारायण मंदिर तथा वृन्दावन में मन्दिर की प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाई। तीर्थस्थलों पर श्रद्धालु यात्रियों की सुविधार्थ आप ने अनेक धर्मशालाएँ बनवाईं। हिन्दू संस्कृति के अन्तर्गत सनातनी, आर्य समाजी, जैन, बौद्ध, सिक्ख आदि विभिन्न सम्प्रदायों को सूत्रबद्ध करने की दिशा में आप आजन्म प्रयत्नशील रहे।

कलकत्ता महानगर में आप ने कई धार्मिक न्यास स्थापित किए, यथा – बंगाल हिन्दू वेलफेयर ट्रस्ट, बजरंग व्यायामगार ट्रस्ट, स्टार रोड शिव मन्दिर ट्रस्ट, बंगाल बुद्धिस्ट एसोसियेशन, जापानी बुद्ध मन्दिर (लेक रोड), हिन्दू शिल्पशाला इत्यादि। देश के अन्य विभिन्न स्थानों में भी आप के द्वारा स्थापित ट्रस्ट कार्यरत हैं, जैसे – सीताराम मन्दिर ट्रस्ट (पिलानी), हिन्दू महासभा ट्रस्ट (पटना), बुद्ध मन्दिर ट्रस्ट (रांची), दिल्ली में आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ तथा अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ, श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवा संघ (मथुरा) इत्यादि।

शैक्षणिक उन्नति में भी आप की अनुरक्ति रही। १९०४ ई० में श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय के भवन निर्माणार्थ महामना मदनमोहन मालवीय के आह्वान पर आप ने मुक्तहस्त सहयोग किया। राजपूताना विद्या प्रचारिणी ट्रस्ट की भी आप ने स्थापना की। कलाकारों तथा पहलवानों का आप बहुत सम्मान करते थे व जरूरतमन्दों को यथाशक्ति आर्थिक सहायता देते थे। विश्वविजयी सुप्रसिद्ध गामा पहलवान जब अर्थाभाव से घिर गए, तब उनकी सहायता हेतु आप आजन्म ३ सौ रुपये माहवार भेजते रहे। नवोदित पहलवान ओमप्रकाश को आप ने अपने खर्च से रूस भेजा।

८४ वर्ष की आयु में १९६७ ई० में आप गोलोकवासी हुए तथा अन्तिम संस्कार दिल्ली के निगम बोध घाट पर आप के धर्मपुत्र लक्ष्मीनिवास बिड़ला ने सम्पन्न किया। धर्म तथा संस्कृति के उन्नायक तथा उदात्त समाजसेवी के रूप में आप की स्मृति चिरस्थायी रहेगी। ●

स्व. राय बद्रीदास बहादुर 'मुकीम'

आप का जन्म १८३२ ई० में लखनऊ में हुआ। लाला कालका दास के आप पुत्र थे। युवावस्था में ही आप अवध के दरबारी जौहरी नियुक्त हुए। आप १९५३ ई० में कलकत्ता आ गए। शीघ्र ही आप की विलक्षण प्रतिभा की धाक यहाँ के जौहरी समाज



में जम गई। अपने हीरे-जवाहिरातों का अभूतपूर्व संग्रह आप ने प्रिंस आफ वेल्स (कालान्तर में सम्राट एडवर्ड सप्तम) को उनके कलकत्ता आगमन पर दिखलाया। १८७१ ई० में लार्ड मेयो ने आप को तथा आप के वंशजों को सदैव के लिए 'दरबारी

जौहरी' अर्थात् 'मुकीम' नियुक्त किया। १८७७ ई० में लार्ड लिटन ने आप को राय बहादुर की पदवी से विभूषित किया। ब्रिटिश इण्डिया एसोसियेशन तथा बंगाल नेशनल चेम्बर आफ कामर्स के आप वरिष्ठ सदस्य रहे।

आप बड़े ही विवेकपूर्ण तथा कर्मठ व्यक्तित्व के धनी थे। मारवाड़ी और ओसवाल समाज में आप मूर्धन्य थे। जैन धर्म तथा संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए आपने अपार धन दान किया। मानिकतल्ला का कांच से बना जैन मन्दिर (दादाबाड़ी) और संलग्न उद्यान आज भी देशी-विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। कार्त्तिक महोत्सव पर निकलनेवाली ऐतिहासिक शोभायात्रा (ओसवाल समाज) को प्रारम्भ करने का सम्पूर्ण श्रेय आप को है। तीर्थ-स्थल श्री सम्मेद शिखर की तलहटी में विराट बूचड़खाने को स्थापित होने से रोकने में आप की प्रमुख भूमिका रही। १९०३ ई० में बम्बई में आयोजित जैन-धर्म के द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के आप अध्यक्ष बने।

आप बड़े श्रद्धालु गोभक्त भी थे। कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी के संस्थापकों में आप भी एक थे। अपनी दानशूरता और धर्म-वत्सलता के लिए आप समादृत रहेंगे।

•

स्व. राजा शिवबक्स बागला

आप का जन्म कार्त्तिक बदी १२ सम्वत् १९०५ को कलकत्ता में हुआ। आप के पिता रामदयाल बागला जवाहिरात तथा चावल के व्यवसायी थे। अपने पिता तथा अग्रज के साथ बर्मा जा कर मोलमिन में आप ने सागवान लकड़ी का कारबार किया और कालान्तर में सूते की मिल भी बैठाई। लकड़ी के काम में आप के परिवार ने अपार धनोपार्जन किया। आप बड़े दबंग व्यक्ति थे और हमेशा रईसी शान-शौकत से रहते थे।



प्रारम्भ से ही धार्मिक कार्यों में आप की प्रगाढ़ अभिरुचि थी। सत्यनारायण भगवान के आप अनन्य श्रद्धालु थे। बर्मा में अपनी १० वर्ष की उपार्जित आय से आप ने मोलमिन में भव्य एवं विशाल सत्यनारायण मन्दिर तथा एक धर्मशाला का निर्माण करवाया। युद्ध छिड़ जाने पर आप सपरिवार कलकत्ता आ गए। यहाँ २८ मई १८८४ ई० को ५१ तुल्लापट्टी में आप ने 'सत्यनारायण मन्दिर' की स्थापना की। इसके अन्तर्गत ही आयुर्वेदिक तथा होम्योपैथिक निःशुल्क चिकित्सा की व्यवस्था की। १९०१ ई० में आप ने हावड़ा में सत्यनारायण धर्मशाला का निर्माण करवाया। वाराणसी के सरस्वती फाटक में आप ने सत्यनारायण भगवान तथा अन्य देवों की प्रतिष्ठा करवाई। इस मन्दिर में संस्कृत पाठशाला तथा उसके विद्यार्थियों के भोजन का भी सुप्रबन्ध किया। रामेश्वरम् में भी आप ने एक धर्मशाला बनवाई। चुरू पिंजरापोल को आप ने कई बीघा जमीन के साथ नकद दान भी दिया। कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी की स्थापना में आप की प्रमुख भूमिका थी। बेलगछिया के वेटरनरी कालेज को आप ने ६० बीघा जमीन और ६० हजार रुपये दान में दिए।

आप की गौरवपूर्ण सार्वजनिक सेवा से प्रभावित हो कर ब्रिटिश सरकार ने आप को 'रायबहादुर' तथा 'राजा' की पदवी और जयपुर नरेश ने 'सिरेपेंच' प्रदान कर सम्मानित किया। आप 'आनरेरी मैजिस्ट्रेट', पोर्ट कमिश्नर तथा कारपोरेशन के सदस्य भी नियुक्त हुए। आप प्रथम मारवाड़ी थे, जो कलकत्ता उच्च न्यायालय के 'शेरिफ' नियुक्त हुए।

आप का निधन सम्वत् १९९३ की विजयादशमी पर ५८ वर्ष की अवस्था में हुआ। अपने धार्मिक कार्यों तथा दानशीलता के लिए आप प्रतिश्रुत रहेंगे। ●

स्व. सूर्यमल झूंझनूंवाला

आप का जन्म १४ मार्च १८४७ ई० को शेखावाटी (चिड़ावा) में हुआ। १२-१३ वर्ष की किशोरावस्था में ही आप पैदल चल कर कलकत्ता आए। अपनी कर्मठता तथा पैनी व्यावसायिक सूझ-बूझ से कालांतर में आप सुप्रसिद्ध फर्म 'ग्राहम कम्पनी' के 'बेनियन' बन गए।



आप ने प्रचुर धनोपार्जन तो किया ही, साथ ही मारवाड़ी जाति के उत्कर्ष में भी यथाशक्ति योगदान किया। तत्कालीन मारवाड़ी समाज के दो भाईयों में यदि वैमनस्य उत्पन्न हो जाता, तो आप अधीर हो उठते एवं उस विवाद को सलटा कर ही अन्न-जल ग्रहण करते थे। अपना धन लगा कर आप ने कई उद्यमी व्यक्तियों की दूकानें खुलवा दीं। यदि कभी आर्थिक संकट के कारण किसी व्यक्ति के दिवालिया होने का खतरा हो जाता, तो आप यथासम्भव उसे मदद दे कर बचा लेते थे। समाज की बड़ी पंचायत के आप प्राण थे। जब चर्बी-मिश्रित घी का आन्दोलन छिड़ा, तब आप ने साहसपूर्वक उसका विरोध किया। आप की ही दृढ़ता से ब्राह्मण-दक्षिणा देते समय भ्रष्ट-चरित्रा स्त्रियों का बहिष्कार हुआ। हरिद्वार में महावारुणि मेले पर सरकारी मनमानी के खिलाफ आप ने तीव्र आन्दोलन छेड़ा और 'जाँच कमीशन' बैठाने के लिए सरकार को मजबूर किया।

सनातन-धर्म में आप दृढ़ आस्थावान थे। प्रारम्भ से ही आप अपनी आय का एक अंश धर्मार्थ दान करते रहे। आप ने मल्लिक स्ट्रीट में धर्मशाला बनवाई और उसमें एक चिकित्सालय भी खुलवाया। गंगा-तट पर श्राद्ध कर्म के लिए आप ने पक्का घाट बनवा दिया। उत्तराखण्ड में तीर्थ-यात्रियों की सुविधार्थ आपने बहुत कार्य किया। बद्रीनाथ के मार्ग में 'लक्ष्मण झूला' नामक झूलता पुल आप ने ही बनवाया। ऋषिकेश में काली-कमलीवाले बाबा विशुद्धानन्द गिरि के निर्देश पर आप ने पंचायती धर्मशाला बनवाई तथा सदावर्त प्रारम्भ किया। हरिद्वार में भी आप ने धर्मशाला बनवाई तथा लाखों रुपये लगवा कर कई जीर्ण-स्थलों की मरम्मत करवाई। अपने जन्मस्थान चिड़ावा में आपने धर्मशाला, संस्कृत पाठशाला एवं आधुनिक विद्यालयों की स्थापना की। जीवन के उत्तरार्द्ध में आप ने ग्राहम कम्पनी की बेनियनशिप की आय को देवोत्तर समर्पित कर दिया था।

आप का निधन १२ मार्च १८९५ ई० को ४७ वर्ष की अल्पायु में ही हो गया। अपनी सदाशयता तथा धर्म-वत्सलता के लिए आप चिर-स्मरणीय रहेंगे। ●

स्व. गजानन्द पोद्दार

आप बिशनदयाल पोद्दार के पुत्र थे। अपनी व्यावसायिक दूरदर्शिता तथा कर्मठता से आपने शेयरों के पैतृक व्यवसाय में अपार धनोपार्जन किया। अपनी मृत्यु के पूर्व ही आपने स्वोपार्जित विपुल सम्पत्ति के दान की घोषणा कर दी, जिससे समाज में आप की बड़ी सुकीर्त्ति हुई। आपकी स्मृति में आप के इस्टेट द्वारा चित्तरंजन एवेन्यू में 'मारवाड़ी छात्र निवास' का निर्माण कराया गया, जो प्रवासी उत्तर भारतीय छात्रों के लिए अध्ययन काल में आवास हेतु लोकप्रिय केन्द्र बन गया है। कालक्रम से इसका नाम परिवर्त्तित हो कर 'पोद्दार छात्र निवास' हो गया। इसी इस्टेट द्वारा 'ब्राह्मण भवन' का निर्माण भी करवाया गया।

अपनी दानशूरता के लिए आप हमारे लिए प्रेरणास्पद रहेंगे। ●

स्व. घनश्यामदास जगनानी

आज कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी का जो स्वरूप हमारे सामने है, उसका बहुत श्रेय आप के अथक प्रयत्नों को है। आप अनेक वर्ष तक इसकी कांचरापाड़ा शाखा के मन्त्री रहे। आप के कार्यकाल में इस शाखा के अन्तर्गत गोचर भूमि क्षेत्र २३ हजार बीघा में विस्तृत हो गया, जिसकी देख-भाल आप स्वयं घोड़े पर चढ़ कर करते थे।

आजन्म गोसेवा व्रत-पालन कर आप हमारे लिए धर्मरक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिमान कायम कर गए हैं। ●

स्व. चिम्मनलाल गनेड़ीवाला

आप बड़े दबंग व्यक्तित्व के दृढ़ आस्थावान पुरुष थे। धार्मिक, सामाजिक तथा शैक्षणिक कार्यों में आप सदैव तत्पर रहते थे। श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल के पाँच संस्थापकों में से आप भी एक थे। श्री विशुद्धानन्द विद्यालय के भवन निर्माणार्थ आप ने उल्लेखनीय कार्य किया। मारवाड़ी एसोसियेशन तथा रतनगढ़ ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना में आप की विशेष भूमिका तो रही ही, कालान्तर में मन्त्री, उपाध्यक्ष एवं अध्यक्ष आदि विभिन्न पदों पर रह कर आप ने इनके माध्यम से व्यापक जनसेवा के कार्य सम्पादित किए।



समाज तथा धर्म के क्षेत्र में आप की गौरवमयी सेवाओं के स्मरणार्थ अनेक सार्वजनिक व धार्मिक संस्थाओं ने अपने कार्यालयों में आप के तैलचित्र लगा रखे हैं। ●

स्व. अर्जुनदास मोदी (सरावगी)

आप का जन्म चुरू (राजस्थान) में हुआ। १९०५ ई० में आप कलकत्ता आ कर प्लाण्टर्स आफिस में काम करने लगे। कालान्तर में आप चलता-पुर्जा दलाल हो गए और फिर तम्बाकू व्यवसाय से भी संलग्न रहे। प्रतिज्ञानुसार ४० हजार रुपये अर्जित हो जाने पर आप ने व्यवसाय का त्याग कर दिया और शेष जीवन धर्मसाधन में व्यतीत किया।

आप जैन-धर्म के सच्चे अनुयायी थे। जैन सिद्धान्त के आर्ष ग्रन्थ 'गोमट्ठसार' के के स्वाध्याय में आप की विशेष प्रवृत्ति थी।

सम्वत् १६१३ से ही आप ने एकाशन (दिन में मात्र एक बार ही अन्न-जल ग्रहण करना) पूर्वक आजन्म जीवन व्यतीत किया। अपने प्रकाण्ड तत्वज्ञान तथा संयमित जीवन से आप स्थानीय जैन समाज में 'पण्डित' के उपनाम से प्रसिद्ध हो गए।

आप का निधन ६४ वर्ष की पूर्णायु में कलकत्ता में ही हुआ। •

स्व. शिवप्रसाद झूंझनूंवाला

आप सुप्रतिष्ठित व्यवसायी सूर्यमल झूंझनूंवाला के पुत्र थे। प्रकृति से आप अत्यन्त धर्मप्राण तथा दानशील थे। आप ने अपने पिता द्वारा प्रारम्भ सभी धार्मिक कार्यों को न केवल पूर्ण किया, वरन् तीर्थस्थल गया और पुनपुना में यात्रियों की सुविधार्थ विशाल



धर्मशालाएँ भी बनवाईं। आप ने अपने सभी धार्मिक कार्यों के स्थायी रूप से सुचारु संचालन के लिए २५ लाख रुपयों का एक विशाल 'धर्मार्थ ट्रस्ट' भी बनाया, जिसमें 'खैरा' राज्य की जमींदारी भी शामिल थी।

धर्मप्राण समाजसेवी के रूप में आप चिर-स्मरणीय रहेंगे। •

स्व. स्वामी हासानन्द

आप १६०८ ई० में कलकत्ता आए थे। आप बड़े ही दबंग व्यक्तित्व के अनन्य गौ-प्रेमी सन्त थे।

अपने शरीर पर आप सदैव एक काला लबादा धारण किए रहते थे और साथ में एक लॉरी रखते थे। कसाइयों से निरीह गायों को छुड़ा कर आप उन्हें लॉरी में चढ़ा कर बड़ाबाजार स्थित अपनी गोशाला में लाते थे। अपने कन्धे पर एक छोटा बछड़ा रख कर आप व्यापारियों की गद्दियों में जाते तथा गोरक्षा हेतु उनसे चन्दा इकट्ठा करते थे। जो स्वेच्छा से नहीं देते, उन पर क्रुद्ध हो आप जबरन उनसे चन्दा वसूल कर लेते थे, लेकिन कोई भी इसका बुरा नहीं मानता था क्योंकि आप की अहर्निश गौ-भक्ति से सभी सुविज्ञ थे।

लिलुआ पिंजरापोल की ६ सौ बीघा जमीन आप की ही खरीदी हुई है, जिसे आप ने कालान्तर में कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी को दे दिया। वृन्दावन में आप के नाम पर पिंजरापोल आज भी चल रहा है।

अपनी समर्पित गो-सेवा के लिए आप सुविख्यात रहेंगे। •

स्व. बलदेवदास दूदवेवाला

आप का जन्म १८४६ ई० में दूदवा (राजस्थान) में हुआ। लच्छीराम दूदवेवाला आप के पिता थे। साधारण शिक्षा प्राप्त कर



आप कलकत्ते आ गए। यहाँ अर्थोपार्जन हेतु फर्म 'हरमुखराय दुलीचन्द' में आप काम करने लगे, पर शीघ्र ही शेयर बाजार में सक्रिय

हो गए। शेयर व्यवसाय में आप ने अपार धन अर्जित किया और 'शेयर बाजार के किंग' कहलाए। आप दीर्घ कालावधि तक शेयर बाजार के अवैतनिक कोषाध्यक्ष रहे।

स्वभाव से ही आप बड़े ईमानदार, शिक्षाप्रेमी तथा दयालु थे। शेयर बाजार में छोटे-मोटे व्यवसायियों को अधिक नुकसान लगने पर आप पावती माफ कर देते थे। आप ने महानगर की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं, यथा — श्री विशुद्धानन्द विद्यालय, मेटरनिटी स्कूल, रिपोर्ट स्कूल, ब्रह्म समाज स्कूल, एस. आर. दास स्कूल, गोखले मेमोरियल स्कूल, आदि को मुक्त-हस्त से दान दिया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को भी आप ने आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

आप अनन्य कृष्ण-भक्त थे। सेतुबन्ध रामेश्वरम्, द्वारकापुरी तथा मुजफ्फरपुर में आप ने तीर्थ-यात्रियों की सुविधा के लिए विशाल धर्मशालाएँ बनवाईं। गौ तथा ब्राह्मण संस्कृति के आप श्रद्धालु उपासक थे।

आप की गौरवपूर्ण समाजसेवा से प्रभावित हो कर ब्रिटिश सरकार ने आप को 'रायबहादुर' की पदवी से अलंकृत किया था।

आप का निधन १९२१ ई० में कलकत्ता में हुआ। आप की बनवाई धर्मशालाएँ स्वयं आप की यशगाथा की पताकाएँ हैं। ●

स्व. बैजनाथ सरावगी

आप का जन्म १८७७ ई० में हुआ। आप कुशल व्यवसायी थे और 'टाटा स्टील' के 'बेनियन' भी बने। मर्चेण्टस् कमेटी के लगातार २५ वर्ष तक मन्त्री रह कर आप ने अपनी व्यावसायिक प्रतिभा एवं संगठन क्षमता का परिचय दिया।

आप जैन संस्कृति व साहित्य के प्रचार-प्रसार में सतत् प्रयत्नशील रहते थे। अनेक प्राचीन मन्दिरों का आप ने जीर्णोद्धार करवाया। बंगाल-बिहार-उड़ीसा सीमा पर रहनेवाली धर्म-विस्मृत सराक जाति (जो कि मूलत: जैन मतावलम्बी थे, पर क्षेत्र-काल दोष से विपरीत आचरणवाले हो गए थे) की तरफ समाज का ध्यान आकृष्ट करने का प्रमुख श्रेय आप को है। आप बीसपंथी दिगम्बर जैन कोठी (मधुबन) के ट्रस्टी,



अखिल भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी तथा तेरापंथी दिगम्बर जैन कोठी (मधुबन) की कार्यकारिणी के सक्रिय सदस्य थे। आप विभिन्न सार्वजनिक सेवा संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। प्राकृतिक चिकित्सा व गोरक्षा के लिए आप प्रबल आग्रही थे। जीवन के उत्तरार्द्ध में आप प्रतिदिन मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी अस्पताल के रोगियों (विशेषकर प्राकृतिक चिकित्सा वार्ड के) में स्वयं फल वितरित करते थे। बनारस विश्वविद्यालय के समीप आप ने एक छात्रावास का निर्माण करवाया।

अपनी दृढ़ता व समाज सुधार के लिए भी आप विख्यात थे। रूढ़िवादी मारवाड़ी समाज में जब विदेश यात्रा पर कठोर प्रतिबंध लगा हुआ था, तब इकलौते पुत्र धर्मचन्द को आपने विलायत भेजा और लौटने पर साहसपूर्वक मंदिर प्रवेश भी करवाया।

अपनी दृढ़-प्रतिज्ञ अन्वेषक प्रवृत्ति तथा सहृदय धर्म-वात्सल्य के लिए आप स्मरणीय रहेंगे। ●

स्व. रायबहादुर पूरणमल जैपुरिया

आप का जन्म १८६४ ई० में नवलगढ़ (राजस्थान) में हुआ। गणपतराय जैपुरिया के आप पुत्र थे। १६१४ ई० में अर्थोपार्जन हेतु आप कलकत्ता आ गए। १६२० ई० में आप ने साझेदारी में फर्म 'गजाधरलाल दामोदरलाल' स्थापित किया और कालान्तर में इसका नाम बदल कर 'आनन्दराम गजाधर' कर दिया।

आप ने एक ओर जहाँ अपार धनोपार्जन किया, वहीं दूसरी ओर धार्मिक तथा सार्वजनिक कार्यों में भी सोत्साह भाग लिया। १६२६ ई० से आप का सामाजिक सेवा जीवन प्रारम्भ हुआ, जब गोरखपुर के तराई क्षेत्र में बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए राहत कार्य करने आप पहुँचे। आप ने जन-सुविधार्थ वहाँ एक पक्की सड़क बनवा दी। कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी, काशी विश्वनाथ सेवा समिति, सनातन-धर्म अग्रवाल सभा, ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम (हरिद्वार) आदि धार्मिक संस्थाओं से आप का अभिन्न सम्बन्ध रहा। आप विश्व शान्ति अखण्ड हरिकीर्त्तन संघ के अध्यक्ष, बाबा कालीकमलीवाला पंचायत क्षेत्र (ऋषिकेश) के मन्त्री तथा विश्व-धर्म सम्मेलन के उपाध्यक्ष रहे।

रायबहादुर सूरजमल शिवप्रसाद ट्रस्ट, गणपतराय खेमका चेरिटेबल ट्रस्ट, आनन्दराम जैपुरिया ट्रस्ट, सेठ गजाधर जैपुरिया ट्रस्ट, श्रीकृष्ण पंचायत गोशाला (वृन्दावन), गोरखराम रामप्रताप चमड़िया चेरिटेबल ट्रस्ट (फतेहपुर), भजनाश्रम ट्रस्ट (ऋषिकेश), अग्रसेन स्मृति भवन ट्रस्ट आदि के आप ट्रस्टी थे। १६४२ ई० में बंगाल के लालमनीहाट और शिवगंज स्थानों पर हवाई अड्डे बनवा कर आप ने सरकार को सौंप दिए। आप की गौरवपूर्ण समाजसेवा के परिप्रेक्ष्य में ब्रिटिश सरकार ने आप को 'रायबहादुर' की पदवी से अलंकृत किया।

आप ने स्वाधीनता संग्राम कोष में भी मुक्तहस्त दान दे कर अपने देशप्रेम का परिचय दिया। विस्थापितों के पुनर्वास में भी आप ने सहयोग किया।

अपनी बहुमुखी धर्म तथा समाजसेवा के द्वारा आप हमारे लिए श्लाघनीय रहेंगे। •

स्व. सोहनलाल दूगड़

आप का जन्म १८६५ ई० में फतेहपुर (राजस्थान) में हुआ। आप विशेष पढ़े-लिखे नहीं थ। अर्थोपार्जन हेतु तरुणावस्था में ही आप कलकत्ता आए। यहाँ सट्टा बाजार में आप ने फाटका खेलना प्रारम्भ किया। नवोदित होते हुए भी आप उस समय के दिग्गज लक्ष्मीपति रावराजा सरसेठ हुकमचन्द (इन्दौर) से सट्टे में भिड़ गए। सट्टा खेलते हुए आप ने जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव देखा और अपार धन-सम्पदा भी अर्जित की।



आप बड़े ही दबंग, निश्छल और मिलनसार प्रकृति के धर्मपरायण व्यक्ति थे। समग्र देश की सहस्रों धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक तथा सार्वजनिक सेवा संस्थाओं के कार्यकर्त्ता आप के पास आए और आशा से अधिक अनुदान ले कर गए। आप की अस्वस्थता के मध्य भी यदि कोई कार्यकर्त्ता शिष्टाचारवश

मिलने पहुँच गया, तब भी उसकी संस्था की आवश्यकताएँ पूछ कर आप ने उसे खाली हाथ लौटने नहीं दिया। यद्यपि आप जैन धर्मावलम्बी थे, पर दान देते समय आप ने कभी धर्म या जाति को महत्व नहीं दिया। जिस समाज या संस्था के कार्यक्रम में भी आप गए, उसको अपनत्व की डोर में बांध लिया। आप के जीवन का मूलमन्त्र था – 'यदि कार्यकर्त्ता कर्मठ व ईमानदार हों, तो कोई भी सार्वजनिक कल्याण कार्य धन के अभाव में नहीं रुक सकता।' आप की दान-शूरता के सन्दर्भ में एक उदाहरण समीचीन है – राजस्थान प्रान्त के भूतपूर्व मुख्य-मन्त्री जयनारायण व्यास चम्बल घाटी के डकैतों के बच्चों की शिक्षा हेतु एक विद्यालय स्थापनार्थ धन संग्रह करने कलकत्ता आए। तब राधा-कृष्ण नेवटिया के साथ वे आप के पास गए। भोजन कराने के पश्चात् आप ने उन्हें २० हजार रुपये भेंट दिए। जयनारायण व्यास ने कहा कि उनकी आवश्यकता मात्र दस हजार की है, अतः वे अधिक नहीं ले सकते। तब आप ने अनुरोध किया कि दान दी हुई राशि को अब पुनः स्वयं कैसे ग्रहण करें? फिर इस आश्वासन पर समझौता हुआ कि शेष दस हजार पुनः आवश्यकता पड़ने पर ले लिए जाएँगे। ऐसे आदर्श दाता थे आप, और आदर्श याचक थे जयनारायण व्यास।

विकास कार्यों में सहज योगदान के साथ-साथ आप जीवन पर्यंत सामाजिक पुनर्रचना के हर कार्य से सक्रिय रूप में जुड़े रहे – चाहे फिर वह हरिजन उत्थान हो या विधवा विवाह अथवा साधनहीन-उत्पीड़ित वर्ग को स्वावलम्बी बनाने की योजना। आप सदैव अपने विचार स्पष्ट एवं सीधी-सादी भाषा में बड़ी निर्भीकता से प्रकट करते थे, फिर चाहे उससे कोई खुश हो या नाराज। इस मामले में आप ने केन्द्रीय शासन के प्रकोप की भी परवाह नहीं की। गोरक्षा आंदोलन में सक्रिय भाग ले कर आप गिरफ्तार हुए। फिर अदालत से माफी माँगने अथवा जुर्माना भरने के बजाय आप ने जेल की सजा भुगतना बेहतर समझा।

अपने समय में देश के अग्रगण्य राज-नेताओं, साहित्यकारों, कलाकारों, शिक्षा-विदों, धर्माचार्यों तथा समाजसेवकों से आप का घनिष्ठ सम्पर्क रहा। हर अभिनव जन-कल्याणकारी कार्य में आप ने समुचित आर्थिक सहयोग दे कर सबका हौसला बढ़ाया। आप का निधन अक्टूबर १९६८ ई० में हुआ।

अपनी अनुपम दानशीलता और निरभि-मानी प्रवृत्ति से आप ने आधुनिक युग में दानवीर कर्ण तथा सर्वस्व दानी भामाशाह के चरित्र को जीवन्त कर दिखाया। ●

स्व. हजारीमल दूदवेवाला

आप सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठान 'रायबहादुर हजारीमल सोहनलाल' के स्वत्वाधिकारी थे। अपनी पैनी व्यावसायिक सूझ-बूझ से आप ने प्रचुर धनोपार्जन किया और धर्मार्थ उसका दान कर समुचित सदुपयोग भी किया।



कालीघाट, जगन्नाथ धाम तथा उत्तरा-खंड में आप ने कई धर्मशालाओं और मंदिरों का निर्माण करवाया था। शिक्षा के प्रचार-प्रसार में भी आप विशेष उद्यमी थे। अपने निवास-स्थल पर आपने ऐसी समीचीन

व्यवस्था कर रखी थी कि कोई भी याचक बिना अन्न ग्रहण किए न जाने पाए।

आप की धर्मवत्सलता तथा सदाशयता हमारे लिए अनुकरणीय है। ●

स्व. सूरजमल जालान

आप का जन्म भाद्र शुक्ला ११ सम्वत् १९३८ को रतनगढ़ (राजस्थान) में हुआ। हरदेव दास जालान आप के पिता थे। महाजनी विद्या का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर आप कलकत्ता आ गए और 'बिशनदयाल हरदयाल' फर्म में किरासन तेल के व्यवसाय-प्रबन्धक बन गए। १८९२ ई० में अंग्रेजों द्वारा जूट निर्यात पर एकाधिकार स्थापित करने के लिए 'बेल्ड जूट एसोसियेशन' की स्थापना की गई। इसकी कमेटी में कोई भारतीय नहीं था और न ही ये किसी भारतीय व्यापारी



को एसोसियेशन की अनुमति बिना जूट निर्यात करने देते थे। उनकी इस मनमानी को चुनौती दे कर आप ने भारतीय पाट व्यवसायियों के सहयोग से 'जूट बेलर्स एसोसियेशन' की स्थापना की और निर्बाध जूट निर्यात प्रारम्भ करवाया। आप ने हावड़ा में जूट प्रेस भी बैठाया। अपनी विलक्षण व्यावसायिक प्रतिभा तथा पैनी सूझ-बूझ से आप ने जो औद्योगिक नींव रखी, वही कालान्तर में पल्लवित हो देश के अग्रणी औद्योगिक घराने 'सूरजमल नागरमल' में परिवर्त्तित हुई।

आप बड़े धर्मनिष्ठ, सेवाव्रती तथा शिक्षाप्रेमी व्यक्ति थे। शिक्षा के क्षेत्र में उपेक्षित औद्योगिक नगरी हावड़ा में आप ने हिन्दी का प्रथम पुस्तकालय – 'हनुमान पुस्तकालय' स्थापित किया। उस समय यहाँ का नारी-समाज अशिक्षा के घोर अन्धकार में डूबा हुआ था। अतः २६ अगस्त १९२१ ई० को आप ने सलकिया क्षेत्र में प्रथम कन्या पाठशाला स्थापित की। मारवाड़ी बालिकाओं को अध्ययन हेतु प्रोत्साहित करने के लिए आप ने छात्रवृत्तियाँ भी घोषित कीं। प्रवासी राजस्थानी भाईयों के हितार्थ आपने सुलभ तथा श्रेष्ठ भोजनालय खुलवाये। सामाजिक रूढ़ियों को दूर करने के लिए आप प्रबल आग्रही थे।

विकलांगों के प्रति आप के हृदय में करुणा का सागर उमड़ पड़ता था। जब सर्कुलर रोड पर मूक-बधिर विद्यालय बना, तब उसका एक खण्ड आप ने बनवाया।

अपनी जन्मभूमि रतनगढ़ की उन्नति में आप विशेष प्रबुद्ध थे। आप ने १९१० ई० में वहाँ रघुनाथ बालिका विद्यालय, फिर रमा देवी बालिका विद्यालय तथा १९२४ ई० में हनुमान बालिका विद्यालय की स्थापना की। १९२४ ई० में ही वहाँ पर आपने 'आरोग्य भवन' बनवाया।

१९३८ ई० में आप गोलोकवासी हुए। आप की स्मृति में चित्तरंजन एवेन्यू पर निर्मित विशाल भवन में राम मन्दिर, गर्ल्स हाईस्कूल, पुस्तकालय, औषधालय तथा वस्तु भंडार और कालेज स्ट्रीट में गर्ल्स कालेज स्थापित किए गए हैं। अपने सुचारु संचालन तथा अहर्निश जनसेवा द्वारा ये सभी संस्थाएँ आप की यशःकीर्त्ति को चतुर्दिक विकीर्ण कर रही हैं। ●

स्व. जमनाधर सरावगी

आप सुविख्यात व्यवसायी एवं कर्मठ जनसेवी थे। धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में आप की विशेष दिलचस्पी रहती थी। श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर में वेदी एवं



श्री दिगम्बर जैन बेलगछिया उपवन मन्दिर की चहारदीवारी का निर्माण आप के उल्लेखनीय कार्य रहे। आप सज्जन पुरुष होने के साथ-साथ मृदुभाषी एवं हंसमुख भी थे।●

स्व. घनश्यामदास सरावगी

आप अर्जुनदास सरावगी के पुत्र थे। नीलाम के काम में आप ने बहुत धन कमाया। आप बड़े दबंग, धर्मपरायण तथा शिक्षाप्रेमी व्यक्ति थे।

श्री दिगम्बर जैन भवन की स्थापना तथा निर्माण में आप की प्रमुख भूमिका थी, साथ ही आप इसके आजन्म ट्रस्टी भी रहे। बालिकाओं के शिक्षण हेतु आप ने अपने निवास ५१, बड़तल्ला स्ट्रीट में 'सरावगी बालिका विद्यालय' की स्थापना की। आपके सक्रिय निर्देशन में इस विद्यालय की छात्राओं ने श्रेष्ठ सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। श्री दिगम्बर जैन शिक्षालय के संस्थापकों में आप भी थे। महावीर जयन्ती के अवसर पर निकलनेवाली शोभा-यात्रा के आप प्रेरणा-स्रोत थे। अपने निवास में ही आप ने मनोज्ञ जिन-चैत्यालय की स्थापना की। अपनी स्थापित संस्थाओं के निर्बाध सुचारु संचालन हेतु आप ने घनश्यामदास ट्रस्ट की भी स्थापना की।

आप दृढ़-संकल्पी तथा उदारमना लोकोपकारी धर्मसेवी थे। ●

स्व. पं. चिरंजीलाल मिश्र

आप का जन्म १८९७ ई० में लक्ष्मणगढ़ (राजस्थान) में हुआ। पं० दत्तूराम मिश्र के आप पुत्र थे। १६ वर्ष की अवस्था से आप अध्यापन में प्रवृत्त हुए। १८ वर्ष की आयु में १९२० ई० में आप दार्जिलिंग गए। कुछ काल बाद आप कलकत्ता आ गए और बिड़ला ब्रदर्स के जूट एक्सपोर्ट विभाग में १९२३ से १९३४ ई० तक कार्यरत रहे। दीर्घकालीन प्रवास के बाद पुनः १९५१ ई० में आप कलकत्ता लौट आए।

प्रारम्भ से ही धार्मिक तथा समाजोत्थान हेतु कार्य करने में आप की अनुरक्ति रही। राजस्थान ब्राह्मण संघ के संस्थापकों में आप भी एक थे। इसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने हेतु १९५४ से १९६१ ई० तक कोषाध्यक्ष के रूप में आप ने एक लाख रुपये चन्दे से एकत्र किए। कालान्तर में ४ वर्ष तक आप इसके अध्यक्ष भी रहे। बेरोजगार ब्राह्मण युवकों को टाइपिंग और शार्टहैंड का प्रशिक्षण दिलवा कर आजीविका उपलब्ध करवाने की आप बड़े उत्साह से व्यवस्था करते थे।

५ फरवरी १९७० ई० को आप गोलोकवासी हुए। अग्रसेन स्मृति भवन में ८ फरवरी को आयोजित शोकसभा में ४२ सार्वजनिक संस्थाओं ने आप को श्रद्धांजलि अर्पित की। अपनी संगठन प्रतिभा तथा धर्म-वत्सलता के लिए आप श्रद्धास्पद रहेंगे। ●

स्व. गजराज गंगवाल

आप का जन्म १८९८ ई० में हुआ। आप पूर्वांचल के शीर्षस्थ पाट व्यवसायी थे। पूर्वी बंगाल (सम्प्रति बंगला देश) में आप की अनेक जूट मिलें थीं। अपनी व्यावसायिक प्रतिभा से आप ने अपार धनोपार्जन किया।



आप का व्यक्तित्व कर्मठ तथा जीवन लोकोपकारी था। जैन-धर्म तथा संस्कृति के उन्नायन में आप का प्रगाढ़ अनुराग था। समग्र देश की जैन संस्थाओं को आप ने ५० लाख रुपये से अधिक दान में दिया। लाडनूं (राजस्थान) में आप के द्वारा निर्मित विशाल जिन मन्दिर अर्वाचीन तथा प्राचीन शिल्पकला के सामंजस्य का अनुपमेय प्रतीक है। पंचकल्याणक आदि विभिन्न धर्मानुष्ठानों का आयोजन कर आप ने जैन-धर्म की प्रभावना की। श्री बंगाल-बिहार-उड़ीसा दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के आप सभापति रहे। श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर तथा सुखदेव चैरिटी ट्रस्ट के आप ट्रस्टी थे। आप परम तपस्वी दिगम्बर जैन आचार्य शान्तिसागर महाराज के अनन्य भक्त थे। उनके ही आदेशानुसार हरिजनों के मन्दिर प्रवेश के प्रश्न पर उचित समाधान ढूढ़ने में आप ने महत्वपूर्ण भूमिका निबाही।

आप का निधन १९६९ ई० में हुआ। अपने तेजस्वी व्यक्तित्व तथा धार्मिक कृतित्व के लिए आप जैन जगत में स्मरणीय रहेंगे।●

स्व. डॉ. यशवन्त बामन बाल

आप का जन्म १७ मई १९०८ ई० को एक मराठी परिवार में हुआ। इन्दौर से छात्रवृत्ति मिलने पर आप कलकत्ता आ गए और मेडिकल कालेज से डाक्टरी की उपाधि प्राप्त की।

आप सरल स्वभावी, विनम्र तथा कर्मठ व्यक्ति थे। आप हिन्दी, बंगला, मराठी तथा अंग्रेजी भाषाएँ धाराप्रवाह बोलते थे। गरीबों की आप निःशुल्क चिकित्सा करते थे। अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के प्रति आप बड़े सदय थे, पर रोगी के प्रति कर्त्तव्य की तनिक भी अवहेलना आप को असह्य थी। रामकृष्ण मिशन के 'प्रसूति अस्पताल' की वरिष्ठ नर्स सरस्वती की सलाह पर सुप्रसिद्ध समाजसेवी सीताराम सेकसरिया ने १९३७ ई० में जन-सहयोग से 'मातृ सेवा सदन' स्थापित किया और आप को उसका डॉक्टर नियुक्त किया। १९४५ ई० में आप ने स्वयं 'मातृ मंगल प्रतिष्ठान' अस्पताल की स्थापना २, पाँचू धोबानी लेन (जिसका मुख्य द्वार अब रवीन्द्र सरणी में खुलने लगा है) में की। कालक्रम में बड़ाबाजार की जनता में आप अत्यन्त लोकप्रिय हो गए।

स्वाधीनता संघर्ष में भी आप ने दृढ़ निश्चय के साथ सहयोग किया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के दौरान जब पुलिस की दमनकारी नीतियों से 'करो या मरो' पत्रक का गुप्त प्रकाशन ठप्प हो गया, तब आप ने इसे पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाया। इस तरह आप दिन में रोग-ग्रस्त मानवता तथा रात में पराधीन देश की सेवा के अहर्निश यज्ञ में संलग्न थे। द्वितीय महायुद्ध के दौरान जब बर्मा से भाग कर शरणार्थी विपुल संख्या में कलकत्ता आए, तब मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी यथेष्ट नर्सों व डाक्टरों के

अभाव में उनकी सेवा करने में असमर्थ हो गई। ऐसी विकट स्थिति में प्रख्यात जनसेवी मेघराज सेवक की सलाह पर आप ने बीमार शरणार्थियों की चिकित्सा का भार सँभाला।

आप का निधन १८ जून १९६६ ई० को कलकत्ता में हुआ। आप की पुण्य स्मृति में आप के द्वारा स्थापित अस्पताल में आप की आवक्ष प्रतिमा प्रतिष्ठित है। सफल चिकित्सक तथा सहृदय जनसेवी के रूप में आप की स्मृति आज भी बड़ाबाजार की जनता की स्मृति में जीवन्त है। ●

मोतीलाल खेमका

आप का जन्म १९१५ ई० में लक्ष्मणगढ़ (राजस्थान) में हुआ। बजरंगलाल खेमका के आप पुत्र हैं। सम्प्रति आप नमक तथा वस्त्र के पैतृक व्यवसाय में संलग्न हैं।

आप बजरंगबली हनुमान के श्रद्धालु भक्त हैं। प्रख्यात पगला बाबा आप को सखा भाव से मानते थे। अपने पिता की स्मृति में आप ने खिदिरपुर में 'भजनाश्रम' तथा वृन्दावन में 'सत्संग आश्रम' की स्थापना की है। भगवद्-कीर्त्तन में आप की प्रगाढ़ अनुरक्ति है। ●

सत्यनारायण बागला

आप का जन्म ३१ अक्टूबर १९१६ ई० को कलकत्ता में हुआ। गंगाधर बागला आप के पिता थे। आप ने एटर्नी की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया, फलस्वरूप कलकत्ता उच्च न्यायालय ने स्वर्णपदक से आप को अलंकृत किया। आप प्रसिद्ध विधिवेत्ता हैं और गरीब मुव्वकिलों के सच्चे दावों की निःशुल्क पैरवी करते हैं। कार व्यवसाय से भी आप सम्बद्ध हैं।

आप प्रकृति से बड़े कर्मकाण्डी तथा परोपकारी हैं। वाराणसी में सत्यनारायण मन्दिर के सामने आप ने एक दोमंजिली धर्मशाला बनवा दी है। साथ ही आप ने एक विशेष धनराशि देवोत्तर नाम से बैंक में जमा करवा दी है ताकि उसके ब्याज से धर्मशाला तथा होम्योपैथिक अस्पताल का सुचारू संचालन हो एवं शेष राशि संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार में व्यय हो। ●

पुरुषोत्तम लाल कानोड़िया

आप जन्म सम्वत् १९७४ में कलकत्ता में हुआ। आप के पिता जगन्नाथ कानोड़िया थे। सम्प्रति आप रसायन तथा खनिज व्यवसाय में संलग्न हैं।



आप कर्त्तव्यनिष्ठ, गोभक्त तथा धर्मपरायण कार्यकर्त्ता हैं। आप अनेक वर्ष से सनातन-धर्म अग्रवाल सभा के उपसभापति तथा कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी की लिलुआ शाखा के मन्त्री हैं। बाबा कालीकमलीवाला पंचायत क्षेत्र, विश्व शान्ति अखण्ड हरिकीर्त्तन संघ, अग्रसेन स्मृति भवन, राधामाधव मन्दिर तथा कल्याण आरोग्य सदन की कार्यकारिणी समितियों के आप सक्रिय सदस्य हैं। प्रति वर्ष मकर संक्राति के अवसर पर आप गंगासागर जा कर तीर्थयात्रियों की सेवा-सुविधा की व्यवस्था करते हैं। प्रति रविवार को आप की प्रेरणा से

फूल कटरा में सत्संग-कीर्त्तन का आयोजन होता है।

अपनी कर्मठता तथा व्यवहारकुशलता से आप साथी कार्यकर्त्ताओं में लोकप्रिय हैं। ●

स्व. बद्री प्रसाद शर्मा (उर्फ सन्तोषानन्द)

आप का जन्म २० दिसम्बर १९२१ ई० को हौजकटोरा (वाराणसी) में हुआ। रामसुमेर शर्मा आप के पिता थे। काशी विद्यापीठ से आप ने साहित्यरत्न की उपाधि प्राप्त की।



आप का कार्यस्थल कलकत्ता महानगर ही रहा। १९५५ ई० 'गोरक्षा अहिंसात्मक धर्मयुद्ध समिति' के कार्यालय मन्त्री के रूप में आपने बारम्बार कारावास के दण्ड का वरण किया। समिति के वरिष्ठ सदस्यों मनसुखराय मोर, विश्वनाथ मोर, सूर्यनाथ पाण्डेय, रंगनाथ बांगड़, रामशंकर त्रिपाठी प्रभृति समाजसेवियों के साथ आप गोरक्षा आंदोलन में सदैव अग्रणी रहे। कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी तथा बाबा कालीकमलीवाला पंचायत क्षेत्र (ऋषिकेश) से आप का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। भिवानी (हरियाणा) में आप ने एक हनुमान मन्दिर की प्रतिष्ठा करवाई। १९५६ ई० में ब्राह्मण समाज में विधवा विवाह के समर्थन में आप ने जन-जागरण का कार्य किया।

सार्वजनिक सेवा कार्यों में भी आप की विशेष भूमिका रही। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी तथा मारवाड़ी एसोसियेशन के आप व्यवस्थापक रहे। आप के मन्त्रित्व काल में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के बम्बई तथा असम में महत्वपूर्ण अधिवेशन हुए। १९५० ई० में असम की प्रलयंकारी बाढ़ तथा भूकम्प प्रकोप से पीड़ितों की सहायता हेतु राहत सेवा कार्यों के प्रशंसनीय संचालन के लिए आप को राज्यपाल से प्रशस्ति-पत्र मिला। कलकत्ता नगर निगम निर्वाचन में निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में आपने भाग लिया।

पत्रकारिता तथा पर्यटन में आप की विशेष अभिरुचि रही। 'सन्देशवाहक' साप्ताहिक के आप सम्पादक-प्रकाशक थे। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के विषय में एक तथ्यपूर्ण पुस्तक आप ने प्रकाशित की। 'भारत तीर्थदर्शन' आप की अप्रकाशित पाण्डुलिपि है।

आप का निधन ८ फरवरी १९८१ ई० को भिवानी (हरियाणा) में हो गया। दृढ़ संकल्पी गोभक्त तथा कर्मठ समाजसेवी के रूप में आप स्मरणीय रहेंगे। ●

स्व. रामकुमार झुनझुनवाला

धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक तथा चिकित्सा सभी प्रकार के जनकल्याणकारी कार्यों में आप की प्रगाढ़ अभिरुचि थी। सनातन-धर्म सम्बन्धी सभी संस्थाओं को आप सहर्ष सहयोग देते थे। आप कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी, सनातन-धर्म अग्रवाल सभा, श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल तथा श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय के सभापति रहे। झुंझनुंवाला

जातीय सभा के आप ट्रस्टी तथा मन्त्री बने, साथ ही अग्रवाल पंचायत के सचिव रहे।



बिहार भूकम्प तथा उड़ीसा की बाढ़ के समय आप ने पीड़ितों की बहुत सेवा की। आप की बहुविध धर्म-सेवा से प्रभावित हो कर भारत धर्म महामण्डल ने आप को 'धर्म-भूषण' की उपाधि से सम्मानित किया। ●

पुरुषोत्तम दास खेतान

आप का जन्म सम्वत् १९८१ में कलकत्ता में हुआ। महादेव लाल खेतान आप के पिता थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण कर आप वस्त्र व्यवसाय में संलग्न हो गए।



आप बड़ाबाजार लुंगी मर्चेण्ट्स् एसोसियेशन के अध्यक्ष तथा भारत चेम्बर ग्राफ कामर्स के सदस्य हैं।

आप धर्मप्राण तथा कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। आप श्री सत्यनारायण टेम्पुल के ट्रस्टी; सनातन-धर्म अग्रवाल सभा, सनातन-धर्म प्रचार सभा तथा रतनगढ़ पिंजरापोल सोसाइटी के सचिव; धर्म सांड सहायक समिति तथा अग्रसेन स्मृति भवन (मन्दिर) के सहसचिव; कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी के वित्त सचिव; पंजाब सेवा समिति, राधामाधव टेम्पुल, बाबा कालीकमलीवाला पंचायत क्षेत्र (ऋषिकेश) तथा भगवान भजनाश्रम (वृन्दावन) की कार्य समिति के सदस्य हैं। अपनी दृढ़ निष्ठा व सच्ची लगन से आप लोकप्रिय कार्यकर्त्ता बन गए हैं। ●

कृष्णवल्लभ व्यास

आप का जन्म १९२६ ई० में हुआ। आप ने बी. काम., एल. एल-बी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। कलकत्ता ही आप की कार्यस्थली है।



आप सन्त प्रकृति तथा सेवाभावी व्यक्ति हैं। ध्यान-धारणा में अपना अधिकांश समय व्यतीत करते हैं। ब्रह्म बगीचा शिव टेम्पल ट्रस्ट के आप ट्रस्टी तथा मन्त्री हैं। पुष्टिकर सभा के आप सक्रिय आजीवन सदस्य हैं।

सार्वजनिक सेवा कार्य में भी आप की रुचि है। द्वितीय विश्वयुद्ध के मध्य जब

विपुल संख्या में शरणार्थी बर्मा से कलकत्ता आए, तब शरद चन्द्र बोस के नेतृत्व में गठित सेण्ट्रल रिलीफ कमेटी के माध्यम से आप ने सोत्साह राहत कार्य किया। ●

कन्हैयालाल सिखवाल

आप का जन्म १७ मार्च १९२८ ई० को श्रीडूंगरगढ़ (चुरू) में हुआ। सुखाराम सिखवाल के आप पुत्र हैं। स्कूली शिक्षा प्राप्त कर आप ने नारायणगंज (पूर्वी बंगाल) में पाट की दलाली से जीवन प्रारम्भ किया। सम्प्रति सुप्रसिद्ध 'राजस्थान गेस्ट हाउस' के आप स्वत्वाधिकारी हैं।



आप दृढ़ निश्चयी, कर्मठ तथा धर्मनिष्ठ व्यक्ति हैं। गत अनेक वर्षों से राजस्थान प्रांत के किसी भी हिस्से में जब भी अकाल पड़ा, तब आप गोसेवा के लिए सम्पूर्ण शक्ति से तत्पर हो गए हैं। अभी २-३ वर्ष पूर्व ही अकाल के समय आप ने सम्पूर्ण चुरू जिले की दस हजार गायों की प्राण रक्षा का भार सफलतापूर्वक संभाल कर सर्वत्र जन-प्रशंसा अर्जित की। अपनी अनुकरणीय गोसेवा के लिए आप मारवाड़ी समाज तथा राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित किए गए। आप चुरू जिला गो सेवा संघ तथा श्रीडूंगरगढ़ गोपाल गोशाला के अध्यक्ष, राजस्थान गोसेवा संघ (कलकत्ता) के संयोजक तथा अकाल राहत समिति (राजस्थान) के वरिष्ठ सदस्य हैं।

आप विभिन्न धार्मिक, सामाजिक तथा सार्वजनिक सेवा संस्थाओं से विभिन्न पदों पर घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध हैं। १० वर्ष तक आप अखिल भारतवर्षीय सिखवाल ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष रहे। १९७९ ई० में इस संस्था ने आप को 'सिखवाल रत्न' की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित किया। सम्प्रति राजस्थान परिषद के आप उपाध्यक्ष हैं।

धर्म तथा जाति के लिए अपने कर्त्तव्य बोध के अनुकरणीय पालन द्वारा आप युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा-स्रोत बन गए हैं। ●

धर्मशीला भुवालका

आप का जन्म २६ जून १९२८ ई० को दुर्ग (मध्यप्रदेश) में हुआ। आप ने एम. ए., पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है। आप का विवाह कर्मठ समाजसेवी अभिमन्यु कुमार भुवालका से हुआ।



कलकत्ता महानगर की विभिन्न धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं से आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध हैं। 'श्रीमद्भागवत गीता' का आप ने गहन अध्ययन किया है और इसके अनेक महत्वपूर्ण स्थलों की आप मार्मिक व्याख्या करती हैं।

आप विदुषी तथा गुणग्राही धर्मनिष्ठ महिला हैं। ●



बड़ाबाजार के कार्यकर्त्ता – स्मरण और अभिनन्दन ग्रंथ

स्व. स्वामी विश्वानन्द

आप का जन्म १८७७ ई० में हुआ। आप का बचपन का नाम विश्वम्भर नाथ मिश्र था। बिठूर से मैट्रिक कर लखनऊ में आपने कालेज की शिक्षा प्राप्त की। फिर आप राजपूताना रेजिमेण्ट में सिपाही हो कर प्रथम महायुद्ध में जर्मन मोर्चे पर लड़ने गए। वहाँ दो गोलियाँ आपके शरीर में से आर-पार निकल गईं। कई महीने में घाव भरा, फिर वर्साई सन्धि के बाद आप भारत लौटे। घुड़सवारी करने और शिकार खेलने में आप बहुत दक्ष थे।



लोमहर्षक जालियांवाला बाग काण्ड के दौरान जनरल डायर के आदेश देने पर भी अपने देशवासियों पर गोली चलाने से आपने स्पष्ट इन्कार कर दिया—एक बार नहीं, दो बार। कोर्ट मार्शल कर आप को मियांवाली जेल में डाल दिया गया, पर चतुराई से आप फरार हो गए। फलस्वरूप आपकी धन-सम्पत्ति सब जब्त कर ली गई।

आप परिव्राजक के रूप में सम्पूर्ण देश का भ्रमण करने लगे। इसी दौरान आप स्वनामधन्य स्वामी श्रद्धानन्द के सम्पर्क में आए। फिर आप अनेक देशी राजों-महाराजों से भी मिले।

देशबन्धु यतीन्द्र मोहन सेनगुप्त, देशबन्धु चित्तरंजन दास तथा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस से घनिष्ठता हो जाने पर बंगाल को ही आपने अपनी कार्यस्थली चुना। तत्कालीन साम्राज्यवादी शासन में भारतीय रेल कर्मचारियों की शोचनीय अवस्था को देख उनकी सेवा - शर्तों में सुधार करने के लिए आपने अखिल भारतीय स्तर पर रेल हड़ताल करवाई और शासन को उनकी आवश्यक माँगों को मानने पर मजबूर किया। १९२४ ई० में पण्डे-पुजारी वर्ग की धाँधली तथा अत्याचारों के विरुद्ध आपने तारकेश्वर में सफलतापूर्वक सत्याग्रह चलाया। १९२६ ई० में कलकत्ते के साम्प्रदायिक दंगे में आततायियों का अत्याचार रोकने के लिए आपने अथक परिश्रम किया।

जीवन का उत्तरार्द्ध आपने नेत्रहीन एवं रुग्णावस्था में बहुत काल तक व्यतीत किया। २५ जून १९५१ ई० को आप गोलोकवासी हुए। आपका श्रद्धास्पद व्यक्तित्व निर्भीक देश सेवा के मार्ग में हमारा पाथेय होगा। •

स्व. पन्नराज जैन 'रानीवाले'

आप का जन्म १८८२ ई० में हुआ। आप के पिता फूलचन्द जैन थे, जो चुरु (फतेहपुर) से आकर खुर्जा में बस गए थे और 'रानीवाले' कहलाते थे। प्राइवेट रूप



से मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर आप पैतृक व्यवसाय रूई की दलाली में सलग्न हो गए।

आप बड़े धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे, साथ ही

दुराचार के प्रबल विरोधी। जैन-धर्म के तो आप विद्वान थे ही, अतः जैन सिद्धान्त पर अनुसन्धान हेतु आपने एक संस्था बनाई जिसका नियम था कि पर स्त्री-गामी और वेश्यागामी व्यक्ति उसके सदस्य नहीं बन सकते। तत्कालीन समाज में इससे व्यापक खलबली मच गई। सार्वजनिक जीवन में प्रवेश आपने एक नाटक माला को लेकर किया। लगातार ४-५ वर्षों तक आपने श्री पार्श्वनाथ उपवन मन्दिर (बेलगछिया) में 'ज्ञान सूर्योदय' नामक जैन-नाटक का प्रति वर्ष सफल आयोजन किया।

कालान्तर में आप हिन्दी नाट्य परिषद के सभापति हुए। यह संस्था नाटक के माध्यम से लोकमान्य तिलक के उग्र राजनैतिक विचारों की प्रचारक थी। आप के प्रभाव-शाली नेतृत्व में हिन्दी नाट्य परिषद की लोकप्रियता में अपार वृद्धि हुई। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के देहावसान पर हिन्दी नाट्य परिषद ने विराट जुलूस निकाला और गंगा घाट पर एक विशाल जनसभा भी आयोजित की जिसमें आपने अपनी ओजस्वी एवं क्रांतिकारी वक्तृता द्वारा जनसाधारण को स्वातन्त्र्य-युद्ध में अपनी आहुति देने के लिए आह्वान किया।

१९२० ई० में जब महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन छेड़ा, तब आप सरकार के विरुद्ध सड़कों पर धरना देनेवालों में अग्रणी थे। जनमानस को स्वातन्त्र्य संघर्ष की ओर प्रेरित करने की आपकी प्रबल क्षमता से भयभीत हो अंग्रेजों ने आप को भी कारावास का दण्ड दिया।

अनन्य देशभक्त, प्रबुद्ध समाज सुधारक एवं हिन्दी नाटकों के आदि संरक्षक के रूप में आप चिरस्मरणीय रहेंगे। •

स्व. फूलचंद चौधरी

आप का जन्म १८८३ ई० को गावड़ (हिसार) में हुआ। डालूराम चौधरी के आप पुत्र थे।



आप अग्रगण्य समाजसेवी थे। श्री विशुद्धा-नन्द सरस्वती विद्यालय भवन के निर्माणार्थ आप ने ६ अन्य साथियों के साथ यह प्रतिज्ञा ली कि पगड़ी सिर पर तभी बाँधेंगे जब इस हेतु छह लाख रुपये एकत्र हो जायेंगे। हिन्दू अनाथालय (लिलुआ), मारवाड़ी सहायक समिति (सम्प्रति मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी) आदि सार्वजनिक संस्थाओं की स्थापना में आपकी प्रेरणा तथा कर्मठता की विशेष भूमिका रही।

गुप्त तरीके से क्रांतिकारी स्वाधीनता सेनानियों की सहायतार्थ विदेशों से अस्त्र-शस्त्र मंगवाने में आप भी सक्रिय रूप में संलग्न थे। १९१४ ई० में राजद्रोह के आरोप में अंग्रेज सरकार ने आप को ५ वर्ष के लिए बंगाल से निष्कासित कर दिया। निर्वासन की अवधि को आपने पंजाब में बिताया।

१९३३ ई० में आपका निधन हो गया। आप का व्यक्तित्व देशप्रेम तथा समाज सेवा के मार्ग पर हमारे लिए पथ-प्रदर्शक रहेगा।•

स्व. पं. पुरुषोत्तम राय

आप का जन्म ९ अक्टूबर १८९४ ई० को शाहजहांपुर (वाराणसी) में हुआ। आप की बाल्यावस्था में ही पिता पं० रामसुन्दर राय का आकस्मिक निधन हो

गया। आपकी शिक्षा-दीक्षा स्नेही चाचा की छत्रछाया में कलकत्ता में हुई।



मैट्रिक की पढ़ाई अपूर्ण छोड़ कर आप महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। कांग्रेस के प्रत्येक आन्दोलन – विदेशी वस्त्र बहिष्कार, नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो–में भाग ले कर आप कई बार जेल गए। जनसाधारण को प्रेरित कर आपने हजारों सत्याग्रही तैय्यार किए। ऐसा लगता था मानो उस कालखण्ड में बड़ाबाजार कांग्रेस सम्पूर्ण बंगाल का ही राजनैतिक नेतृत्व कर रही थी। लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, सरदार पटेल, देशबंधु चित्तरंजन दास, सुभाष चन्द्र बोस, मौलाना आजाद तथा जवाहरलाल नेहरु का आप को निकट सानिध्य प्राप्त हुआ। सीमांत गांधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ प्रायः आपके निवास पर जाते थे। नेताजी सुभाष बोस की मृत्यु की निराधार अफवाह फैलने पर वास्तविकता की जाँच हेतु आप दुस्साहस पूर्वक पुलिस सिपाही के छद्मवेश में प्रेसिडेन्सी जेल में चले गए। कलकत्ता में साइमन कमीशन के बहिष्कार का आपने नेतृत्व किया। साम्प्रदायिक दंगों की ज्वाला को शान्त करने के लिए महात्मा गांधी के साथ-साथ आप भी विभिन्न इलाकों में घूमे।

सामाजिक सेवा के क्षेत्र में आप विभिन्न सार्वजनिक संस्थाओं से सक्रिय रूप में सम्बद्ध थे, यथा – हिन्दी नाट्य परिषद, बजरंग परिषद, काशी विश्वनाथ सेवा समिति, अपर इंडिया एसोसियेशन, जमादार संघ। हिन्दी शिक्षा-प्रसार के प्रति भी आप जागरुक थे। नागरी प्रचारिणी सभा (काशी) तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) के आप सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण में पं० मदनमोहन मालवीय को आपने सहयोग दिया। मेधावी गरीब छात्रों को आर्थिक सहायता दिलवाने में आप सदैव तत्पर रहते थे।

अकस्मात् हृदयगति रूक जाने से आप का निधन ९ फरवरी १९४९ ई० को हो गया। आप निर्भय देशभक्त तथा कर्मठ समाजसेवक थे। •

राम कुमार खेमका

आप का जन्म १८९४ ई० में रतनगढ़ (राजस्थान) में हुआ। कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में बी. एस-सी. के अध्ययन काल में ही आप टोकियो (जापान) चले गए और वहाँ पर जापानी भाषा सीखी। १९१२ ई० में आप अमेरिका चले गए तथा वहाँ के



विभिन्न विश्वविद्यालयों में अल्पकाल के लिए प्रवेश ले कर बढ़ईगिरी, इंजीनियरिंग तथा चित्रकारी सीखी। बाद में न्यूयार्क में कामर्स का अध्ययन किया।

स्वाधीनता की तीव्र ललक आप में थी।

इस हेतु आप ने कई क्रान्तिकारी छात्रों से भेंट की तथा लाठी चलाना व बाक्सिंग भी सीखी। जापान में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी राजा महेंद्र प्रताप के साथ आप ने देश की स्वाधीनता प्राप्ति हेतु कार्य किया। अमर शहीद सरदार भगत सिंह, उनके भाई करतार सिंह, लाला लाजपत राय तथा विप्लवी विपिन बिहारी गांगुली के निकट सम्पर्क में रहने का आप को अवसर मिला। १९१४ ई० में जब लाला लाजपत राय ने अमेरिका में 'इण्डिया होम रुल लीग' की स्थापना की, तब आप ने भी उसमें सक्रिय भाग लिया। वहीं पर 'हिन्दुस्तान एसोसियेशन आफ अमेरिका' का गठन किया गया और उन अनेक विश्वविद्यालयों में इसकी शाखायें खोली गईं, जिनमें भारतीय छात्र अध्ययन रत थे।

१९२३ ई० में आप भारत वापिस आए तथा उस वर्ष हुए 'नागपुर कांग्रेस अधिवेशन' में जा कर अपने कार्यों से महात्मा गांधी को अवगत कराया।

कलकत्ता लौटने पर १९२६ ई० में पहिले 'बिड़ला ब्रदर्स' और फिर 'सूरजमल नागरमल' में काम किया। १९२९ ई० में मयूरभंज (उड़ीसा) के राजा ने अपने क्षेत्र में आप को लकड़ी के कोयले का एकाधिकार व्यवसाय करने की अनुमति दे दी। १९५० ई० में आप ने आयात व्यापार प्रारम्भ किया। आप फेडरल चेम्बर आफ कामर्स तथा मारवाड़ी ट्रेड एसोसियेशन के सचिव भी रहे।

विलायत यात्रा करने के लिए रूढ़िपंथी समाज ने आप को जाति से बहिष्कृत कर दिया। बड़ाबाजार क्षेत्र में सार्वजनिक उद्यान की स्थापना हेतु आप ने सफलतापूर्वक अभियान चलाया, जिसके परिणामस्वरूप 'सत्यनारायण पार्क' बना। १९२६ ई० में 'स्वदेशी व्यावसायिक संग्रहालय' का आप ने शुभारम्भ किया, जिसका उद्घाटन महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय ने किया। मदनमोहन बर्मन के सहयोग से आप कलकत्ता गजट के सम्पादक बने। लायन्स क्लब्स इण्टरनेशनल के भी आप सक्रिय सदस्य रह चुके हैं।

देश प्रेम तथा समाज सेवा में आप की अनुरक्ति अनुकरणीय है। •

स्व. गुरुदत्त सिंह 'बाबा'

आप ने स्वाधीनता संघर्ष में प्राणपण से भाग लिया। कामगाटामारु नामक जहाज के द्वारा, कनाडा जाते हुए सिक्खों के दल में से आप फरार हो गए। निर्वासित अवस्था में भी आपने महात्मा गांधी से सदैव पत्राचार बनाये रखा



और अवसर पाकर मिले भी। तब आप ने स्मृति चिह्न स्वरूप महात्मा गांधी को अपने पास का लोटा और कम्बल दे दिया।

कालान्तर में आप के सभापतित्व में एक जन-सभा का आयोजन भी हुआ, जिसमें आप ने बड़ा प्रभावशाली और जोशीला भाषण दिया। फलतः राजद्रोह के अपराध में तत्कालीन साम्राज्यवादी ब्रिटिश सरकार ने आप को १ वर्ष के लिए कारावास का दण्ड दिया। •

स्व. भगवान देवी सेकसरिया

आप का जन्म संवत १९५६ में नवलगढ़ (राजस्थान) में हुआ। आप के पिता गणपति राम थे। आप का विवाह कलकत्ते के

प्रख्यात समाजसेवी तथा स्वतन्त्रता-सेनानी सीताराम सेकसरिया के साथ हुआ।

१९२७ ई० में पर्दे के बन्धन से मुक्त हो आपने स्वाधीनता संग्राम तथा नारी जागरण हेतु कार्य प्रारम्भ किया। १९३० ई० के सत्याग्रह आन्दोलन में महात्मा गांधी ने महिलाओं को विदेशी वस्त्र बहिष्कार तथा शराब-बन्दी के लिए पिकेटिंग का आदेश दिया। तब आपने सभा और जुलूसों में तो भाग लिया ही, साथ ही विदेशी वस्त्रों तथा शराब की दूकानों के सामने कई दिनों तक पिकेटिंग की। फलतः आप को कारावास के दण्ड का भी वरण करना पड़ा। गांधी-इर्विन समझौते के बाद विदेशी वस्त्र बहिष्कार समिति की ओर से आपने घर-घर जा कर खादी की फेरी की तथा विदेशी वस्तुएँ त्यागने की प्रतिज्ञा करवायी।

सामाजिक सुधार आन्दोलन में भी आप अग्रगण्य थीं। १९३२ ई० में मारवाड़ी समाज में जब 'मृतक बिरादरी भोज' के विरुद्ध पिकेटिंग का अभियान चला, तब आप ने रानीगंज तक जा कर इस में सक्रिय भाग लिया। १९३४ ई० में कलकत्ता में जानकी देवी बजाज की अध्यक्षता में आयोजित 'परदा निवारण सम्मेलन' की स्वागत समिति की आप मन्त्रिणी थीं।

आप दृढ़-निश्चयी, राष्ट्र-प्रेमी तथा प्रबुद्ध महिला थीं। आप का साहसी व्यक्तित्व आज भी नारी-समाज के लिए उत्प्रेरक है। ●

स्व. गंगा देवी मोहता

आप सुविख्यात समाजसेवी बालकृष्ण मोहता की धर्मपत्नी थीं। समाज तथा देश के प्रति सेवा कार्यों में आप ने बखूबी सहधर्मिणी की भूमिका आजीवन निबाही।

१९३३ ई० में जब महात्मा गांधी के स्वराज्य-संघर्ष का द्वितीय चरण प्रारम्भ हुआ, तब आप भी उस आन्दोलन में सक्रिय



भाग लेने लगीं। चाहे पिकेटिंग हो या जूलूस, महिला प्रदर्शनकारियों का आपने सदैव निर्भीकता से नेतृत्व किया। परिणाम स्वरूप आप को कारावास के दण्ड को भी भोगना पड़ा।

समाज सुधार में भी आप की पूर्ण आस्था थी। नारी जगत में व्याप्त रूढ़ियों को नष्ट करने हेतु आपने जबर्दस्त प्रचार कार्य किया। पर्दा प्रथा विरोध तथा विधवा विवाह समर्थन में हुए आन्दोलनों में आप अग्रणी रहीं। ऐसे भी कारुणिक अवसर आए जब पैसों के अभाव में बच्चों की दवा-दारु की व्यवस्था भी कठिन हो गई, पर आप देश तथा समाज हित में अपने कर्त्तव्य-पथ पर अविचलित भाव से अडिग रहीं। ●

पं. सत्यनारायण मिश्र

आप का जन्म २ मार्च १८९७ ई० को गोरखपुर जिले में हुआ। कलकत्ता ही आप का अध्ययन एवं अध्यापन का क्षेत्र रहा।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे स्वाधीनता संग्राम में आपने सोत्साह भाग लिया, फलतः कई बार आप को जेल यात्रा भी करनी पड़ी। ब्रिटिश सत्ता के आतंक की परवाह न कर बड़ाबाजार जिला कांग्रेस की स्थापना के बाद आपने अपने मकान में इस का कार्यालय १२ वर्ष तक रखा और मन्त्री भी बने। १९३० ई० में आप इसके



निर्विरोध सभापति निर्वाचित हुए। आप अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के दीर्घ काल तक सदस्य रहे। कलकत्ता नगर निगम के आप 'एल्डरमेन' भी रह चुके हैं। शीर्ष राजनेताओं, यथा – देशबन्धु चित्तरंजन दास, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, डॉ० जे. एम. दासगुप्त, डॉ० विधान चन्द्र राय आदि का आपको सानिध्य प्राप्त हुआ।

सामाजिक क्षेत्र में भी आप का योगदान प्रशंसनीय है। गंगासागर के तीर्थयात्रियों को सेवा के लिए आपने श्रीकृष्ण परिषद की स्थापना की। द्वितीय विश्व युद्ध में जब रंगून पर बमबारी हुई, तब वहाँ से आनेवाले शरणार्थियों की आपने अपर इंडिया एसोसियेशन के माध्यम से बहुविध सेवा की। सारस्वत क्षत्रिय विद्यालय में आप बहुत समय तक अध्यापक रहे तथा कार्यकारिणी समिति में शिक्षकों का प्रतिनिधित्व भी किया।

वयोवृद्ध तथा रुग्ण होने के बावजूद आप राष्ट्रीय एवं सामाजिक कार्यों में युवा वर्ग को प्रोत्साहित करते रहते हैं। ●

डॉ. बैजनाथ सिंह

आप का जन्म १८९९ ई० तरसावां (जौनपुर) में हुआ। मथुरा सिंह आप के पिता थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। फिर सारस्वत क्षत्रिय विद्यालय में अध्यापक हो गए।



आप महात्मा गांधी के अनन्य अनुयायी हैं। १९२१ ई० में पं० अम्बिका प्रसाद बाजपेयी, देशबन्धु चित्तरंजन दास आदि के साथ ब्रिटिश शासन के विरुद्ध नारे लगाते हुए आप गिरफ्तार हुए और १ वर्ष ९ माह की सजा मिली। फिर १९२९ ई० में साइमन कमीशन बहिष्कार, १९३० ई० में नमक सत्याग्रह, आदि में भाग ले कर आपने बारंबार जेल यात्रा की। महात्मा गांधी तथा जवाहर लाल नेहरू के निकट सम्पर्क में रहने से आप पर विदेशी शासन की कड़ी नजर भी थी। आप अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के सदस्य रहे। सम्प्रति बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी (संगठन) के आप प्रधान सचिव हैं।

आप अनेक सांस्कृतिक तथा सार्वजनिक संस्थाओं से सक्रिय रूप में सम्बद्ध रहे, यथा – हिन्दी नाट्य परिषद, बजरंग परिषद, काशी विश्वनाथ सेवा समिति, बड़ाबाजार नागरिक स्वास्थ्य संघ, आदि। अपर इंडिया एसोसियेशन के आप प्रधान सचिव रहे। ४० वर्षों तक आप स्काउटिंग से सम्बद्ध रहे। अपने पैतृक ग्राम में आपने कृष्ण-मंदिर की प्रतिष्ठा करवाई है।

आप निर्भय तथा कर्मठ राष्ट्रसेवी हैं। ●

स्व. सूर्यवंश सिंह

आप का जन्म १९०३ ई० को सेनापुर (जौनपुर) में हुआ। आप भागवत सिंह के

पुत्र थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर आप मुद्रण तथा पत्र-प्रकाशन व्यवसाय में संलग्न हो गए।



आप निर्भीक राष्ट्रप्रेमी थे। १९२१ से १९४२ ई० तक के प्रायः सभी स्वातन्त्र्य-संघर्षों – नमक सत्याग्रह, व्यक्तिगत सत्याग्रह, विदेशी वस्त्र बहिष्कार और असहयोग आन्दोलन में आप ने भाग लिया। अन्तिम आन्दोलन 'करो या मरो' में आप ने बड़ी साहसिक भूमिका अदा की। फलतः विभिन्न अवसरों पर आप को सब मिला कर ५½ वर्ष जेल में रहना पड़ा। भारत सरकार ने स्वातन्त्र्य-संघर्ष में योगदान के लिए आप को ताम्र-पत्र से विभूषित किया।

आप विचारों से उग्र, व्यवहार में सरल और प्रकृति से सम्वेदनशील व्यक्ति थे। राष्ट्र-पूजा ही आप के जीवन का सबसे बड़ा मूल्य था। १९६७ ई० में दीर्घ रुग्णावस्था के पश्चात् आप का देहावसान कलकत्ता में हो गया। •

राम लगन सिंह

आप का जन्म जनवरी १९०६ ई० को गोठौली (जौनपुर) में हुआ। आप महादेव सिंह के पुत्र हैं। आप ने कलकत्ता विश्व-विद्यालय से एम. ए. किया। फिर हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) से साहित्यरत्न परीक्षा में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। तत्पश्चात् आप दीर्घ काल तक स्काटिश चर्च कालेज में हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे।



छात्रावस्था से ही आप राजनैतिक क्षेत्र में सक्रिय रहे। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के सानिध्य में स्वाधीनता संघर्ष में भाग लेने का आप को अवसर मिला। १९२८ ई० में लाला लाजपत राय की मार्मिक मृत्यु पर साप्ताहिक 'क्षत्रिय संसार' के सम्पादकीय में आप ने 'हा! लालाजी' शीर्षक टिप्पणी लिखी और राजद्रोह के अपराध में दण्डित हुए। १९३० से १९४२ ई० तक विभिन्न आन्दो-लनों में भाग ले कर आप ने कुल ४½ वर्षों की जेल यातना सही।

१९५२ ई० से १९६९ ई० तक पश्चिम बंग विधान सभा/विधान परिषद के आप विधायक रहे। सम्प्रति बड़ाबाजार जिला कांग्रेस (संगठन) के अध्यक्ष हैं। स्वातन्त्र्य-संघर्ष में अपने योगदान के लिए आप भारत सरकार द्वारा ताम्र-पत्र से विभूषित किए गए।

आप कुशल वक्ता एवं प्रबुद्ध लेखक हैं। राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन में ईमानदारी तथा कर्त्तव्यनिष्ठा ही आप का मूलमन्त्र है। समसामयिक घटनाओं पर आप के विचार आकाशवाणी द्वारा आयोजित वार्ताओं में प्रसारित होते रहते हैं। •

स्व. मदन गोपाल जोशी

आप निर्भीक देशभक्त तथा स्पष्ट वक्ता थे। महात्मा गांधी के आप अनन्य भक्त थे। १६२० ई० में हुए असहयोग आन्दोलन में आपने बड़े उत्साह से काम किया। १६३० ई० में हुए नमक सत्याग्रह आन्दोलन में आपने भाग लिया और परिणामतः दण्डित हो जेल भी गए। बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी के आप सम्मानित सदस्य थे। ●



स्व. जगदम्बा प्रसाद शुक्ल

आप कर्मठ कांग्रेस कार्यकर्त्ता थे। बड़ाबाजार अंचल की राजनैतिक तथा सामाजिक गतिविधियों में आपने सक्रिय भाग लिया। स्वातन्त्र्य संघर्ष के दौरान महात्मा गांधी के सत्याग्रह आन्दोलनों में भाग ले कर आप ने कारावास के दण्ड का भी वरण किया। ●



स्व. जीवनलाल पण्डित

आप बड़े ही उत्साही तथा साहसी स्वातन्त्र्य-सेनानी थे। अंग्रेजों के खिलाफ हुए कांग्रेस के आन्दोलनों में भाग ले कर आप जेल भी गए। वहाँ पर साथी राजनैतिक बन्दियों की देखभाल में आप तत्पर रहते थे और जहाँ पर भी कमी दिखती उसे पूरा कराते थे।



बड़ाबाजार जिला कांग्रेस के अध्यक्ष पद से आप ने देश की तो सेवा की ही, साथ ही अपने ओजमय भाषणों से जनता में आजादी पाने की उत्कट अभिलाषा का भी संचार कर दिया। ●

स्व. नरवे राम दवे



आप निष्ठावान कांग्रेसी तथा निर्भय देशभक्त थे। स्वदेशी वस्तुओं तथा खादी वस्त्रों के प्रचार में आप अग्रणी थे।

स्वयं कन्धे पर खादी रख कर घर-घर जा कर आप प्रचार करते थे। विदेशी वस्त्र की दूकानों पर आप ने पिकेटिंग भी की और तदर्थ गिरफ्तार होकर जेल भी गए।

गुजराती समाज में सेवाभावी सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में आप का महत्वपूर्ण स्थान था।

स्व. मधुसूदन दास बर्मन

आप बड़ाबाजार के प्रसिद्ध बाजार 'राजा कटरा' के स्वत्वाधिकारी थे। बाल्य काल से ही राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में आप अनुरक्त थे। जब जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के विरोध में कलकत्ता मैदान में एक विराट जनसभा हुई, तब आप भी उसमें शामिल हुए और घर लौट कर स्वदेशी वस्त्र धारण करने की प्रतिज्ञा कर ली। अपने पास के सभी विदेशी वस्त्र आपने जला दिए तथा परिजनों के अत्यधिक दबाव के बावजूद अपने निश्चय पर अडिग रहे।



१९२० ई० में महात्मा गांधी के आंदोलन के दौरान जब पद्मराज जैन रानीवाले, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, माधव प्रसाद शुक्ल आदि शीर्ष नेता गिरफ्तार हो गए, तब बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी ने आप को आन्दोलन का दायित्व सौंपा। १९२८ ई० में साइमन कमीशन को काला झण्डा दिखाने वाले प्रदर्शनकारियों का आपने नेतृत्व किया और जब पुरुषोत्तम राय पकड़े गए, तब बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी का मन्त्री पद भी सँभाला। १९३० ई० में नमक सत्याग्रह के दौरान महेश बथान समुद्र तट पर नमक बनानेवाले सत्याग्रही जत्थे के साथ आप भी गए और गिरफ्तार हो कारावास का दण्ड सहन किया।

सामाजिक कार्यों में भी आप सोत्साह भाग लेते थे। सुप्रसिद्ध सांवरियाजी के मन्दिर की सेवा तो आपकी वंश परम्परा रही है। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में प्राकृतिक चिकित्सा विभाग के मन्त्री के रूप में आपने प्रशंसनीय जन-सेवा कार्य किया।

आप कर्मठ राष्ट्रसेवी तथा लोकप्रिय समाजसेवी थे।

स्व. वसन्त लाल मुरारका

आप का जन्म विक्रम संवत् १९४९ को मुकुन्दगढ़ (जयपुर) में हुआ। रामदेव मुरारका के आप पुत्र थे। १२ वर्ष की तरुणावस्था में अध्ययन हेतु आप कलकत्ता आ गए।



महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे स्वाधीनता संघर्ष में आपने सक्रिय योगदान किया। १९२० ई० में जब बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी की स्थापना हुई, तब आप उसके सहकारी मन्त्री बने। असहयोग

आंदोलन, नमक सत्याग्रह, स्वदेशी आंदोलन, करो या मरो सत्याग्रह में भाग ले कर साम्राज्यवादी अंग्रेज सरकार के दमनकारी कानूनों को आपने तोड़ा और फलस्वरूप बारम्बार दण्डित हो कारावास के दण्ड का वरण किया। अन्त में १९४२ ई० में तो आपको डेढ़ वर्ष के लिए प्रेसिडेन्सी जेल में नजरबन्द रखा गया। शरत चन्द्र बोस जब जेल से रिहा हुए, तब देशबन्धु पार्क में आयोजित महती आमसभा में राधाकृष्ण नेवटिया के साथ आपने उन्हें १,११,००१ रु० की थैली भेंट की। अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के आप सदस्य थे।

सार्वजनिक कार्यों में भी आप ने उत्साह से भाग लिया। १९१३ ई० में मारवाड़ी सहायक समिति की स्थापना होने पर आप उसके स्वयंसेवक बने। १९१७ ई० में मारवाड़ी ट्रेड एसोसियेशन की स्थापना हुई, तब आप भी उसके संस्थापकों में थे। हरिजन उत्थान समिति के मन्त्री के रूप में आपने उनके लिए पाठशालाएँ खुलवाईं तथा उनकी बस्तियों में प्रचार किया। नेताजी सुभाष बोस जब जेल से रिहा हुए, तब आपने उनके लिए फण्ड एकत्र किया और महाजाति सदन की स्थापना में विशेष सहयोग दिया। हरलालका अस्पताल के आप सभापति थे। मातृ सेवा सदन, मारवाड़ी बालिका विद्यालय और बालिका शिक्षा परिषद आदि संस्थाओं की कार्यकारिणी के आप सदस्य थे।

आप अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के १९२५ ई० में मन्त्री तथा १९३४ ई० में प्रयाग अधिवेशन के सभापति निर्वाचित हुए। महासभा के माध्यम से समाज सुधार के लिए आपने अथक प्रयास किया और पुरातन कुरीतियों – बाल विवाह, वृद्ध विवाह, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा आदि का आपने डट कर विरोध किया। १९२६ ई० में विधवा विवाह में सक्रिय भाग लेने पर आप को रूढ़िवादियों ने जाति बहिष्कृत कर दिया। १९४८ ई० में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की समाज सुधार उपसमिति के आप अध्यक्ष निर्वाचित हुए। १९३५ ई० में राजपूताना नवयुवक सम्मेलन का आप ने सभापतित्व किया।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना में आप का सहयोग रहा। प्रति वर्ष सम्मेलन के द्वारा आप ५०० रुपये का 'मुरारका पारितोषिक' देते रहे।

आप मँजे हुए कार्यकर्त्ता तथा कट्टर सुधारवादी थे। •

रामरूप द्विवेदी 'निडर'

आप का जन्म १ जून १८९७ ई० को डीह बड़गांव (वाराणसी) में हुआ। आप रघुनन्दन द्विवेदी के पुत्र हैं।



१९१९ ई० में 'रौलट एक्ट' के विरुद्ध हुए आन्दोलन में आपने प्रमुख रूप से भाग लिया और फलस्वरूप ६ मास के लिए बनारस राज्य से निष्कासित कर दिए गए। आप स्वामी श्रद्धानन्द के साथ लाहौर गए और वहाँ घर-घर जाकर 'जलियांवाला हत्या-काण्ड' के ऊपर कविता पढ़ते थे। १९२२ ई० में पं० रविशंकर शुक्ल के साथ आपने छत्तीसगढ़ अंचल में घूम-घूम कर ब्रिटिश

शासन के विरुद्ध कविता पाठ किया व भाषण दिए। १९३७-३९ ई० के कालखण्ड में असम प्रदेश में आपने अश्विनी कुमार दत्त तथा बैरिस्टर तरुण फूकन के साथ स्वाधीनता प्राप्ति हेतु कार्य किया। १९४२ ई० में भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने सोत्साह भाग लिया। १९४८ ई० में आप कलकत्ता आ गए। २७ नं० ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के आप प्रधान सचिव तथा अध्यक्ष रह चुके हैं। अपर इण्डिया एसोसियेशन के आप सक्रिय सदस्य हैं। आप साहसी तथा जनप्रिय राष्ट्र प्रेमी हैं। ●

राजबली शुक्ल

आप का जन्म १८९८ ई० को गाँव किरायल शुक्ल (जिला देवरिया) में हुआ। कलकत्ता ही आप के अध्ययन तथा अध्यापन का क्षेत्र रहा।



महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता संग्राम में आप ने सोत्साह भाग लिया तथा एतदर्थ बारम्बार कारादण्ड का वरण किया। बड़ाबाजार जिला कांग्रेस की स्थापना में आपने सक्रिय भाग लिया और इसके अनेक विभागों के मन्त्री पद का दायित्व भी सँभाला। सामाजिक कार्यों में भी आप सदैव अग्रणी रहते हैं। गंगासागर के यात्रियों की सेवा में आप सदा तत्पर रहे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जब रंगून पर बम वर्षा हुई, तब वहाँ से आनेवाले शरणार्थियों की आपने अपर इंडिया एसोसियेशन के माध्यम से अथक सेवा की। हिन्दू-मुस्लिम दंगों में भी आपने उत्पीड़ित हिन्दू बन्धुओं को बचाने में मदद की।

अस्वस्थ होते हुए भी राष्ट्रीय तथा सामाजिक कार्यों में आप युवा पीढ़ी का उत्साहवर्धन करते रहते हैं। ●

रामचरण भरतिया

आप का जन्म १९०६ ई० में हुआ। शिवनारायण भरतिया के आप पुत्र हैं। आपने कलकत्ता से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। सम्प्रति कलकत्ता तथा कानपुर में चीनी तथा गल्ला व्यवसाय में संलग्न हैं।

तरुणावस्था से आप ने स्वाधीनता-संघर्ष में सक्रिय भाग लिया। १९२१ ई० में आप ने एक आम सभा आयोजित की तथा दण्डित हो सश्रम कारावास सहा। १९३० ई० में नमक सत्याग्रह के दौरान कांग्रेस का बुलेटिन निकालने के अपराध में आप सवा दो वर्ष तक जेल में रहे। १९४० ई० में पटौदी रियासत प्रजामण्डल का नेतृत्व कर आप पुनः गिरफ्तार हुए।

समाज सुधार में आप सदा अग्रपंक्ति में रहे। अपने छोटे भाइयों के विवाह आपने बिना दहेज लिए ही किए। विधवा विवाह के आप समर्थक हैं। आज भी आप सामाजिक रूढ़ियों तथा कुरीतियों को दूर करने में प्रयत्नशील हैं। ●

स्व. राम नगीना सिंह

आप का जन्म १९०१ ई० में बलिया (उ० प्र०) में हुआ। परमेश्वरी सिंह के आप पुत्र थे। कलकत्ता से ही आप ने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। कालक्रम में आलू-पोस्ता क्षेत्र में आपका बहुत बड़ा कारबार रहा।

आप स्वभाव से निर्भीक, स्वदेश-प्रेमी तथा कर्मठ व्यक्ति थे। देश की आप ने बहुविधि मूक सेवा की पर प्रचार से सर्वथा विमुख रहे। १९३० से १९४२ ई० के काल खण्ड में हुए सभी राष्ट्रीय आन्दोलनों में आप ने सक्रिय सहयोग दिया और फलस्वरूप आप को वर्षों तक बंगाल के बाहर फरार रहना पड़ा। १९३० ई० में हुए वृहद् मजदूर आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए आप को ६ मास तक प्रेसिडेन्सी जेल में कैद रहना पड़ा। बलिया जिला में १९४२ वाले आंदोलन का सक्रिय संचालन करने के कारण क्रुद्ध अंग्रेज सरकार की पुलिस ने आप के बलिया स्थित पैतृक निवास से लाखों रुपये का सामान लूट कर उसे जला भी दिया। बंगाल के प्रायः सभी शीर्षस्थ राजनेताओं—देशबन्धु चित्तरंजन दास, प्रफुल्ल चन्द्र घोष, जे. एम. सेनगुप्त, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, डॉ० विधान चन्द्र राय आदि से आप का निकट सम्पर्क था। जब भी आवश्यकता पड़ी, तब तन-मन-धन से आप राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में योग करते रहे।

विभिन्न सामाजिक तथा सार्वजनिक संस्थाओं से भी आप का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा पर कभी कोई पद ग्रहण नहीं किया। १९४३ ई० में दीर्घ रुग्णावस्था के पश्चात् आपका निधन हुआ। आप विशुद्ध राष्ट्रवादी जन-नायक थे। ●

स्व. रामानन्द सिंह

आप का जन्म १९०२ ई० को बलिया (उ० प्र०) में हुआ। कलकत्ता से ही मैट्रिक पास कर आप आलू पोस्ता में निजी व्यवसाय में संलग्न हो गए।

प्रकृति से आप सरल, विश्वासी तथा लोकप्रिय व्यक्ति थे। राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में आप ने खुल कर भाग लिया और साम्राज्यवादी अंग्रेज सत्ता के कोप भाजन बने। आप ने तन-मन-धन से बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी की सहायता की।

अपर इंडिया एसोसियेशन तथा बलिया मित्र मण्डल से भी आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध थे। आप की मृत्यु कलकत्ते ही में १९७४ ई० में हो गयी। आप निष्ठावान तथा दबंग कार्यकर्त्ता थे। ●

स्व. इन्दुमती गोयनका

आप सुप्रसिद्ध राजनेता तथा समाजसेवी पद्मराज जैन की पुत्री थीं। आप महात्मा गांधी की अनन्य अनुयायी थीं। असहयोग आंदोलन में आप ने सक्रिय रूप से भाग लिया।



विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन के समय विदेशी माल की दूकानों के समक्ष धरना देनेवाली महिलाओं में आप प्रमुख थीं। इस आन्दोलन का उद्देश्य देशवासियों के स्वाभिमान को जाग्रत करना था, ताकि वे स्वदेशी वस्तुओं को ही उपयोग में लायें।

महिला समाज में जागृति की लहर फैलाने तथा पर्दा प्रथा को हटाने के लिए हुए आन्दोलनों में आप ने अग्रणी भूमिका निबाही। ●

सरस्वती देवी कपूर

आप का जन्म २९ मई १९०९ ई० को धीर की गाँव (पंजाब) में हुआ। आप का विवाह कर्मठ समाजसेवी बांके लाल कपूर के

साथ हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय से इण्टर करने के बाद आप ने साहित्य रत्न, काव्यतीर्थ तथा साहित्याचार्य की उपाधियां भी प्राप्त कीं।



स्वतन्त्रता संघर्ष में आप का योगदान प्रारम्भ हुआ १६२१ ई० में वासन्ती देवी दास तथा कमला देवी चट्टोपाध्याय के साथ 'तिलक स्वराज्य फण्ड' के लिए 'चन्दा एकत्र करो' अभियान में सक्रिय भूमिका द्वारा। १६२६ ई० में देहरादून कांग्रेस तथा १६३० ई० में नमक सत्याग्रह में सक्रिय भाग ले तथा धरना दे कर आप ने कारावास के दण्ड का वरण किया।

१६३४ ई० में बिहार के भयावह भूकम्प के पीड़ितों की आपने सेवा की। वहीं आपने 'अशोक आश्रम' की स्थापना की जिसमें पीड़ित महिलाएँ सूत कात कर जीवन निर्वाह करती थीं। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के 'महिला विभाग' की आप अनेक वर्षों तक संचालिका रहीं।

कन्या गुरुकुल (हाथरस) तथा मारवाड़ी बालिका विद्यालय में आपने अध्यापन किया। विशाल भारत, चांद, संसार, विश्वमित्र आदि पत्र-पत्रिकाओं में आप की कहानियाँ तथा लेख प्रकाशित होते रहे।

आप विदुषी तथा कर्त्तव्यनिष्ठ कार्यकर्त्री हैं। ●

किशोरी लाल मेहरा

आप का जन्म १६०६ ई० में अमृतसर में हुआ। कलकत्ता ही आप का कार्यस्थल रहा।

१६२० ई० में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन से ही आप उसकी तरफ आकृष्ट हुए। १६२८ ई० में साइमन कमीशन के विरोध में राजाकटरा क्षेत्र में आप ने काले झण्डे के साथ प्रदर्शन किया। आप ने



१६३० ई० में अमृतसर में नमक सत्याग्रह में भाग लिया तथा १६४२ ई० में भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान वाराणसी से हस्तलिखित 'रणभेरी' पत्रिका निकाली। १६४६ ई० में शासनारूढ़ मुस्लिम लीग मन्त्रिमण्डल की 'डाइरेक्ट एक्शन' नीति के तहत हुए साम्प्रदायिक दंगे के दौरान शान्ति स्थापनार्थ आप ने बहुत काम किया और पैरवी कर ३२ निरपराध गिरफ्तार व्यक्तियों को भी मुक्त कराया। १६४७ ई० से आप कांग्रेस दल के वार्ड तथा ब्लाक समितियों के अध्यक्ष रहे। कई वर्ष तक आप जे० पी० भी रहे। १६६३ से ६६ ई० तक 'कांग्रेस मंडल' नामक बुलेटिन आप प्रकाशित करते रहे।

सार्वजनिक सेवा कार्य में आप की रुचि है। पंजाब सेवा समिति, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, मारवाड़ी सभा, बड़ाबाजार लाइब्रेरी, भारतीय पुस्तकालय, अपर इण्डिया एसोसियेशन, टाउन प्लानिंग एप्वायंटमेंट

कमेटी आदि से आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध रहे। १६५५ ई० में आप ने 'सर्वोदय सूत्र यज्ञ' नाम से एक संस्था कायम की, जिसमें सार्वजनिक रूप से सूत कताई होती थी।

आप का हिन्दी, अंग्रेजी, गुरुमुखी, गुजराती तथा बंगला भाषा पर अच्छा अधिकार है। कई छोटी-छोटी पुस्तकें आप ने लिखी हैं, यथा — भारतीय स्वतन्त्रता का संक्षिप्त इतिहास, देश ही सब कुछ है, बनिया के तराजू, युगावतार महात्मा गांधी, आजाद गोआ-दमन-दीव, आदि।

आप विवेकपूर्ण तथा कर्मनिष्ठ कार्यकर्त्ता हैं। ●

सिद्धराज ढड्ढा

आप का प्रारम्भिक कार्यक्षेत्र कलकत्ता महानगर ही रहा। आप बड़े प्रतिभाशाली तथा कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। कलकत्ता चेम्बर आफ कामर्स की स्थापना के बाद आप उसके प्रथम मन्त्री बने।

कालान्तर में आप जयपुर चले गए तथा वहाँ दैनिक लोकवाणी (हिन्दी) के संचालक-सम्पादक रहे। १६४२ ई० में महात्मा गांधी के 'करो या मरो' आह्वान पर देशव्यापी आन्दोलन में आप भी गिरफ्तार हुए तथा जेल भेज दिए गए। १६५० ई० में आप जयपुर प्रजा मण्डल के प्रधान मन्त्री रहे। राजस्थान राज्य मन्त्रि मण्डल में आप उद्योग मन्त्री भी बने।

तत्पश्चात् आप सर्वोदय में शामिल हो गए तथा लोकनायक जयप्रकाश नारायण के निकट सम्पर्क में आए। जब सर्वोदयी युवा कार्यकर्त्ताओं के नेतृत्व में भ्रष्ट शासन-तन्त्र के खिलाफ गुजरात तथा बिहार प्रान्तों में प्रबल जन-आन्दोलन प्रारम्भ हुए, तब आन्दोलन के व्यावहारिक पक्ष को लेकर आचार्य विनोबा भावे तथा जयप्रकाश नारायण में गम्भीर मतभेद हो गया। आप ने आन्दोलन के पक्ष में जयप्रकाश नारायण का साथ दिया और इसके व्यावहारिक पक्ष की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट किया। इस हेतु आपने 'सर्वोदय विचार मंच' चलाया जिसके सदस्य समाचार-पत्रों के माध्यम से जनता को सर्वोदय के लोक मंगलकारी स्वरूप से अवगत कराते रहते हैं।

सम्प्रति आप सर्वोदय के सिद्धान्तवादियों में प्रमुख हैं। आप सामाजिक कार्यों को सर्वोदय का ही एक अंग मानते हैं। आप का यह दृढ़ विश्वास है कि जब तक समाज के प्रत्येक व्यक्ति का सम्यक रूप से विकास (उदय) नहीं होगा, तब तक सुव्यवस्थित समाज (लोकतंत्र) कायम नहीं हो सकता।

वैचारिक तथा व्यावहारिक दोनों ही धरातलों पर शोषण तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपने सतत् संघर्ष से आप युवा वर्ग की आकांक्षाओं के प्रतीक बन गए हैं। ●

राम प्रसाद गुप्त

आप क्रांतिकारी स्वाधीनता सेनानी हैं। आप के गुप्त दल के अन्य प्रमुख सदस्य थे — मुकुन्दीलाल गुप्त, पन्नालाल दासगुप्त, भागलपुर के सहजानन्द कुंवर, श्यामा प्रसाद



सिन्हा तथा पुरुलिया के देवेन महतो (जो कालान्तर में पश्चिम बंग विधान सभा के विधायक भी रहे)। इस दल की गतिविधियाँ बड़ी व्यापक थीं। विवेकानन्द रोड के मार्बल

हाउस, ३ नं० मल्लिक स्ट्रीट (बड़ाबाजार थाने के सामने) व हाजरा पार्क के उत्तरी भाग स्थित एक मकान के २ तल्ले पर सभी सदस्य गुप्त रीति से मिलते थे। १९४२ ई० के आन्दोलन के दौरान इसी ३ नं० मल्लिक स्ट्रीट में ही अरुणा आसफ अली तथा अच्युत पटवर्धन भी आ कर गुप्त रीति से कई दिन रहे और विचार-विमर्श कर चले गए। जब अंग्रेज शासन के गुप्तचर विभाग को आपके संगठन की गतिविधियों का पता चला, तब आप लोगों ने कलकत्ते से बाहर अपना कार्यक्षेत्र बनाया।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में जब आजाद हिन्द फौज बर्मा तक आ पहुँची, तब आप अपने मित्र द्वय (सहजानन्द कुंवर तथा श्यामा प्रसाद सिन्हा) के साथ रेलवे फोरमैन के छद्मवेश में असम पहुँच गए। लेकिन गुप्तचर विभाग की अत्यधिक सक्रियता के कारण लीडो से ही आप लोगों को लौटना पड़ा और नेताजी से नहीं मिल सके।

पूर्णिया (बिहार) जेल से अपने कई क्रान्तिकारी बन्दी साथियों को अंग्रेजों की जेल से मुक्त कराने के प्रयास में हुई गोली-बारी के दौरान आप को सीने में गोली लगी। गुप्त रूप से आप के मित्र सर्जन ने गोली निकाली और मोहनपुर में आपकी चिकित्सा हुई।

आज जब स्वातन्त्र्योत्तर भारत का चतुर्दिक नैतिक पतन देखते हैं, तो अवसाद से आप का मन खिन्न हो जाता है कि क्या इसी आजादी के लिए प्राणों की बाजी लगाई थी? ●

स्व. बृजलाल लोहिया

१९२१ ई० में महात्मा गांधी के आह्वान पर जब सम्पूर्ण देश में असहयोग आन्दोलन प्रचण्ड रूप से छिड़ा, तब अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ बड़ाबाजार में भी जोर-शोर से जुलूस निकले। जब आप ऐसे ही एक जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे, तब अंग्रेज सिपाहियों ने बर्बरता से लाठी-चार्ज किया। आप के सिर पर इतने डण्डे बरसे कि आप वहीं बेहोश हो गए। राधाकृष्ण नेवटिया अपने कतिपय मित्रों सहित आप को उठा कर अपने निवास स्थान पर ले गए। चिकित्सा से घाव तो भर गया पर मस्तिष्क विकृत हो गया। फलतः आप की नौकरी तो छूट ही गयी, साथ ही आप जीविकोपार्जन हेतु योग्य भी न रहे। विक्षिप्त अवस्था में भी आजन्म आप सड़कों पर अंग्रेजी शासन के विरुद्ध नारेबाजी तथा भाषण करते रहे।

आप समर्पित व निर्भय देशभक्त थे। ●

स्व. मदन धर

आप का जन्म १४ अप्रैल १९१६ ई० में मैमनसिंह (पूर्व बंगाल) में हुआ। ज्ञानरंजन नियोगी के 'लैंटर्न मैजिक' द्वारा क्रांति का आह्वान सुन कर आप में तरुणावस्था में ही



आजादी की ललक जाग उठी। १३ वर्ष की उम्र में ही नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की ललकार पर आपने जैसोर जिले के 'बन्देलिया कर आन्दोलन' में भाग लिया तथा ६ माह तक कैद रहे। २६ जनवरी १९३० ई० को अंग्रेजी सरकार की सम्पूर्ण सतर्कता के बावजूद आपने जैसोर जैल में राष्ट्रीय झण्डा फहराया और परिणामस्वरूप कठोर यातनाएँ भी

सहीं। इन्हीं दिनों बंगाल के क्रान्तिकारी संगठनों 'युगान्तर पार्टी' तथा 'अनुशीलन समिति' के सम्पर्क में आप आए तथा उनके गुप्त प्रचार-पत्र भी आपने वितरित किए।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे अहिंसक आन्दोलन में भी आपने सक्रिय रूप से भाग लिया, यथा – विदेशी वस्त्र बहिष्कार, साइमन कमीशन विरोध, नमक सत्याग्रह आदि। विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन में गिरफ्तार हो आप ने ६ माह तक सश्रम कारावास सहा। नेताजी के इस सिद्धान्त में आप की अविचल निष्ठा थी कि जैसे भी मिले, हमें आजादी लेनी है। १९३९ ई० में नेताजी द्वारा स्थापित 'फारवार्ड ब्लाक' में आपने योगदान किया और आजन्म इसके सक्रिय सदस्य रहे। १९४० ई० में आप भारतीय युवा लीग के सहायक मन्त्री निर्वाचित हुए और प्रेसिडेन्सी जेल में रहते हुए भी इसके आन्दोलनों को संचालित किया।

अगस्त १९४२ की क्रान्ति के दौरान बर्लिन से 'आजाद हिन्द रेडियो' द्वारा प्रसारित नेताजी के भाषणों को छपवा कर आपने सर्वत्र बाँटा। १९४२ ई० में पुन गिरफ्तार हुए तथा ३ वर्ष तक कैद रहे। प्रेस श्रमिकों के मुखपत्र 'डाक वार्ता' तथा विप्लवी परिषद के मुखपत्र 'विप्लव' के सम्पादन में आपने भी सहयोग किया। अपनी स्वल्प आय के बावजूद आप निर्धन मेधावी विद्यार्थियों की सहायता करते थे।

आप का निधन १३ अगस्त १९७७ ई० को हुआ। आप की स्मृति में महाजाति सदन में लगा तैल चित्र अविचल देशभक्ति तथा निस्पृह समाज सेवा के क्षेत्र में हमारा पाथेय है। •

स्व. चिमन लाल गुजराती

आप दबंग एवं संगठन-कुशल स्वाधीनता सेनानी थे। देश की आजादी के लिए महात्मा गांधी के नेतृत्व में हुए आन्दोलन में आपने न केवल स्वयं भाग लिया वरन् गुजरातियों के घर-घर में जा कर लोगों को महात्मा गांधी के आह्वान के प्रति विश्वस्त किया। गिरफ्तार होने पर जब आप जेल गए, तब वहाँ भी साथी राजनैतिक बन्दियों को यदि किसी वस्तु या सुविधा का अभाव होता तो उनकी माँग को पूरा कराने के लिए जेल अधिकारियों के सामने आप डट जाते और बात मनवा कर ही रहते। •

नागर मल शर्मा

आप का जन्म श्रावण शुक्ला १ सम्वत् १९७९ को शाहजहांपुर (गुड़गांव) में हुआ। आप जगन्नाथ शर्मा के पुत्र हैं। आप ने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की। हिन्दी, अंग्रेजी तथा बंगला भाषाओं पर आप का समान अधिकार है। आप स्वतन्त्र विचारक हैं। आपकी रचनाएँ प्रायः साप्ताहिक समाजसेवक तथा विश्वमित्र में छपती रहीं।

आप निर्भीक तथा स्पष्टवादी राष्ट्रसेवी हैं। १९३७ ई० के बंगाल में हक मंत्रिमंडल द्वारा छात्रों का दमन करने के विरोध में जब आन्दोलन हुआ, तब अन्य २१ विद्यार्थियों के साथ आप भी पकड़े गए और ६ महीने कैद रहे। १९४२ ई० के आन्दोलन में फरार रह कर आप ने स्वाधीनता प्राप्ति हेतु संघर्ष में योग दिया। इसी दौरान आप समाजवादी कार्य-कर्त्ताओं के निकट सम्पर्क में आए। पकड़े जाने पर आपको $1\frac{1}{2}$ वर्ष का कारावास सहना पड़ा। १३ जनवरी १९४५ ई० को मनाए गए जलियांवाला बाग दिवस पर ओजस्वी भाषण देने पर आप पुनः गिरफ्तार हुए।

१९५० ई० में बड़ाबाजार क्षेत्र में समाजवादी दल की प्रतिष्ठा में आप की महत्वपूर्ण भूमिका रही। •

स्व. स्वामी ज्ञान योगानंद पुरी

आप का जन्म १८६८ ई० कानपुर (उत्तरप्रदेश) में हुआ था। आप का असली नाम बाबूलाल सिंह था। आप ने १६१० ई० में मिडिल पास किया। कालक्रम में स्वनाम-धन्य गणेशशंकर विद्यार्थी के सानिध्य में आप आये। उनसे प्रेरणा प्राप्त कर आप साहसी तथा कर्त्तव्यपरायण देशभक्त बन गए।



प्रथम महायुद्ध चल रहा था। जर्मनी के विरुद्ध ब्रिटेन अपने उपनिवेश भारत से नौजवानों को सेना में भरती कर मोर्चे पर भेज रहा था। गणेश शंकर विद्यार्थी के साथ मिल कर आप ने एक दल का गठन किया, जो सेना में भरती होने के विरुद्ध प्रचार करने लगा। फलतः आप लोग ब्रिटिश शासकों के कोपभाजन बने और दो वर्ष तक दोनों को कानपुर एवं नैनी की 'सुधार जेल' में रखा गया।

१६१७ ई० में रिहा होने पर आप कलकत्ता आ कर आर्य-धर्म के कट्टर समर्थक राधामोहन गोकुल के आश्रम में रहने लगे। १६२० ई० के असहयोग आन्दोलन के दौरान एक दिन एक गोरा सार्जेण्ट महिलाओं पर डण्डे बरसा रहा था। असह्य होने पर आप उससे भिड़ गये तथा गिरफ्तार हो कर जेल चले गये। जेल में राष्ट्र कवि पण्डित माधव शुक्ल ने आप का स्वागत किया। १६२३ ई० में आप रिहा हुए। साइमन कमीशन का बहिष्कार किया जा रहा था। साइमन की कार राजभवन से जैसे ही बाहर आयी, आप को उस पर काला झण्डा फेंकते हुए गिरफ्तार किया गया और ६ महीने की सजा मिली। जेल में रह कर जेल की दुर्व्यवस्था के विरुद्ध आप ने २४ दिनों का अनशन किया। वहाँ आप के साथी भोलानाथ बर्मन थे। जेल के निरंकुश अधि-कारियों ने आप दोनों को एक ही हथकड़ी में बांध कर बरहमपुर (मुर्शिदाबाद) जेल भेज दिया। वहाँ पर आप ने युवकों को शक्ति की पूजा के लिए ललकारा। रिहा होने पर सियालदह स्टेशन पर आप का भव्य स्वागत किया गया। जलवायु परिवर्त्तन के लिए आप फाजिल्का चले गये। वहाँ पर स्वामी स्वरूपानन्द से भेंट हुई और उनसे आप ने संन्यास की दीक्षा ली।

१६४० ई० में रामगढ़ कांग्रेस में आप ने 'अखण्ड ज्योति' उठायी थी। कलकत्ता से रामगढ़ आप एक पखवारे में पैदल पहुँचे। १६४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के दौरान गुप्तचर विभाग ने आप पर आयकर कार्यालय में आगजनी का आरोप लगाया, जो प्रमाणित नहीं हुआ।

१६२३ ई० में रिहा होने पर आप बड़ाबाजार के १२६ तुल्लापट्टी में रहने लगे। १६२४ ई० में तारकेश्वर सत्याग्रह चला, जिसमें आप शामिल हुए। वहीं पर स्वामी विश्वानन्द से आप का सम्पर्क हुआ। सत्याग्रहियों के साथ आप भी जेल गए।

आप ने साम्प्रदायिक दंगों के दौरान हिन्दुओं की रक्षा की। १६२६ ई० में आप ने साम्प्रदायिक दंगों के दौरान घिरे हुए हिन्दुओं को निकाला तथा आततायियों के हाथों से महिलाओं की रक्षा की। उस समय आप का पौरुष देख कर लोग दंग रह गये थे। इसी सिलसिले में आप को एक साल के लिए

बंगाल से बहिष्कृत किया गया। पुनः १९४६ ई० में जब बंगाल पर सुहरावर्दी का शासन था और उसने हिन्दुओं को गाजर-मूली की तरह कटवाना शुरू कर दिया था, तब ऐसे समय में आप ने पीड़ित हिन्दुओं की सहायता की और उनका उद्धार किया। नोआखाली के दंगे से पीड़ित हिन्दुओं की रक्षा के लिए महात्मा गांधी के साथ आप भी गये। इसके पूर्व बर्मा से आये शरणार्थियों की आप ने सराहनीय सेवा की थी।

बंगाल से बहिष्कृत होने पर आप बिहार के वैद्यनाथधाम पहुँच गये। वहाँ पर आप ने श्रद्धानन्द व्यायामशाला बनवायी एवं श्रद्धानंद हरिजन पाठशाला की स्थापना की। वहाँ भी आप को दिवाली के पटाखे के मामले में फंसाने की असफल चेष्टा की गयी थी। वहाँ से आप कलकत्ता वापस आ गये। कुछ ही समय बाद महामना मदनमोहन मालवीय कलकत्ता आये। वे हरिजनों को रुद्राक्ष की माला एवं गायत्री मन्त्र देते थे, जिसका कट्टरपंथी नेताओं ने विरोध किया। पर आप के अथक प्रयास से यह असंगत विरोध समाप्त हो गया।

फाजिल्का से १९३२ ई० में जब आप कलकत्ता आए, तब विधायक कृष्ण कुमार की अध्यक्षता में १२६ तुल्लापट्टी स्थित 'बाबूलाल सिंह व्यायामशाला' का नाम बदल कर 'ज्ञान योगानन्द पुरी मठ' कर दिया गया। आप यहीं पर रहते थे। आप ने १९४५ ई० में 'अखिल भारतीय गोवंश वध निषेध संघ' की स्थापना की, जिसका व्यापक प्रभाव पड़ा और दुधारू गायों की हत्या रोक दी गयी। १९४६ ई० में आप ने अपने मठ में 'अखण्ड चर्खा यज्ञ' सम्पन्न करवाया।

स्वाधीनता संग्राम में शौर्यपूर्ण योगदान तथा सामाजिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए आप चिर-स्मरणीय रहेंगे। ●

स्व. तारा देवी खन्ना

आप स्वाधीनता सेनानी कालीचरण खन्ना की धर्मपत्नी थीं। कांग्रेस के तत्वावधान में आप ने भी राष्ट्रीय आन्दोलनों में पति के साथ ही भाग लिया। असहयोग आन्दोलन के दौरान विदेशी वस्त्रों की दूकानों के सामने धरना देते समय आप को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। ●

कन्हैयालाल चितलांगिया

आप वयोवृद्ध स्वाधीनता सेनानी तथा कर्मठ समाजसेवी हैं। इस समय आप की आयु प्रायः ९०-९१ वर्ष की है। आप सरल, उदारमना तथा सुशिक्षित हैं। आपके पूर्वजों की भूमि फतेहपुर (राजस्थान) है पर आप का कार्यस्थल कलकत्ता ही रहा।



१९१६ ई० में जब अंग्रेजों का स्वच्छन्द शासन चल रहा था, साथ ही स्वाधीनता प्राप्ति हेतु आन्दोलन के बीज भी अंकुरित हो चुके थे, तब मारवाड़ी समाज में इन-गिने व्यक्ति ही राजनीति से कोई सरोकार रखते थे। आजादी की लड़ाई में सक्रिय भाग लेने के कारण आपको ब्रिटिश सरकार ने

'भारत रक्षा कानून' के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया तथा जेल में कठोर यन्त्रणाएँ दीं।

यद्यपि आपने देश तथा समाज की बहुत सेवा की है, पर प्रचार से आप सदैव दूर रहे। आप प्रबुद्ध विचारक तथा निर्भय देशव्रती हैं। ●

स्व. तारा देवी शर्मा

आप बड़ी निर्भीक तथा स्वदेश प्रेमी महिला थीं। महात्मा गांधी के नेतृत्व में १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन में आप ने भाग लिया था तथा उसी समय देश-सेवा का संकल्प किया। स्वदेशी आन्दोलन के दौरान विदेशी वस्त्र की दूकानों के सामने धरना देते समय आप गिरफ्तार हो कर जेल भी गईं। ●

स्व. फतेह चन्द नाहटा

आप का जन्म सिरसा गांव (जिला हिसार) में हुआ था। आप के पिता कालूराम नाहटा थे।

पद्मराज जैन के व्यक्तिगत प्रभाव से आप राजनीति में भाग लेने लगे। बड़ाबाजार जिला कांग्रेस के सेवा मन्त्री के रूप में नागपुर सत्याग्रह में आप ने भाग लिया। १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन में भाग ले कर आप गिरफ्तार हुए। रिहा होने पर पुरुलिया चले गये और वहाँ भी आन्दोलन में भाग लेने के कारण आप को तीन महीने की सजा हुई। १९३० ई० में पुनः एक वर्ष के लिए जेल गये। चौथी बार हिसार में भी आप पर मुकदमा चला तथा कारावास की सजा हुई। १९३६ ई० में आप कुष्टिया कांग्रेस कमेटी के सदस्य बने।

कई बार जेल-यात्रा करने के फलस्वरूप आप का स्वास्थ्य गिर गया था, फिर भी आप ने हरिजन सेवा का कार्य आरम्भ किया। मेहतरों के मुहल्ले में जा कर आप उनके बच्चों को पढ़ाया करते थे। कुष्टिया की अनेक सामाजिक संस्थाओं से आप सम्बद्ध थे। आप वहाँ के मारवाड़ी नवयुवक पुस्तकालय तथा मारवाड़ी सम्मेलन के सभापति तथा कुष्टिया सेवा संगठन के मन्त्री रहे। आप समाज सुधार हेतु रूढ़ियों को दूर करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। अपने भाई की शादी एक विधवा से आप ने करवायी। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की ओर से नोआखाली में हुए राहत कार्य के आप संचालक रहे।

आप बड़े साहसी राष्ट्रभक्त तथा दृढ़ निश्चयी समाजसेवी थे। ●

स्व. डॉ. किशोरी लाल शर्मा

आप का जन्म १८९८ ई० में हुआ था। बड़ाबाजार में आप प्रथम मारवाड़ी थे, जिन्होंने एल० एम० एफ० की डिग्री प्राप्त की। प्रायः १९२३ ई० में बड़ाबाजार थाने के पास आरमेनियन स्ट्रीट में आप ने अपना चेम्बर खोला।



आप विचारों से क्रान्तिकारी एवं प्रकृति से स्पष्टवादी थे। जब गांधीजी का असहयोग आंदोलन प्रारम्भ हुआ, तब आप भी उसमें शामिल हो गये। बड़ाबाजार जिला कांग्रेस के माध्यम से आप ने देश-सेवा का व्रत लिया। आप अनेक वर्ष तक बड़ाबाजार जिला कांग्रेस के उपसभापति रहे। कांग्रेस

कार्यकर्त्ताओं का संध्या समय आप के चेम्बर में जमघट लगा रहता था। देशव्रती कांग्रेसी स्वयंसेवकों तथा गरीब जनता का आप निःशुल्क उपचार करते थे।

मारवाड़ी समाज में सुधार के लिए आप कटिबद्ध थे। आप ने स्वयं एक विधवा से विवाह किया एवं रूढ़िवादियों के कोप-भाजन बन जाति से बहिष्कृत हुए।

आप का निधन ८३ वर्ष की आयु में ३ मार्च १९८१ ई० को कलकत्ता में ही हुआ। निष्काम देशभक्त तथा सेवाभावी चिकित्सक के रूप में आप की स्मृति चिर-स्थायी रहेगी। ●

स्व. सरदार सिंह महनोत

आप सौभाग चन्द महनोत के पुत्र थे। आप ने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की थी। आप का सार्वजनिक जीवन शिवपुरी (मध्य प्रदेश) विद्यालय के सुपरिण्टेण्डेण्ट के पद पर नियुक्ति से शुरू हुआ। कुछ ही दिनों बाद आप कलकत्ता आ गये और विभिन्न प्रतिष्ठित व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के दायित्व-पूर्ण पदों पर रहे।

१९३१ ई० के नमक सत्याग्रह के दिनों में मजदूर आन्दोलनों में सक्रिय भाग ले कर आप ने पुलिस के डण्डे खाये तथा गिरफ्तार हुए। पुनः १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में भाग लेने से ४ वर्षों के लिए आप नजरबन्द कर दिये गये। आप की धर्मपत्नी सज्जन देवी महनोत ने भी कन्धे से कन्धा मिला कर राष्ट्रीय आन्दोलनों में आप का साथ दिया। ●

मेघराज सेवक

आप का जन्म १९०३ ई० में हुआ। आप के पिता अर्जुनदास सेवक थे। आप का अध्ययन एवं व्यवसाय का क्षेत्र कलकत्ता महानगर ही रहा। अर्थोपाजन हेतु शेयर बाजार में आपने शेयरों की दलाली की।



आप के राजनैतिक जीवन का प्रारम्भ १९३० ई० से हुआ जब खादी भण्डार से स्वाधीनता संग्राम के दौरान एक जुलूस निकला। सीताराम सेकसरिया तथा बसन्त लाल मुरारका की प्रेरणा से आप उसमें शामिल हुए। तीसरे ही दिन सूतापट्टी में महिलाओं द्वारा पिकेटिंग कराने के कार्यक्रम का संचालन करते समय आप गिरफ्तार हो गए। तीन माह की सजा मिली और इस दौरान रुग्णावस्था में आप का स्वास्थ्य काफी खराब हो गया।

मुक्त होने पर आप पुनः स्वाधीनता प्राप्ति हेतु जनता को प्रेरित करने लगे। १९३२ ई० में जब राजा द्विजेन्द्र स्ट्रीट में जनसभा का आयोजन हुआ, तब आप पुनः गिरफ्तार कर लिए गए। २० दिन उपरांत मुक्त होने पर फिर बुलेटिनों द्वारा प्रचार कार्य में संलग्न हो गए और गिरफ्तार हो ७ दिन तक बंद रहे। १९४२ ई० के अगस्त माह में हुए भारत छोड़ो आन्दोलन में आप फरार हो गए तथा भागलपुर में प्रचार कार्य करने लगे। इस दौरान आप डॉ० राममनोहर लोहिया तथा अरुणा आसफअली के निकट सम्पर्क में आए। जब पुलिस को आप पर

सन्देह गया, तब आप कलकत्ता लौट आए। भागलपुर से वारंट कलकत्ता आया पर गुप्त सूचना मिल जाने से आप अपने मित्र राधाकृष्ण नेवटिया के घर में २ माह तक छिपे रहे।

समाज सुधार हेतु आन्दोलनों में आप सदैव सक्रिय रहे। पर्दा प्रथा तथा मृतक बिरादरी भोज आदि कुरीतियों के विरुद्ध सत्याग्रह में आप ने भाग लिया। १९३४ ई० में बिहार के भयावह भूकम्प के समय मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी द्वारा राहत सेवा कार्यों में आप स्वयंसेवक बन कर गए। ●

स्व. हीरालाल लोहिया

आप का जन्म राजस्थान में हुआ था। भारत उद्भट विचारक एवं प्रसिद्ध देशभक्त डॉ० राममनोहर लोहिया के आप पिता थे। यद्यपि आप साधारण रूप में पढ़े-लिखे थे तथा नौकरी कर जीविकोपार्जन करते थे, फिर भी पैसे-पैसे बचा कर आप ने योग्य पुत्र को न केवल उच्च शिक्षा दिलवाई वरन् तदर्थ जर्मनी भी भेजा।

आप में देशभक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। कलकत्ता में असहयोग आन्दोलन के दौरान धरना देने एवं जुलूस निकालने में आप सत्याग्रहियों की अग्रिम पंक्ति में रहते थे।

आप ने अपना एक दल बनाया तथा उसके साथ पैदल ही 'दिल्ली कूच' कर किया। रास्ते में स्थान-स्थान पर आप का दल अंग्रेजों के विरुद्ध भाषण देता एवं जनता को आजादी प्राप्ति हेतु जागरूक करता था।

जीवन के उत्तरार्द्ध में आप का स्वास्थ्य काफी गिर गया और कलकत्ता में ही आपका निधन हुआ। आप दृढ़-प्रतिज्ञ देशभक्त थे।●

स्व. सज्जन देवी महनोत

आप स्वाधीनता सेनानी महिलाओं में अग्रगण्य थीं। महात्मा गांधी के आह्वान पर असहयोग तथा स्वदेशी आन्दोलनों में आप ने सोत्साह भाग लिया। विदेशी वस्त्र की दूकानों पर आप ने धरना दिया, जुलूसों में भाग लिया तथा स्वयं कन्धे पर खादी रख उसे घर-घर जा कर बेचा। परिणामस्वरूप विदेशी शासन ने कुपित हो आप को कारावास से दण्डित किया। पर यह सजा आप के उत्साह को मन्द न कर सकी, वरन् परवर्त्ती आन्दोलनों में और अधिक उत्साह से भाग लेने के लिए गुरु-मन्त्र सिद्ध हुई। ●

स्व. जगदीशनारायण तिवारी

आप का जन्म हेवन्तपुर (बलिया) में हुआ था। आप हिन्दी के विद्वान तो थे ही, बंगला भाषा पर भी अधिकार रखते थे। आप ने सुभाषचन्द्र बोस को हिन्दी पढ़ायी और उनके साथ रहे भी। आप ने सुभाष चन्द्र बोस को हिन्दी में इतना पारंगत कर दिया था कि वे विराट जनसभाओं में भी धारा-प्रवाह हिन्दी में भाषण करने लगे। इसी प्रतिभा के बल पर वे बंगाल के साथ ही हिन्दी भाषी प्रान्तों में अत्यधिक लोकप्रिय हो गये। उनके साथ आप भी जेल गये।



स्वदेशी आन्दोलन के सन्दर्भ में जब धरना दिया जा रहा था, तब उसका विरोध करने के लिए बड़ाबाजार में विदेशी सामान के आयातकों एवं विक्रेताओं ने मिल कर एक 'ब्लू गैंग' का गठन किया, जिसमें अधिकांश मुस्लिम लड़के थे। धरना देनेवाली

महिलाओं का वे अपमान करते थे। तब उनका सामना करने के लिए आन्दोलन-कारियों ने भी एक दल तैयार किया। वह भी लड़कों की ही टीम थी, जिसने ब्लू बैंच को धीरे-धीरे समाप्त कर दिया। इस टीम में भरती लड़कों को भोजन कराने की विकट समस्या थी। उस समय केन्द्रीय जेल में आप कैद थे। वहाँ पर रोज दो-तीन बजे रात को कई राजनीतिक कार्यकर्त्ता जाते तथा जेल की दीवार बाहर से लांघ जाते। वहाँ पर पूड़ियाँ एवं गुड़ रखा रहता था, जिसे कैदी कार्यकर्त्ता आये हुए कार्यकर्त्ताओं को दे देते थे। इस काम को सम्पन्न कराने में आप की प्रमुख भूमिका रहती थी। माल बाहर करने का काम प्रेमानन्द ब्रह्मचारी करते थे। यहाँ तक कि वहाँ से कम्बल भी बाहर भिजवा दिये जाते थे।

आप शिक्षा प्रेमी थे। अपने गाँव के पास बैरिया में 'द्वाबा राष्ट्रीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय' की स्थापना में आप का विशेष हाथ रहा। आप का उस विद्यालय ने अभिनन्दन भी किया।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद आप सक्रिय राजनीति से अलग हो गये थे। आप का अपने गाँव में ही निधन हुआ। ●

स्व. डालिम चन्द सेठिया

आप का जन्म २२ नवम्बर १६१० ई० को हुआ। आप मूलचन्द सेठिया के पुत्र थे। १६३० ई० में आप ने बी. काम. परीक्षा उत्तीर्ण की। कालान्तर में आप कलकत्ते के एक प्रसिद्ध बैरिस्टर बने।

१६४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के दौरान जब लोकनायक जयप्रकाश नारायण, डॉ० राममनोहर लोहिया तथा अन्य शीर्ष क्रान्तिकारी नेता फरार हो गए, तब आप ने निर्भय हो उन्हें अपने निवास में शरण दी। फलतः साम्राज्यवादी शासन के कोपभाजन बन आप को ५४ दिन के कारावास का दण्ड सहना पड़ा।

सार्वजनिक सेवा कार्यों में भी आप की गहन अभिरुचि थी। मारवाड़ी छात्र संघ के आप सभापति रहे। ●

सत्यपाल धवले

आप का जन्म २३ जून १६११ ई० को पटना (बिहार) में हुआ। आप के पिता राय साहब देवीलाल धवले थे, जो डिप्टी कलेक्टर भी रहे। छात्रावस्था में ही आप 'अनुशीलन समिति' के सक्रिय सदस्य बन कर देश की आजादी के लिए काम करने लगे। बस इसी अपराध में आप को विद्यालय से निष्कासित कर दिया गया। तब आप ने यह प्रण लिया कि स्वतन्त्रता प्राप्त होने के उपरान्त ही घर लौटूंगा।



फरवरी १६३० ई० में आप कलकत्ता आ गए। कुछ काल बाद यहाँ भी कालेज में अध्ययन अपूर्ण ही छोड़ कर आप महात्मा गांधी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग ले दो वर्षों के लिए कैद रहे। १६३२ ई० में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के निर्देश पर जलपाईगुड़ी क्षेत्र के चाय बगान मजदूरों को संगठित करने के लिए आप को भेजा गया। वहाँ पर पुनः आप को गिरफ्तार कर लिया गया तथा ८ माह की कैद मिली। १६४२ ई० में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में भाग लेकर

फिर कारादण्ड का वरण किया। बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी के आप अध्यक्ष भी रहे।

१९३३ ई० में आप ने 'नवजीवन पुस्तकालय' की स्थापना की। १९३४ ई० में आपने 'नवजीवन संघ' की स्थापना की जिसका उद्घाटन पं० जवाहर लाल नेहरू ने किया। १९३७ ई० में प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय पुनः निर्माण समिति के तत्वावधान में आपने 'नालन्दा विद्यापीठ' की स्थापना की जहाँ एम. ए. तक शिक्षा दी जाती है।

वर्त्तमान में आप ट्रांसपोर्ट उद्योग में संलग्न हैं, साथ ही अनेक सार्वजनिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं से सक्रिय रूप में सम्बद्ध हैं।

आप दृढ़ प्रतिज्ञ राष्ट्रभक्त तथा प्राचीन संस्कृति के संरक्षक हैं। •

स्व. सरदार शिवनाथ सिंह

आप अध्यापक थे। १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन के दौरान जब आन्दोलनकारी सभाओं का आयोजन कर डण्डे खाते और जेल जाते थे, तब आप स्कूली बच्चों को गांधीजी के आन्दोलन का उद्देश्य



समझाते थे। आप ने 'वानर सेना' का गठन कर उसमें छात्रों को ही रखा था। आप राष्ट्रीय झण्डे के साथ सैकड़ों छात्रों को ले कर गली-गली घूमते थे। आप नारे लगवाते थे तथा छात्र उत्साह से उन्हें दोहराते थे। एक नारा था – 'एक-दो, लाल पगड़ी फेंक दो।' छात्रों में देश-भक्ति जगाने में आप सफल हुए, जिससे आन्दोलन को तीव्रता मिली। अन्त में आप को कारावास के दण्ड का वरण भी करना पड़ा।

छात्रों में देशभक्ति का संचार करने के लिए आप स्मरणीय रहेंगे। •

स्व. हीरालाल शाह

आप बड़े ही उत्साही व्यक्ति थे। महात्मा गांधी के आह्वान पर अपनी पढ़ाई-लिखाई छोड़ कर आप १९२१ ई० के असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। देश-सेवा संबंधी सभी कार्यों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेने लगे।



आप कुशल संगठनकर्त्ता भी थे। अनेक साथी छात्रों को प्रेरित कर आपने आंदोलन को तीव्रता प्रदान की। विदेशी वस्त्रों की दूकानों पर धरना देते समय गिरफ्तार हो आपने कारावास के दंड का वरण किया। •

स्व. छब्बीस

यह नाम सुन कर किसी को भी आश्चर्य होगा, पर यह सत्य है कि इस मूक देशभक्त का परिचय केवल यही उपनाम था। आप ने अपना असली नाम कभी किसी को नहीं बतलाया क्योंकि काम करनेवाले अपने नाम की कोई चिंता नहीं करते। स्वाधीनता संघर्ष में कांग्रेस के हर आंदोलन में झण्डा ले कर

आप सदा अग्रिम पंक्ति में रहते थे। आप देशप्रेम के नारे लगाते व सत्याग्रह के दौरान धरना भी देते थे। पुलिस ने जब आप को गिरफ्तार कर मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किया, तब आपने साम्राज्यवादी विदेशी अदालत को अमान्य करते हुए अपना नाम तक बतलाने से इंकार कर दिया। फलतः कुपित मैजिस्ट्रेट ने आपको ६ माह की सजा सुना दी।

जेल में भी जब जेलर ने बहुत जोर दे कर नाम पूछा, तब आपने अपना नाम 'छब्बीस' बतलाया। जेल से रिहा होने पर आप पुनः देश-सेवा में जुट गए, पर अंत तक आपका असली नाम एक रहस्य ही रह गया।

आप निष्काम राष्ट्रसेवी तथा साहसी कार्यकर्त्ता थे। •

स्व. मिठाईलाल गुप्त

१२६ तुल्लापट्टी में स्थित सुप्रसिद्ध 'ज्ञान योगानंद पुरी मठ' में आप बड़ी सादगी से रहते थे। असहयोग आंदोलन के दौरान स्कूलों में जा-जा कर आपने बच्चों को एकत्र कर



'वानर सेना' का गठन किया। संध्या काल में उन्हें ले कर गली-गली में फेरी लगवा कर आप जन-जागरण करते थे। फलतः साम्राज्यवादी अंग्रेज शासन के कोपभाजन बन कर आप ने कारावास की सजा भोगी। पर रिहा होने पर पुनः आप स्वतंत्रता-संघर्ष में भाग लेते रहे। •

स्व. अर्जुन सिंह

आप मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) के मूल निवासी थे। कलकत्ता में आप का साड़ी का कारबार था। आप स्वयं तो एक अच्छे पहलवान थे ही, साथ ही बड़ाबाजार क्षेत्र में स्थित अपने अखाड़े में सैकड़ों युवकों को आकृष्ट कर आपने उन्हें बलिष्ठ बनाया। आप उन्हें व्यायाम करवाते, अखाड़े के नियम सिखलाते तथा कुश्ती लड़वाते थे।

स्वाधीनता संघर्ष में सक्रिय भाग ले कर आप ६ माह दमदम सेन्ट्रल जेल में बंद रहे। जब साइमन कमीशन कलकत्ता आया, तब आपने कुली के छद्म वेश में काला झंडा दिखला कर उसके बहिष्कार आंदोलन में भाग लिया। उसी समय अत्याचारी पुलिस के डण्डे की मार से आप का बायां हाथ जख्मी हो गया।

आप कुशल संगठनकर्त्ता तथा निर्भीक देशभक्त थे। •

स्व. सरस्वती देवी

आप स्वाधीनता सेनानी चमेली देवी की पुत्री थीं। महात्मा गांधी के नेतृत्व में १९२१ ई० के असहयोग तथा विदेशी वस्त्र बहिष्कार आंदोलनों एवं १९३० ई० के नमक सत्याग्रह में अपनी माता के साथ आपने धरना दिया और विभिन्न राजनैतिक - सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लिया। धरना देते समय गिरफ्तार हो कर आपने कारावास के दंड का वरण किया। •

स्व. माधो सिंह जैन

आप एक मूक देश - सेवक तथा कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। आप पूरी लगन से ठोस काम करते थे, पर आत्म - प्रचार से सर्वथा विमुख थे। १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आंदोलन के दौरान 'करो या मरो' पत्र को घर-घर तक पहुँचाने का जोखिम-भरा कार्य पूरा



करने का आप ने बीड़ा उठाया और एक दिन इस सिलसिले में पुलिस द्वारा पकड़ लिए गए। जेल से रिहा होने पर आप स्वदेशी वस्त्रों के प्रचार में लग गए। ●

स्व. मीठी बहन

आप बहुत निर्भीक एवं परिश्रमी महिला थीं। महात्मा गांधी की अनन्य अनुयायी थीं। उनके द्वारा चलाये गये प्रत्येक आन्दोलन में आप ने सक्रिय भाग लिया। १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन के दौरान विदेशी वस्त्रों की दूकानों के सामने आन्दोलनकारियों के साथ आप धरना देती थीं। जब कलकत्ता में साइमन कमीशन आया, तब महिलाओं के जुलूस का नेतृत्व कर आप ने उसका बहिष्कार किया। १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में आप ने सक्रिय रूप से भाग लिया, परिणामस्वरूप आप को जेल भेजा गया। रिहा होने पर बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी के कार्यकर्त्ताओं के साथ आजीवन राष्ट्र सेवा सम्बन्धी कार्यक्रमों में आप भाग लेती रहीं। ●

बहादुर सिंह

आप का जन्म मार्च १९१४ ई० में ग्राम लालपुर (जिला मिर्जापुर) में हुआ। आपके पिता का नाम शिवबदन सिंह था।

आप ने अपना सार्वजनिक जीवन मिर्जापुर से शुरू किया। इसके बाद आप कलकत्ता आ गये तथा स्वाधीनता आन्दोलनों में भाग लेने लगे। बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान में विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन एवं नमक सत्याग्रह में आप ने भाग लिया। १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में आप ने बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी के संयुक्त मन्त्री के रूप में भाग लिया एवं प्रेसिडेन्सी जेल में आप को नज़रबन्दी की स्थिति में रखा गया था।



सम्प्रति बड़ाबाजार की विभिन्न सार्वजनिक संस्थाओं के माध्यम से आप समाज-सेवा में रत हैं। ●

स्व. चिरंजी लाल सर्राफ

जब महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन छेड़ा गया था, तब आप युवा कार्यकर्त्ता थे। आप की वाणी में ओज तथा विचारों में जोश था। १९३०-३२ ई० के नमक सत्याग्रह आन्दोलन के दौरान बंगाल में ब्रिटिश सरकार का दमन-चक्र चल रहा था। जब आन्दोलन ने प्रचण्ड रूप धारण कर लिया, तब सरकार जुलूस निकालनेवालों, सत्याग्रह में भाग लेनेवालों तथा धरना देनेवालों को गिरफ्तार कर बिना मुकदमा चलाये जेलों में ठूंस देती थी। अन्य हजारों

युवकों के साथ आप ने भी कारादण्ड का वरण किया, उस समय आप प्रथम मारवाड़ी युवक थे, जिसे जेल में भी 'नजरबन्द' रखा गया था। बाद में आप के विरुद्ध मुकदमा चलाया गया एवं जेल की सजा दी गयी।

रिहा होने के बाद आप मजदूरों की भलाई के लिए कार्य करते रहे। फलतः मजदूर वर्ग आप की प्राणपण से श्रद्धा करता था। ●

स्व. रामजनम मिश्र

स्वाधीनता के लिए जितने भी आन्दोलन किये गये, आप ने उन सभी में सक्रिय रूप से भाग लिया था। झण्डा लेकर आप आगे रहते एवं नारेबाजी करते थे। इसी सिलसिले में आप को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। आप में देश-भक्ति कूट-कूट कर भरी थी। ●

स्व. रामनिरंजन सरावगी

आप का जन्म तारानगर (बीकानेर) में हुआ था। आप के पिता तुलसी राम सरावगी थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने बी० ए० की डिग्री प्राप्त की।

आप समाजवादी विचारधारा के युवा कार्यकर्त्ता थे एवं बड़ाबाजार छात्र समिति के आप मन्त्री भी रह चुके थे। १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के दौरान चीफ प्रेसिडन्सी मजिस्ट्रेट की अदालत में आप ने तिरंगा झण्डा फहराया तथा सरकारी कर्मचारियों को नौकरी छोड़ने के लिए जोरदार शब्दों में अपील की। फलतः ब्रिटिश सरकार ने आप को ढाई महीने के लिए जेल की सजा दी। ●

स्व. सोहन लाल मिश्र

कलकत्ता यूथ लीग नामक एक नाट्य संस्था बनी थी, जिसका उद्देश्य समय-समय



पर नाटक खेल कर जनता की सेवा करना था। आप भी उसी से सम्बद्ध थे। जब महात्मा गांधी ने १९४२ ई० में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का आह्वान किया, तब आप उस आन्दोलन में कूद पड़े। आप ऐसे पोस्टर लिख कर दीवालों पर चिपकाते थे, जिनमें ब्रिटिश शासन के दमन के विरुद्ध नारे लिखे रहते। इसी सन्दर्भ में आप को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। रिहा होने पर भी आप देश सेवा का कार्य ही करते रहे। ●

स्व. चमेली देवी

महात्मा गांधी द्वारा संचालित १९२०-२१ ई० के असहयोग आन्दोलन के दौरान अदम्य साहस दिखा कर आप ने उसमें भाग लिया। जिन दूकानों में विदेशी माल बिकता था, उनके सामने धरना दिया और सत्याग्रह किया। १९४२ ई० में 'भारत छोड़ो' आंदोलन के समय साम्राज्यवादी शासन के विरुद्ध जो पर्चे बांटे जाते थे, आप उनको घर-घर में जा कर बाँटती थीं एवं आन्दोलन में तीव्रता लाने के लिए जुलूसों में शामिल होने हेतु महिलाओं के दिलो-दिमाग में जोश भरती थीं। ●

स्व. रासबिहारी बर्मन

आप का जन्म २५ दिसम्बर १९०९ ई० को कलकत्ता में हुआ था। आप समाजसेवक

पुरुषोत्तम दास बर्मन (टण्डन) के पुत्र थे। बड़ाबाजार के कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं में आप सक्रिय एवं अग्रणी थे। लाहौर तथा करांची में हुए कांग्रेस अधिवेशनों में आप ने बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। आप नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के विश्वासपात्रों में थे।



आप सनातन-धर्मी थे, उस में भी पुष्टि मार्ग के समर्थक। आप कलकत्ता में बलदेव मन्दिर, कोटा स्थित मथुरादास देवस्थान एवं बीकानेर के गोकुल मन्दिर के संरक्षक थे। इसके बावजूद आप अन्तर्जातीय विवाह के समर्थक थे एवं अपने पुत्र का विवाह एक गुजराती परिवार में किया। आप व्यायाम प्रेमी तो थे ही साथ ही संगीत में भी अत्यधिक अनुरक्त थे। आप आल इण्डिया म्यूजिक कान्फ्रेंस के सक्रिय सदस्य थे। आप का देहावसान २९ अक्टूबर १९७२ ई० को हुआ।

अपनी समाजसेवा और निष्ठा के लिए आप विख्यात रहे। •

स्व. ओंकार लाल शास्त्री

आप का जन्म ९ मई १९१२ ई० को सलुम्बर (उदयपुर) में हुआ। आचार्य नरेन्द्र देव एवं पण्डित सम्पूर्णानन्द के निर्देशन में आप ने काशी विद्यापीठ से शास्त्री की उपाधि प्राप्त की।

प्रारम्भ में बिजोलिया एवं रियासती आन्दोलन में आप ने भाग लिया तथा क्षेत्रीय कांग्रेस के कार्यकर्त्ता रहे। महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग और नमक सत्याग्रह आन्दोलनों में आप ने अजमेर में भाग लिया। क्रूर विदेशी शासकों के कोपभाजन बन कई बार आप को जेल-यात्रा करनी पड़ी। आन्दोलन के दौरान आप जयनारायण व्यास एवं हरिभाऊ उपाध्याय जैसे शीर्ष नेताओं के सम्पर्क में आये। आप दिल्ली में भी कई महीनों तक जेल में कैद रहे।

बाद में भूमिगत हो कर आप कलकत्ता आ गये। कलकत्ता में लोकनायक जयप्रकाश नारायण, डा० राममनोहर लोहिया, अरुणा आसफ अली आदि अग्रगण्य नेताओं से आप छद्म वेश में मिलते रहे। आप के पीछे अजमेर एवं दिल्ली के खुफिया अधिकारी लगे रहते थे। रामकुमार केजरीवाल ने अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए आप को रख लिया था। इसके साथ ही कलकत्ते की विभिन्न संस्थाओं की प्रवृत्तियों का आप अध्ययन करते रहे। जीवन पर्यन्त कांग्रेस, सर्वोदय एवं हिन्दी नाट्य परिषद आदि संस्थाओं के माध्यम से आप लोक सेवा करते रहे। •

स्व. कमला देवी पोद्दार

आप बाबूलाल पोद्दार की पत्नी थीं। उनके साथ मिल कर समाज सेवा के हर काम में आप भाग लेती थीं। पति के स्वर्गवास के बाद भी आप ने समाज एवं देश सेवा से मुख नहीं मोड़ा। १९४२ ई० के 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आन्दोलन के दौरान घर-घर में जा कर महिलाओं में आप ने पर्चे बाँटे। स्वाधीनता आन्दोलन के उद्देश्यों से महिलाओं को अवगत करा उन्हें भी जुलूसों में शामिल होने के लिए आप प्रेरित करती थीं। जीवन के अन्त तक देशहित कार्यों में आप सदैव लगी रहीं। •

स्व. बच्चू बहन

महात्मा गांधी के संचालन में छेड़े गये १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन में आप ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके दौरान आप बड़ाबाजार की विदेशी सामानों और शराब की दूकानों के सामने प्रदर्शन करने एवं धरना देनेवालों में आगे रहती थीं। विदेशी सत्ता का कोपभाजन बन कर आप को जेल भी जाना पड़ा। आप ने १९३३ ई० के आन्दोलन में भी भाग लिया। •

स्व. राजवन्ती देवी

आप का जन्म मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। आप के पति परमेश्वर पाठक थे। साधारण घराने की अशिक्षिता महिला होते हुए भी अपनी व्यवहार-कुशलता तथा



कर्मठता से आप ने बड़ाबाजार के राष्ट्रसेवियों में अपना सम्मानजनक स्थान बना लिया।

स्वाधीनता संघर्ष के आन्दोलनों में आप सोल्साह गोविन्दी देवी पटवा के साथ भाग लेती रहीं और फलतः बारम्बार गिरफ्तार भी हुईं। •

राजेन्द्र कुमार महनोत

आप स्वाधीनता सेनानी दम्पति सरदार सिंह महनोत तथा सज्जन देवी महनोत के पुत्र हैं। १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के दौरान पढ़ाई छोड़ कर आप ने देश की स्वाधीनता के लिए कार्य करना शुरू कर दिया। फलतः आप को अपने घर में ही गिरफ्तार कर लिया गया। १९४६ ई० में आप रिहा हुए। स्वाधीनता आन्दोलन में महनोत परिवार का निर्भय योगदान स्तुत्य है। •

स्व. मोहन लाल 'भूत'

आप 'भूत' के उपनाम से ही लोकप्रिय थे, वस्तुतः आप की जाति का किसी को पता नहीं था। यद्यपि आप विशेष पढ़े-लिखे नहीं थे, पर देश हित में सर्वस्व होम की



उत्कट भावना से ओत-प्रोत थे। १९२१ ई० में जब महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को तीव्र किया, तब आप उनके दैनन्दिन कार्यों में सहायक बन गए। जब भी कोई राजनैतिक कार्यकर्त्ता महात्मा गांधी से मिलने आता, तब आप ही उसकी मुलाकात का प्रबन्ध करते थे, क्योंकि महात्मा गांधी आप की बात टालते नहीं थे। उनके साथ स्वाधीनता संग्राम में भाग ले कर आप ने कारादंड भी सहा। निष्काम भाव से देश-सेवा के लिए आप याद किए जायेंगे। •

स्व. विमल प्रतिभा देवी

आप प्रकृति से कर्मठ एवं विचारों से ओजस्वी बंगाली महिला थीं। देश के स्वाधीनता आन्दोलनों में आप पति के साथ-



साथ भाग लेती थीं। विशेष रूप से बड़ाबाजार में स्थित विदेशी वस्तुओं के विक्रेताओं की दूकानों के सामने आन्दोलनकारियों के साथ आप धरना देती थीं। १९२८ ई० में जब साइमन कमीशन कलकत्ता आया, तब आप उसके विरुद्ध जुलूस की अग्रिम पंक्ति में थीं। •

स्व. स्वामी संकटानन्द

स्वाधीनता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी के नेतृत्व में १९२१ ई० में जब असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ, तब आप ने कलकत्ता में विदेशी वस्त्र बहिष्कार अभियान में सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके कारण आप को कारावास के दण्ड का भी वरण करना पड़ा, परन्तु रिहा होने के बाद पुनः आन्दोलनों में भाग लेने का आप का सिलसिला जारी रहा। •

स्व. गोविन्द देवी पटुवा

महात्मा गांधी की पुकार पर स्वाधीनता संघर्ष को प्रचण्ड तथा जीवन्त बनाने के लिए बड़ाबाजार क्षेत्र की जो महिलाएँ घर की चहारदीवारी से बाहर आईं, उनमें आप अग्रणी रहीं। आप ने कांग्रेस के हर आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। महिला जुलूस में शामिल हो कर आप विदेशी वस्त्रों की दुकानों के सामने धरना तो देती ही थीं, साथ



ही गुप्त रूप से प्रचार-कार्य भी करती थीं। विद्यासागर कालेज, सिटी कालेज एवं अन्य कई कालेजों के सामने आप टहलते हुए जाती थीं। बगल के झोले में कांग्रेस के परचे रहते थे, जिन्हें छात्र-छात्राओं एवं अध्यापकों में आप बाँट देती थीं। १९२८ ई० में कलकत्ता में साइमन कमीशन के आने पर उसका बहिष्कार एवं विरोध करनेवालों में आप भी थीं। १९४२ ई० के 'करो या मरो' सत्याग्रह में भाग लेने पर विदेशी शासकों की कोपभाजन बन कर आप जेल गयीं। अपनी निर्भीकता और देशभक्ति के लिए आप हमारी श्रद्धास्पद रहेंगी। •

स्व. हीरालाल सराफ

महात्मा गांधी के नेतृत्व में संचालित १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन में आप ने सक्रिय रूप से भाग लिया। विदेशी वस्त्रों एवं अन्य विदेशी सामान की दूकानों के सामने धरना देनेवालों की अग्रिम पंक्ति में आप रहते थे। अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जुलूसों में शामिल होकर नारेबाजी कर आप ने कारावास का दण्ड सहन किया। जब अहमदाबाद में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था, तब पश्चिम बंगाल प्रदेश प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य के रूप में आप भी सम्मिलित हुए।

कालान्तर में आप प्राकृतिक चिकित्सा

के अनुरागी हो गये और महावीर प्रसाद पोद्दार के नेतृत्व में जसीडीह स्थित प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र में रोगियों की सेवा कर आप ने सर्वत्र प्रशंसा अर्जित की। प्रकृति से ही आप कर्मठ, परोपकारी एवं समन्वयवादी थे। आप का देहान्त जसीडीह में हो हुआ। ●

स्व. बच्चा सिंह

१९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन से लेकर जितने भी आन्दोलन ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध हुए, उन सभी में आप ने भाग लिया। आप ने बच्चों को लेकर 'वानर सेना' बनायी और उसे ले कर गलियों में आप घूमा करते थे और अंग्रेजी शासन के विरुद्ध नारे लगवाते थे, जिसका जनमानस पर काफी प्रभाव पड़ता था। परिणाम-स्वरूप लोग अधिक-से-अधिक संख्या में आन्दोलन में शामिल होते थे। ●

स्व. केशर देवी आर्य

आप घासीराम आर्य की धर्म-पत्नी थीं। आप बहुत ही साहसी महिला थीं। पति के साथ स्वाधीनता आन्दोलनों में आप भाग लेती थीं। महात्मा गांधी द्वारा संचालित



असहयोग आन्दोलन के दौरान अन्य महिलाओं के साथ विदेशी वस्त्रों की दूकानों के सामने आप धरना देती थीं। साथ ही आप घर-घर जा कर आन्दोलन में शामिल होने के लिए महिलाओं में प्रेरणा जगाती थीं। उसी के चलते आप को जेल-यात्रा भी करनी पड़ी। ●

स्व. घासीराम आर्य

महात्मा गांधी के नेतृत्व में १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन के दौरान विदेशी वस्त्रों की दुकानों के सामने धरना देने में आप अग्रिम पंक्ति में रहते थे। फलतः पुलिस ने आप को गिरफ्तार कर जेल भेज



दिया था। १९३३ ई० के आन्दोलन में आप ने एक स्वयंसेवक के रूप में भाग लिया। इसके बाद हुए सभी स्वाधीनता-आन्दोलनों में आप ने एक कर्मठ देश सेवक के रूप में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा कई बार ब्रिटिश साम्राज्यशाही द्वारा दिये गये कारा-दण्डों का वरण किया। ●

नथमल अग्रवाल

स्वाधीनता संग्राम के दौरान आप आन्दोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। १९३० ई० में महात्मा गांधी द्वारा संचालित नमक सत्याग्रह के समय सरकार ने आप को गिरफ्तार कर ६ महीने के लिए जेल में डाल दिया।

सामाजिक कल्याण कार्यों में आप सोत्साह भाग लेते हैं तथा जरूरतमन्द साथी कार्यकर्ताओं की मदद भी करते हैं। ●

स्व. देवव्रत खत्री (विलायती राम)

आप बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। १९३३ ई० के आन्दोलन में आप ब्रिटिश आततायी शासकों के कोप-



भाजन बन गिरफ्तार हुए और जेल भेज दिये गये। रिहा होने पर आप सक्रिय रूप से स्वदेशी आन्दोलन में भाग लेते रहे। ●

स्व. भगवती प्रसाद तिवारी

सामान्य शिक्षा प्राप्त कर जीविकोपार्जन हेतु आप कलकत्ता में नौकरी करते थे। राष्ट्रीय आन्दोलन की ओर आप का झुकाव बढ़ा तथा सक्रिय रूप से उसमें भाग लेने



लगे। बड़ाबाजार के राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओं में आप का सम्मानजनक स्थान था, फलस्वरुप कालान्तर में आप एक वार्ड के कांग्रेस अध्यक्ष एवं मन्त्री भी रहे। ●

स्व. बृजलाल जानी

आप कलकत्ता गुजराती समाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। असहयोग आन्दोलन के दौरान बड़ाबाजार के घर-घर में जा कर विदेशी



वस्त्र नहीं पहिनने के लिए आप लोगों को परामर्श देते थे। विदेशी वस्त्रों की दूकानों पर जुलूस के साथ जा कर आप धरना देते एवं नारे लगाते थे। फलत: गिरफ्तार होकर जेल भी गये। ●

स्व. हरि बहन

आप बहुत ही निर्भीक एवं साहसी महिला थीं। आप महात्मा गांधी की अनन्य अनुयायी थीं। उनके हर आन्दोलन में सोत्साह भाग लेती थीं। विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन के दौरान आप ने विदेशी वस्त्र की दूकानों के सामने महिलाओं के जुलूस में शामिल होकर धरना दिया। १९२८ ई० में जब साइमन कमीशन कलकत्ता आया, तब उस का बहिष्कार करनेवालों में आप भी शामिल थीं। १९४२ ई० के 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' के तूफानी आन्दोलन में भाग ले कर आप ने कारावास के दण्ड का वरण किया।

आप बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी की सदस्या थीं तथा कांग्रेस मंच से आजीवन जन सेवा करती रहीं। अग्रणी राष्ट्रभक्त महिला के रूप में आप सदा याद रहेंगी। ●

स्व. विकटानन्दजी

महात्मा गांधी द्वारा संचालित १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन ने ऐसा जन-जागरण उत्पन्न किया कि साधारण जनता तो उसमें शामिल हुई ही, साधु-संन्यासियों ने भी सक्रिय रूप से अपनी भूमिका निभायी। कलकत्ता में आप तो जैसे पूरे कांग्रेसी स्वयंसेवक ही बन गये थे, जिसके चलते आप को जेल भी जाना पड़ा। रिहा होने के बाद आप सभी परवर्त्ती आन्दोलनों में भाग लेते रहे। •

स्व. भोला सिंह

आप बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी के निर्भीक कार्यकर्त्ता एवं कर्मठ स्वयंसेवक थे। स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान विदेशी



शासकों के बनाए कानून की अवज्ञा करने पर पुलिस ने लाठियों से आप की पिटाई की और जेल भेज दिया। रिहा होने के बाद आपने अपना पूरा जीवन ही देश की सेवा में लगा दिया। •

स्व. बालकृष्ण गुप्त

अध्ययन में आप की विशेष रुचि थी। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए आप विदेश गये। वहाँ आप ने आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों का गहराई से अध्ययन किया।

इंगलैण्ड से वापस आने पर आप ने राजनीति में प्रवेश किया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में व्यापक रूप से छेड़े गये १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में आप ने व्यापक रूप से भाग लिया। भारी खतरा मोल लेकर भी लोकनायक जयप्रकाश नारायण, अरुणा आसफ अली, डा० राममनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्द्धन आदि क्रान्तिकारी नेताओं को आप अपने यहाँ ठहराते थे। एक पूंजीपति होने के बावजूद उस समय आप ने जिस साहस एवं त्याग का परिचय दिया, वह निश्चय ही श्लाघनीय है। •

स्व. कालीचरण खन्ना

स्वाधीनता संघर्ष के दौरान आन्दोलनों में सोत्साह भाग लेकर आप जेल भी गए। बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी के आप सक्रिय



सदस्य थे। इसके अन्तर्गत 'किरायेदार कष्ट निवारण उपसमिति' के लिए आप ने बहुत काम किया। •

हरिराम बगड़िया

आप का जन्म लगभग १९१३-१४ ई० में हुआ। आप उत्साही समाजसेवी तथा समर्पित राष्ट्रभक्त हैं। १९३० ई० में महात्मा गांधी के नेतृत्व में छेड़े गये नमक सत्याग्रह में आप ने सक्रिय रूप से भाग लिया। महेश बथान नामक स्थान पर

बड़ाबाजार से सत्याग्रहियों का एक जत्था गया, जहाँ डा० सतीश बाबू के नेतृत्व में आप ने भी नमक बना कर ब्रिटिश कानून की अवज्ञा की। फलतः आप गिरफ्तार कर तीन महीने के लिए जेल भेज दिये गये।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद १९४८ ई० से आप 'स्टोर्स सप्लाई' के व्यवसाय में संलग्न हैं। ●

जगदीश चटर्जी

आप का जन्म १९०६ ई० में कलकत्ता में हुआ। आप के पिता आर. के. चटर्जी ने १९०५ ई० के बंग-भंग आन्दोलन में भाग लिया था। आप ने यादवपुर से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की परीक्षा १९२९ ई० में उत्तीर्ण की।



१९२२ ई० में अनुशीलन समिति में आप भाग लेने लगे। फिर १९२२ ई० में महात्मा गांधी के आह्वान पर आप ने स्कूल छोड़ दिया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में पार्क सर्कस में आयोजित कांग्रेस में आपने सेवा कार्य किया। मछुआ बाजार बम केस में आप को १९३० ई० में गिरफ्तार किया गया और ९ वर्ष तक बन्दी रहे। १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में आप पुनः गिरफ्तार हुए एवं २ वर्ष तक कैद रहे।

आप पश्चिम बंग कांग्रेस समिति के १९२९ ई० से ही सदस्य हैं। सम्प्रति बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी (इ) के आप अध्यक्ष हैं। १९७२ ई० से ही स्वतन्त्रता सेनानी संघ के आप सभापति हैं। आप कलकत्ता फल व्यवसायी संघ के १९६० ई० से अध्यक्ष हैं। ●

हनुमान प्रसाद बाजोरिया

आप कर्मठ कांग्रेसी कार्यकर्त्ता और महात्मा गांधी के अनन्य अनुयायी हैं। १९३० ई० के नमक सत्याग्रह आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने पर आप को ६ माह के कारावास का दण्ड सहना पड़ा।

सामाजिक तथा सार्वजनिक सेवा कार्यों में भी आप भाग लेते रहे हैं। जरूरतमन्दों की सहायता करने को आप सदा तत्पर रहते हैं। ●

स्व. सरस्वती देवी रांका

आप स्वाधीनता सेनानी सरदार सिंह महनोत की भतीजी थीं। आप के पति नागपुर के पूनम चन्द रांका के अनुज थे। महात्मा गांधी के नेतृत्व में संचालित असहयोग आंदोलन के दौरान आप ने कई महीनों तक विदेशी वस्त्रों की दूकानों के सामने धरना दिया। इस दौरान आप ने दो बार जेल-यात्रा की। १९३० ई० के नमक सत्याग्रह आन्दोलन में अपनी चाची सज्जन देवी महनोत के साथ आप ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

नागपुर में भी आप सार्वजनिक सेवा कार्यों में भाग लेती रहीं। आप स्वभाव की सरल एवं विचारों से ओजस्वी महिला थीं। आप के असामायिक निधन से मारवाड़ी समाज में एक साहसी और कर्मठ कार्यकत्री महिला का स्थान रिक्त हो गया। ●

बनवारी लाल जुझारसिंहका

आप का जन्म पौष शुक्ला २ सम्वत् १९६४ को हुआ। कांग्रेस के आन्दोलनों में आप ने बराबर सक्रिय रूप से भाग लिया।



महात्मा गांधी के नेतृत्व में संचालित १९३०ई० के नमक सत्याग्रह आन्दोलन में आप कलकत्ता में गिरफ्तार हुए एवं ६ माह का कारादण्ड मिला। आप १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में पुनः गिरफ्तार किये गये तथा २० दिनों के बाद रिहा हुए।

सम्प्रति 'स्टोर्स सप्लाई' व्यवसाय में आप संलग्न हैं। ●

स्व. डा. गिरधारी लाल अरोड़ा

आप एक सफल चिकित्सक थे। कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं एवं गरीबों की आप निःशुल्क चिकित्सा करते थे। असहयोग आन्दोलन के दौरान सत्याग्रह में भाग ले कर आप जेल भी गए। आजन्म 'सादा जीवन, उच्च विचार' आप का आदर्श रहा। ●

शिवनाथ शुक्ल

प्रयाग सेवा समिति के आप स्काउट-मास्टर रह चुके हैं। पं० अम्बिका प्रसाद बाजपेयी के साथ कलकत्ता आ कर आप ने सेवा समिति की स्थापना की, जिसके तत्वाव-धान में जगह-जगह शिविर लगा कर सैकड़ों युवकों को स्काउटिंग में प्रशिक्षित किया।

१९४२ ई० में महात्मा गांधी के नेतृत्व में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में आप ने सक्रिय रुप से भाग लिया। अंग्रेजी सेना का मार्ग अवरुद्ध करने हेतु खदानों से विस्फोटक (डाइनामाइट) एकत्र कर सामरिक महत्व के पुलों को उड़ाने के लिए उसे आप सहयोगी राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं को देते थे।

आप मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के सेवा-विभाग के मन्त्री भी रहे। जहाँ कहीं सोसाइटी सेवा कार्य करती, आप अपने स्काउटों को ले कर वहाँ प्राणपण से जुट जाते थे। सम्प्रति आप अपने गांव में सार्व-जिनक कार्यों में लगे हुए हैं। ●

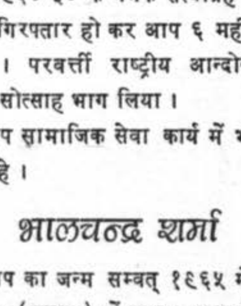
नारायण शर्मा

प्रारम्भ से ही स्वदेश सेवा में आप की अनुरक्ति थी। कांग्रेस के मंच से देश हित में राजनैतिक कार्यों में आप सदैव भाग लेते रहे। १९३० ई० के नमक सत्याग्रह आन्दो-लन में गिरफ्तार हो कर आप ६ महीने जेल भी गये। परवर्त्ती राष्ट्रीय आन्दोलनों में आप ने सोत्साह भाग लिया।

आप सामाजिक सेवा कार्य में भी सदा आगे रहे। ●

भालचन्द्र शर्मा

आप का जन्म सम्वत् १९६५ में सवाई माधोपुर (जयपुर) में हुआ। आप के पिता पं० सूर्य प्रसाद शर्मा (त्रिवेदी) थे। आप ने एफ. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९२० ई० में आप ने राजनीति में प्रवेश किया। उस वर्ष के कलकत्ता में हुए कांग्रेस अधिवेशन में



आप ने स्वयंसेवक के रूप में काम किया। १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन में देश-बन्धु चित्तरंजन दास की धर्म-पत्नी बासन्ती देवी की प्रेरणा से आप ने भी भाग लिया। खादी की फेरी करते हुए आप पकड़े गये। १९३९ ई० में जब जयपुर में सत्याग्रह हुआ, तब आप के नेतृत्व में कलकत्ता का पहला जत्था वहाँ भेजा गया। वहाँ पर गिरफ्तार हो कर आप साढ़े चार महीने कैद रहे। महात्मा गांधी के आह्वान पर १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के दौरान आप ने अनेक क्रान्तिकारी कार्य किये।

समाज सेवा में आप का प्रगाढ़ अनुराग है। १९२६ ई० में अखिल भारतीय मारवाड़ी ब्राह्मण सभा का कलकत्ता में अधिवेशन हुआ, जिसके आप प्रचार मन्त्री थे। कालान्तर में आप अनेक वर्ष तक इसके प्रधान मन्त्री रहे। १९२९ ई० में अखिल भारतीय गौड़ महासभा के ३१ वें अधिवेशन की स्वागत समिति के आप संयुक्त मन्त्री बने। आप हरिजन उत्थान समिति के सहमन्त्री, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन तथा बड़ाबाजार पुस्तकालय के उपसभापति भी रहे। विधवा विवाह के आप कट्टर समर्थक हैं।

समाचार जगत में भी आप का योगदान रहा। आप दैनिक 'विश्वमित्र' के व्यापार-सम्पादक, 'ब्राह्मण हितैषी' के अवैतनिक सम्पादक तथा 'समाज सेवक' की प्रबन्ध समिति के सदस्य रह चुके हैं।

आप दृढ़प्रतिज्ञ राष्ट्रसेवी तथा सेवाभावी समाजसेवी हैं। •

स्व. डॉ. राममनोहर लोहिया

आप का जन्म २३ मार्च १९१० ई० को राजस्थान में हुआ। बड़ाबाजार क्षेत्र के प्रखर स्वाधीनता सेनानी हीरालाल लोहिया आप के पिता थे। आप बड़े मेधावी एवं कर्मठ विद्यार्थी थे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने आप लन्दन गए। पर आप के मस्तिष्क में यह विचार कचोटने लगा कि जिन्होंने हमारे देश को छल से गुलाम बना रखा है, उनके पास किस तरह और कैसे स्वदेशोत्थान हेतु उचित उच्च शिक्षा मिल सकेगी ? फलतः आप बर्लिन चले गए और कालान्तर में उच्च शिक्षा प्राप्त कर कलकत्ता लौट आए।



आप प्रखर समाजवादी विचारक एवं मूर्धन्य स्वाधीनता सेनानी थे। जिनेवा में आयोजित 'लीग आफ नेशन्स' की बैठक में जब बीकानेर नरेश अंग्रेजों की प्रशंसा में भाषण कर रहे थे, तब आप ने न केवल उनके भाषण के विरोध में सीटी बजाई वरन् सशक्त लेख द्वारा उसका खण्डन भी किया, जो सर्वत्र बहुचर्चित हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध में जब भोले-भाले ग्रामीण भारतीय युवकों को विदेशी अंग्रेज शासक जबर्दस्ती अपनी फौज में भरती कर जर्मनों से लड़ने के लिए यूरोप ले जा रहे थे, तब आप ने डट कर इसका विरोध किया। फलतः क्रुद्ध शासन ने आप को कारागृह में बन्द कर दिया। बन्दी-वस्था में ही आप के पिता का निधन हो गया पर आप ने सरकार द्वारा पैरोल पर छोड़े जाने की शर्त्त को दृढ़ता से ठुकरा दिया। १९४६ ई० में जब कलकत्ता में मुस्लिम लीगी मन्त्रिमण्डल की शह पर बर्बर साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे, तब महात्मा गांधी

के आह्वान पर अपने प्राणों को खतरे में डाल कर आप ने साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापनार्थ अथक परिश्रम किया ।

देश को जब स्वाधीनता प्राप्त हुई, तब सार्वजनिक स्थानों से विदेशी शासकों की मूर्त्तियों को हटवा कर उनके स्थान पर अग्रगण्य भारतीय मनीषियों तथा देशभक्तों की प्रतिमाएँ स्थापित करवाने हेतु आपने सशक्त और सफल आन्दोलन चलाया । आप प्रखर सांसद थे और दीर्घ कालावधि तक आप देश के राजनैतिक क्षितिज पर छाए रहे । आपने सदा व्यक्ति की अपेक्षा समष्टि को महत्वपूर्ण माना । फलतः जिन पं० जवाहरलाल नेहरू को आपने स्वातन्त्र्य-संघर्ष में अपना आदर्श माना था, आजादी के बाद प्रधान मंत्री के रूप में उनकी प्रशासनिक अक्षमता तथा राजनैतिक दूरदर्शिता (चीन और पाकिस्तान के सन्दर्भ में) की विफलता पर आपने कटु एवं स्पष्ट शब्दों में सार्वजनिक आलोचना की । आप का सदा यह लक्ष्य रहा कि दलित एवं पीड़ित वर्ग के जीवन उत्थान हेतु ठोस काम हों, न कि खोखले नारों और ख्याली आश्वासनों पर उन्हें दिग्भ्रमित किया जाए । विभिन्न विरोधी दलों को एक सूत्र में पिरो कर एक सक्षम विकल्प राजनैतिक व्यवस्था के लिए अपने प्रयास में आप १९६७ ई० के आम चुनाव में बहुत सफल रहे, जब अधिकांश प्रान्तों में कांग्रेस के स्थान पर संयुक्त विरोधी दलों के मंत्रिमण्डल बने ।

दुर्भाग्य से अक्टूबर १९६७ ई० में ही ५७ वर्ष की अवस्था में आप का अल्प रूग्णावस्था के पश्चात् आकस्मिक निधन हो गया, जिससे देश को अपूरणीय क्षति हुई ।

समर्पित देशभक्त, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ तथा उद्भट सांसद के रूप में इतिहास में आप का सदा विशिष्ट स्थान रहेगा । •

चिरंजी लाल केजड़ीवाल

आप का जन्म १९२० ई० में हुआ । बनारसी लाल केजड़ीवाल के आप पुत्र हैं । आप ने रानीगंज (बर्दवान) से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की । फिर कलकत्ता आ कर आप कालेज में अध्ययन करने लगे । कालांतर में अर्थोपार्जन हेतु आप बिड़ला ब्रदर्स में कार्य करने लगे ।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में सक्रिय भाग ले कर आप ने २ वर्ष के लिए कारावास का दण्ड सहा । आप १९४४ ई० में आसनसोल सबडिवीजनल कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बने । फिर १९४६ ई० में आप बर्दवान जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष रहे ।



१९४७ ई० के भारत विभाजन के समय पाकिस्तान से शरणार्थी हिन्दुओं को सुरक्षित निकाल कर लाने की जिम्मेवारी आप पर सौंपी गयी । कश्मीर पर पाकिस्तान का हमला होने पर पाक-अधिकृत कश्मीर से हिन्दुओं को लाने के लिए भारत एयरवेज की सेवाएँ आप के सुपुर्द कर दी गईं । १९५३ ई० में हवाई सेवा का राष्ट्रीयकरण किये जाने पर आप १९६० ई० तक कण्ट्रोलर आफ स्टोर्स के पद पर रहे ।

आप सामाजिक सुधार की दिशा में भी अग्रणी हैं । १९३७ ई० के रूढ़िवादी मार-

वाड़ी समाज में आप ने स्वयं बिना दहेज और बिना पर्दे के विवाह कर के युवकों के लिए आदर्श प्रस्तुत किया। कलकत्ता मारवाड़ी समाज ने आप का अभिनन्दन भी किया। कालान्तर में आप ने अनेक कन्याओं के विवाह बिना दहेज के करवाये। १९६४ से १९७२ ई० तक मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की रानीगंज शाखा के मन्त्री पद पर रह कर आप ने उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। सम्प्रति आप वहाँ की सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से समाजोत्थान के लिए कार्य कर रहे हैं।

आप कर्मठ समाजसेवी तथा निर्भय देशभक्त हैं। ●

अजहर अली खां

आप का जन्म १९११ ई० में पवामा गाँव (शाहजहाँपुर) में हुआ। आप के पिता आजाद अली खां थे। तरुणावस्था से ही आपकी रूचि हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य स्थापित करने में थी। अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी के सानिध्य में भी साम्प्रदायिक सद्भाव कायम करने हेतु कार्य करने का आपको गौरव मिला।



आप १९३० ई० में कलकत्ता आये थे। उसी वर्ष कलकत्ता में कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग ने मिल कर 'भैंसागाड़ी आंदोलन' चलाया। आप भी उसमें सम्मिलित हो कर गिरफ्तार हुए। १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के समय अंग्रेजों के अत्याचार से त्रस्त होकर जन साधारण जब कलकत्ता से भाग रहे थे, तब उन्हें गंतव्य पर सुरक्षित पहुँचाने में आपने विशेष सहयोग दिया। अगस्त १९४६ ई० से सितम्बर १९४७ ई० तक हिन्दू कार्यकर्त्ताओं के साथ साम्प्रदायिक दंगों के विरुद्ध साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापित के लिए आपने विशेष रुप से कार्य किया। सुप्रसिद्ध समाजसेवी सीताराम सेकसरिया की अध्यक्षता में बड़ाबाजार क्षेत्र में एक 'शान्ति सभा' गठित की गयी, जिसके आप सक्रिय सदस्य थे। दीर्घकाल तक पश्चिम बंग प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आप सदस्य रहे। १९६२ ई० में कोलूटोला मण्डल कांग्रेस के आप अध्यक्ष बने।

अपनी समाज तथा राष्ट्र सेवा के लिए आप पश्चिम बंग सरकार द्वारा १९६३ ई० में जस्टिस आफ पीस (जे. पी.) की पदवी से अलंकृत किए गए।

आप विवेकशील तथा कर्मठ राष्ट्रभक्त हैं। ●

ब्रह्मदेव मोहता

आप का जन्म फाल्गुन शुक्ला ४ सम्वत् १९७० को बीकानेर में हुआ। आप के पिता बालकृष्ण मोहता थे। सामाजिक सुधार में आप की विशेष रुचि है। आप ने माहेश्वरी होते हुए भी स्वयं ओसवाल समाज में अन्तर्जातीय विवाह किया।

स्वतन्त्रता संघर्ष में आप ने बराबर सक्रिय रूप से भाग लिया। १९४२ ई० के 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आन्दोलन के दौरान फरार क्रान्तिकारी मदन लाल बागड़ी को आप ने शरण दी। ब्रिटिश गुप्तचर विभाग के कोपभाजन बन आप गिरफ्तार हुए और अलीपुर जेल में २ माह की सजा भोगी। ●

विनायक प्रसाद हिम्मतसिंहका

आप का जन्म २ अक्टूबर १९११ ई० को दुमका (संथाल परगना) में हुआ। केदारनाथ हिम्मतसिंहका के आप पुत्र हैं। आप स्नातक और बी. एल. की उपाधि उत्तीर्ण कर वकालत में संलग्न हैं।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में अंग्रेजों से लड़े गए स्वतन्त्रता संग्राम में आप ने सक्रिय भाग लिया। १९३२ ई० के आन्दोलन के दौरान आप जेल गए। फिर १९३४ ई० में



डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में हुए बम्बई अधिवेशन में भाग लिया। १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' के क्रान्तिकारी शंखनाद पर आप फिर संघर्ष में कूद पड़े और अलीपुर सेन्ट्रल जेल में एकाकी कारावास का दण्ड सहा।

शैक्षणिक जगत में आप का महत्वपूर्ण योगदान रहा। १९३८ ई० में राजगीर में आर.डी. हिम्मतसिंहका हाईस्कूल, १९४१ ई० में पुरी में उत्कल हिन्दी विद्यालय तथा १९५२ ई० में कोकराझार (असम) में डी.एन. हिम्मतसिंहका हाई स्कूल की आप ने स्थापना की। गौहाटी विश्वविद्यालय की स्थापना में आप का प्रमुख हाथ रहा। बिड़ला इंस्टीच्यूट आफ टेक्नोलाजी तथा हिन्दी प्रचार मण्डल (शिलांग) के भी आप अध्यक्ष रह चुके हैं।

समाज सुधार में आप का दृढ़ विश्वास है। रूढ़िवादी समाज के प्रबल विरोध के बावजूद आप ने बिना पर्दे के शादी की और भावी पीढ़ी के लिए पथ-प्रदर्शक बने। युद्ध में वीरगति प्राप्त जवानों के परिवारों के हितार्थ दिल्ली में स्थापित 'विधवा संघ' के लिए पूर्वांचल में धन-संग्रह समिति के आप अध्यक्ष हैं। इण्डियन रेडक्रास सोसाइटी के आप सदस्य हैं।

आप का सर्वाधिक प्रशंसनीय योगदान क्रीड़ा-जगत में रहा है। राजस्थान क्लब के ३६ वर्ष तक आप महासचिव रहे और फुटबाल जगत में इसकी गरिमा को सर्वोच्च शिखर तक पहुँचाने के लिए अथक परिश्रम किया। इस दौरान राजस्थान क्लब ने आइ. एफ. ए शील्ड तथा डी. सी. एम. टूर्नामेण्ट जैसी प्रतिष्ठामूलक प्रतियोगिताएं जीतीं, साथ ही डूरण्ड टूर्नामेण्ट के फाइनल में वह पहुँचा। अनेक वर्ष तक आप जार्ज टेलीग्राफ क्लब के अध्यक्ष, बंगाल बाक्सिंग एसोसियेशन के उपाध्यक्ष, ईस्ट बंगाल तथा आर्यन क्लबों की कार्यकारिणी सदस्य रहे। नेशनल क्रिकेट एसोसियेशन आफ बंगाल के आप आजीवन सदस्य हैं। आप क्रीड़ा जगत सम्बन्धी अपने विचार आकाशवाणी पर प्रसारित तो करते ही हैं, साथ ही लेखों तथा पुस्तिकाओं के रूप में भी उन्हें प्रकट करते रहते हैं।

व्यावसायिक क्षेत्र में आप सुप्रतिष्ठित हैं। आप फ्रंटियर चेम्बर आफ कामर्स (शिलांग) के अध्यक्ष, बिहार टूरिस्ट ट्रैफिक एडवाइजरी बोर्ड (राजगीर) के चैयरमेन तथा आटोमोबाइल एसोसियेशन आफ इस्टर्न इण्डिया के सदस्य रह चुके हैं।

अपनी बहुमुखी प्रतिभा तथा उद्यमी व्यक्तित्व से आप युवा पीढ़ी के लिए आदर्श बन गए हैं। ●

मुरलीधर सोंथलिया

आप का जन्म आषाढ़ सुदी ४ संवत् १९७४ को कलकत्ता में हुआ। सागरमल सोंथलिया के आप पुत्र हैं। आपने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की। साहित्य और संगीत में आपकी अभिरुचि है। सम्प्रति वस्त्र व्यवसाय में आप संलग्न हैं।

आप का झुकाव प्रारंभ से ही वामपंथ की ओर रहा। १९५९ ई० में डॉ० विधान चन्द्र राय जब मुख्य मन्त्री थे, तब खाद्य आन्दोलन में भाग ले कर आप गिरफ्तार हुए। जब साम्यवादी दल का विभाजन हुआ, तब से आप मार्क्सवादी साम्यवादी दल के साथ प्रतिबद्ध हैं। कलकत्ता नगर निगम तथा पश्चिम बंगाल विधान सभा निर्वाचनों में आप दल के उम्मीदवार रहे। आपात्काल के विरोध में सत्यनारायण पार्क में सभा आयोजित करते हुए आप गिरफ्तार हुए।

१९५५ ई० से ही आप सामाजिक कार्यों में भाग लेने लगे। रामगढ़ तथा जयपुर में आयोजित कांग्रेस अधिवेशनों में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के स्वयंसेवक के रूप में आप ने सेवा कार्यों में भाग लिया। १९५७ ई० में सदासुख कटरा ट्रेडर्स एसोसियेशन की स्थापना में आप का प्रमुख योगदान रहा। मर्चेण्ट चेम्बर आफ कामर्स की कार्यकारिणी के आप सदस्य रह चुके हैं तथा भारत चेम्बर्स से भी सम्बद्ध हैं। मकान - मालिकों की ज्यादती के खिलाफ किरायेदारों के आंदोलनों में आप सक्रिय भाग लेते रहे हैं। वर्त्तमान में आप बड़ाबाजार ट्रेडर्स एसोसियेशन तथा बड़ाबाजार ब्युटीफिकेशन सोसाइटी के सभापति और वेस्ट बंगाल वेलफेयर सोसाइटी के उपसभापति हैं।

आप प्रबुद्ध एवं कर्मठ राजनैतिक कार्यकर्त्ता हैं। ●

पन्नालाल गोयनका

आप का जन्म भाद्रपद कृष्णा ९ सम्वत् १९७३ को हुआ। आप के पिता का नाम सूरजमल गोयनका है। महात्मा गांधी के नेतृत्व में छेड़े गये १९३० ई० के नमक सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने के कारण आप को गिरफ्तार कर २८ दिनों के लिए जेल भेजा गया। ●

स्व. गोविन्द प्रसाद गोयनका

आप का जन्म चैत्र शुक्ला ११ सम्वत् १९७८ को हुआ था। आप के पिता राम कुमार गोयनका थे। आप ने आई. ए. तक शिक्षा प्राप्त की थी।

१९४२ ई० में महात्मा गांधी के आह्वान पर 'करो या मरो' आन्दोलन के दौरान 'करो या मरो' बुलेटिन छापने के सन्देह में आप को गिरफ्तार कर २ महीने के लिए प्रेसिडेंसी जेल में रखा गया था। ●

चिन्तामणि राय

आप का जन्म ९ फरवरी १९३१ ई० में शाहजहांपुर (वाराणसी) में हुआ। भोलानाथ राय आप के पिता थे। सुप्रसिद्ध



राष्ट्रसेवी पुरुषोत्तम राय आप के चाचा हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने बी. ए., एल. एल. बी. की उपाधि प्राप्त की।

छात्रावस्था से ही आप की राजनीति में अभिरुचि रही। बड़ाबाजार छात्र कांग्रेस के आप अध्यक्ष भी बने। महात्मा गांधी के नेतृत्व में १९४२ ई० के 'करो या मरो' आन्दोलन में आप ने सक्रिय भाग लिया। सम्प्रति आप बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी (इ) के उपाध्यक्ष हैं। आप लोकप्रिय श्रमिक नेता हैं। अपने नेतृत्व में आप ने बड़ाबाजार क्षेत्र के दरबानों तथा जमादारों को संगठित किया। विभिन्न छात्र, युवा तथा हरिजन संगठनों से आप सम्बद्ध हैं।

आप कर्मठ कार्यकर्त्ता तथा उत्साही समाजसेवी हैं। पश्चिम बंग सरकार द्वारा आप 'जे. पी.' की उपाधि से सम्मानित किए जा चुके हैं। ●

हंसराज अग्रवाल

१९३७ ई० में 'कलकत्ता यूथ लीग' नामक एक सार्वजनिक सेवा संस्था का गठन किया गया था। उसमें आप भी शामिल हुए। संस्था का मूल उद्देश्य समय-समय पर नाटक खेलना और जनता की सेवा करना था, पर



१९४२ ई० में जब 'करो या मरो' आन्दोलन छिड़ा और महात्मा गांधी ने 'भारत छोड़ो' का आह्वान दिया, तब इस संस्था के सभी सदस्य आन्दोलन में कूद पड़े। आप भी पीछे न रहे। 'करो या मरो' सम्बन्धी पर्चे आप दीवालों पर चिपकाते थे तथा गुप्त रूप से ये पर्चे एक से दूसरी जगह पर पहुँचाते थे। जब कलकत्ता यूथ लीग पर अत्याचारी ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगा दिया गया, तब आप भूमिगत हो कर आन्दोलन के लिए कार्य करने लगे। जब तक स्वाधीनता संघर्ष चला, आप बराबर दृढ़ निश्चय से उसमें भाग लेते रहे। ●

हजारीलाल जैन

आप 'मारवाड़ी छात्र निवास' में रहते थे तथा एक मेधावी छात्र थे। महात्मा गांधी द्वारा संचालित १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में आप ने अरुणा आसफ अली के साथ सक्रिय रूप से कार्य किया। आप के खिलाफ दमनकारी पुलिस का वारंट निकला, किन्तु उसकी आँखों में धूल झोंक कर आप बम्बई पहुँच गये। वहाँ भी आन्दोलन में आप भाग लेते रहे। आप का पीछा करती हुई पुलिस वहाँ भी पहुँच गयी, जिसकी भनक मिलते ही आप वहाँ से देशी रियासती क्षेत्रों में जा कर राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए कार्य करने लगे। ●

राजगृही सिंह

आप का जन्म बलिया जिले के गांव सिताबदियारा में हुआ है। कलकत्ता विश्व-विद्यालय से बी. काम., एल. एल. बी. की परीक्षा आप ने पास की।



राजनीति में आप सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं। आप ४२ नं० ब्लाक कांग्रेस कमेटी के सचिव, बड़ाबाजार जिला युवक कांग्रेस संग्राम कमेटी के संयोजक तथा बड़ाबाजार जिला युवक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रह चुके हैं। आप अपर इण्डिया एसोसियेशन के उपाध्यक्ष एवं सेण्ट्रल कलकत्ता व्यावसायिक श्रमिक कांग्रेस (यूनियन) के अध्यक्ष हैं। साथ ही अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी आप सम्बद्ध हैं।

आप सक्रिय कार्यकर्त्ता तथा संघर्षशील श्रमिक नेता हैं। ●

राम एकबाल सिंह

आप जन्म ५ अगस्त १९४२ ई० को सारण (बिहार) में हुआ। पुण्यदेव सिंह के आप पुत्र हैं। आप की शिक्षा - दीक्षा कलकत्ता में ही हुई।



आप का राजनैतिक जीवन १९६६ ई० में कांग्रेस के सदस्य रूप में प्रारम्भ हुआ, पर आपात् काल के दौरान आप जन - संघर्ष समिति से सम्बद्ध रहे। १९७७ ई० में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में जब जनता पार्टी का उदय हुआ, तब आप भी उस में शामिल हुए। कालान्तर में जोड़ाबगान जनता पार्टी के आप सभापति बने।

विभिन्न सामाजिक एवं सार्वजनिक संस्थाओं से आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध हैं। बड़ाबाजार अखिल भारतीय सेवा दल के आप संयोजक रह चुके हैं। ●

हृदयानन्द गुप्त

आप का जन्म १९४६ ई० में हुआ। बड़ाबाजार अंचल ही आपकी कर्मस्थली है।

बड़ाबाजार अंचल के अस्थायी एवं असंगठित श्रमिकों को संगठित कर उन्हें शोषण के खिलाफ संघर्ष रत करने में आप की प्रमुख भूमिका रही है। आप राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस की पश्चिम बंग शाखा के उपाध्यक्ष हैं। वर्त्तमान राजनीति में भी आप सक्रिय हैं और कांग्रेस (संगठन) से सम्बद्ध हैं।



व्यायाम तथा कुश्ती में आप का विशेष अनुराग है। इस हेतु आप ने बड़ाबाजार व्यायाम समिति की स्थापना की और सैकड़ों युवकों को कसरत करने लिए प्रेरित किया। आप खुद भी एक अच्छे पहलवान हैं।

सनातन हिन्दू संस्कृति के प्रचार - प्रसार के लिए आप कटिबद्ध हैं। अपनी व्यायामशाला के पास ही आप ने हृदयेश्वर शिव मन्दिर की स्थापना की है, जिसकी चतुर्दिक दीवालों पर वैदिक ऋचाएं अर्थ सहित अंकित हैं। समय - समय पर आप विभिन्न यज्ञादि का भी आयोजन करते रहते हैं।

आप धर्मनिष्ठ व्यक्ति तथा संघर्षशील श्रमिक नेता हैं। ●

कृष्णगोपाल सिन्हा

आप का जन्म २१ मई १९४७ ई० को खवशी ग्राम (सारण) में हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने बी. ए. की उपाधि प्राप्त की।



छात्र जीवन से ही आप का राजनीति में रुझान रहा। कांग्रेस (संगठन) के आप कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे। आपात काल के दौरान आप ने लोकतन्त्र की रक्षा हेतु कारावास के दण्ड का वरण किया। १९७७ ई० में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में जनता पार्टी का गठन होने पर आप बड़ाबाजार जिला कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य बने, सम्प्रति अध्यक्ष हैं।

विभिन्न सामाजिक एवं सार्वजनिक सेवा संस्थानों से आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध हैं। आप न्यू नेशनल हाईस्कूल के संस्थापक सदस्य, अपर इण्डिया एसोसियेशन के वरिष्ठ महामंत्री तथा कलकत्ता ड्रामा एकेडमी के सह-सभापति हैं।

आप उत्साही तथा उद्यमी कार्यकर्त्ता हैं।

●

अजय गोपाल सिन्हा

आप का जन्म ३ दिसम्बर १९४६ ई० को हुआ। स्वतन्त्रता सेनानी जोगेन्द्र सिंह के आप पुत्र हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने बी. कॉम. की उपाधि प्राप्त की।

आप कांग्रेस (इ) के सक्रिय सदस्य हैं। १९७७ ई० में आप बड़ाबाजार युवक कांग्रेस



(इ) के अध्यक्ष बने। विभिन्न मजदूर संगठनों के भी आप सभापति हैं।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी तथा अन्यान्य विभिन्न सार्वजनिक सेवा संस्थाओं से आप सक्रिय सदस्य अथवा पदाधिकारी के रूप में सम्बद्ध हैं। ●

राधेश्याम बजाज

आप का जन्म ४ मार्च १९५४ ई० को छोटीखाटू (राजस्थान) में हुआ। सालिगराम बजाज के आप पुत्र हैं। कलकत्ता विश्व-



विद्यालय से बी. कॉम. (आनर्स) की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप ने चार्टर्ड एकाउण्टेंट तथा

कम्पनी सेक्रेटरी की उपाधि प्राप्त की है। सम्प्रति आप हिन्दुस्थान वायर्स में कार्यरत हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आप निष्ठावान कार्यकर्त्ता हैं। आपात्-काल के दौरान जन संघर्ष समिति के आह्वान पर संघ पर से प्रतिबन्ध उठवाने हेतु आप ने कलकत्ता में सत्याग्रह किया और कारावास के दण्ड का वरण किया।

आप प्रतिभाशाली तथा कर्मठ युवक हैं।●

जीवनमल झंवर

आप का जन्म २ दिसम्बर १९५५ ई० को जसवन्तगढ़ (राजस्थान) में हुआ। उदयचन्द झंवर के आप पुत्र हैं। जसवन्तगढ़ में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के आप अग्रणी कार्यकर्त्ता रहे। बी. कॉम. की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप कलकत्ता आ गए। वर्त्तमान में जयश्री केमिकल्स में आप सेवा रत हैं।



राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आप कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। आपात्-काल के दौरान संघ पर लगे दमनकारी प्रतिबन्ध के खिलाफ जन संघर्ष समिति के आह्वान पर आप ने सत्याग्रह कर कारावास के दण्ड का वरण किया।

अपनी जन्मस्थली के उन्नयन हेतु आप सजग हैं। जसवन्तगढ़ नागरिक परिषद के आप सह-मन्त्री हैं।

आप जागरुक तथा सेवानिष्ठ युवक हैं।●

नरेश कुमार दारुका

आप का जन्म कलकत्ता महानगर में हुआ। श्यामसुन्दर दारुका के आप पुत्र हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. कॉम., एल-एल. बी. की उपाधि प्राप्त कर आप पैतृक लौह व्यवसाय में संलग्न हैं।

तरुणावस्था से ही आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निष्ठावान सदस्य हैं। जयप्रकाश नारायण के आह्वान पर आप जन संघर्ष समिति में शामिल हुए तथा आपात-काल के विरुद्ध संघर्ष में सक्रिय भाग ले कर जेल गए। कालान्तर में हावड़ा अंचल में आप संघ के प्रचारक रहे। १९७८ ई० में जब पश्चिम बंगाल में अतिवृष्टि के कारण विनाशकारी बाढ़ आई, तब संघ की बाढ़ सेवा समिति की ओर से हावड़ा जिले के अगम्य ग्राम्यांचलों में जा कर आप ने १ माह तक राहत कार्य किया।

आप अनुशासन प्रिय तथा सेवानिष्ठ युवक हैं। ●

स्व. मोहन लाल मक्कड़

आप ने कलकत्ता नगर निगम में पार्षद के रूप में अपने वार्ड (क्षेत्र) का ९ वर्ष तक प्रतिनिधित्व किया। अपने वार्ड की जनता के सुख-दुःख का आप हमेशा ध्यान रखते थे। फलतः आप के पिता की स्मृति में मछुआ बाजार के पास में स्थित सड़क का नाम 'बाल मुकुन्द मक्कड़ रोड' रख दिया गया।

आप जागरुक व सेवाभावी व्यक्ति थे।●

बालकृष्ण चतुर्वेदी

आप का जन्म संवत् १९५९ में हुआ है। लालजीमल चतुर्वेदी आप के पिता थे। तरुणावस्था से ही आप कलकत्ता महानगर में अपने पैतृक व्यवसाय – शेयर बाजार में संलग्न हैं।

स्वाधीनता संग्राम के दौरान नेतृत्व-गण जब किसी आन्दोलन का आह्वान करते, तब आप उस पर ओजपूर्ण प्रेरक कविता बना कर जन सामान्य में गा-गा कर प्रचार करते थे। साथ ही आप जुलूसों तथा पिकेटिंग में सक्रिय भाग लेते थे। फलतः गिरफ्तार हो कर आप ने कारावास के दण्ड का वरण भी किया।

आप आशु कवि तथा निर्भय देशभक्त हैं।●

स्व. चिरंजीलाल सराफ

आप का जन्म कार्तिक बदी १३ संवत् १९६४ को फतेहपुर-शेखावाटी (राजस्थान) में हुआ। कलकत्ता महानगर ही आप की कर्मस्थली रहा।



आप बड़े निर्भीक, निराभिमानी तथा संघर्षशील व्यक्ति थे। स्वतन्त्रता संग्राम में आप ने बाल्यावस्था से ही भाग लिया और कालान्तर में २२ बार जेल यात्रा की। प्रथम बार जब आप दण्डित हुए, तब मात्र ८½ वर्ष के थे। कारावास के दौरान आप पर की गई ज्यादतियों के प्रतिवाद में कई बार संयुक्त बंगाल विधान सभा में जवाब-तलब किया गया। गदर पार्टी, सशस्त्र क्रान्तिकारियों तथा कांग्रेसी नेताओं से आप का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। आप उग्र क्रान्तिकारी थे और बाद में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के निकटतम सहयोगी बन गए। आप पहिले मारवाड़ी युवक थे जो कट्टर कम्युनिष्ट हुए। भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी के संस्थापकों में आप भी थे।

अध्ययन एवं मनन में आप की गहरी रुचि थी। साहित्य एवं राजनीति से सम्बन्धित १५०० श्रेष्ठ पुस्तकें आप ने संग्रहीत की थीं।

आप का निधन कार्तिक बदी १३ संवत् २०३४ को हुआ। आप अग्रणी स्वतन्त्रता-संग्रामी तथा प्रबुद्ध चिन्तक थे।●

फूलेश्वर त्रिपाठी

आप का जन्म १ जनवरी १९१३ ई० को पिन्डी (देवरिया) में हुआ। आगरा विश्वविद्यालय से आपने स्नातक की उपाधि प्राप्त की। कलकत्ता महानगर में पत्रकार एवं लेखक के रूप में आप कार्यरत हैं। अनेक दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रों के लिए आप ने काम किया है।



स्वतन्त्रता-संघर्ष में निरन्तर योगदान के कारण आप को वर्षों फरार एवं नजरबन्द रहना पड़ा। छात्र, शिक्षक एवं श्रमिकों को संगठित करने में आप का योगदान रहा है। श्रमिक संगठन बी. पी. एन. टी. यू. सी. की कार्यकारिणी के आप सदस्य रह चुके हैं। भूतपूर्व मुख्यमन्त्री अजय मुखर्जी के साथ कांग्रेस का परित्याग कर आप बंगला कांग्रेस में शामिल हुए। बड़ाबाजार बंगला कांग्रेस के आप दीर्घ काल तक मन्त्री रहे।

अपर इण्डिया एसोसियेशन के प्रधान मन्त्री के रूप में इसके सभागार की रक्षा हेतु आप ने दीर्घ काल तक मुकदमा लड़ा।

आप संघर्षशील तथा जागरुक कार्यकर्त्ता हैं। ●

नथमल सराफ

राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के आप समर्पित स्वयंसेवक हैं। १९३० ई० के नमक सत्याग्रह में सोत्साह भाग ले कर आप गिरफ्तार हो कर जेल गए। आप कांग्रेस के लगनशील तथा कर्मठ कार्यकर्त्ता रह चुके हैं।

आप उदारमना व्यक्ति हैं तथा जरुरत-मन्दों की मदद किया करते हैं। ●

स्व. कृष्ण चन्द्र टण्डन

आप का जन्म १ दिसम्बर १९१६ ई० में हुआ था। देवी प्रसाद टण्डन के आप पुत्र थे। मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर आप ने होम्योपैथी में डिप्लोमा लिया। आप मुद्रण व्यवसाय में संलग्न थे।



बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी के आप मंत्री रह चुके थे। कलकत्ता नगर निगम निर्वाचन में आप कांग्रेसी प्रत्याशी थे।

आप धार्मिक, जातीय तथा सार्वजनिक सेवा कार्यों में रुचि रखते थे। गंगासागर मेले में आप प्रति वर्ष तीर्थयात्रियों की सेवा में सहयोग करते थे। कलकत्ता युवक सभा तथा खत्री समाज के मन्त्री पद पर रह कर आपने सामाजिक उत्थान में योग दिया।

७ सितम्बर १९७७ को आप का निधन कलकत्ता में हुआ। आप जागरुक तथा कर्त्तव्यनिष्ठ कार्यकर्त्ता थे। ●

पं. देवदत्त मिश्र

आप का जन्म एटा (उत्तर प्रदेश) में हुआ। मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप कलकत्ता महानगर आ गए। पत्रकारिता से आप ने जीवनारम्भ किया। दैनिक विश्वमित्र में आप सह-सम्पादक रहे। कालान्तर में अपनी योग्यता के बल पर आप इसके कानपुर संस्करण के सम्पादक बन गए।

स्वाधीनता संग्राम के दौरान आप 'हिन्दी नाट्य परिषद' के उत्साही सदस्य रहे। राष्ट्रीय आन्दोलनों में आप भाग लिया करते थे। सामाजिक कार्यों में आप यथा-संभव योगदान करते हैं।

आप प्रबुद्ध पत्रकार तथा राष्ट्र-प्रेमी हैं। ●

सुशील हिम्मतसिंहका

मात्र १४ वर्ष की तरुणावस्था में ही आप ने महात्मा गांधी के आह्वान पर 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में सक्रिय भाग ले कर स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान किया। फलतः अत्याचारी ब्रिटिश शासकों का कोप-भाजन बन कर आप को कारावास का दण्ड सहना पड़ा। वर्धा, नागपुर तथा जबलपुर की जेलों में आप बन्द रहीं। वहीं बन्दी अवस्था में आप का प्रगाढ़ परिचय सुप्रसिद्ध कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान तथा समाज-सेविका मदालसा श्रीमन्नारायण से हुआ।

कालान्तर में बम्बई से उच्च शिक्षा प्राप्त कर आप का विवाह सुप्रसिद्ध एटर्नी तथा समाजसेवी प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका के पुत्र

भगवती प्रसाद हिम्मतसिंहका के साथ हुआ। संगीत तथा क्रीड़ा जगत में आप की विशेष अभिरुचि है। कलकत्ता महानगर के विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आप सोत्साह योगदान करती हैं।

आप विदुषी तथा प्रबुद्ध महिला हैं। ●

स्व. सीताराम आर्य

आप का जन्म १८८७ ई० में सकरारा (सीतापुर) में हुआ था। लालता प्रसाद के आप पुत्र थे। अर्थोपार्जन हेतु आप कलकत्ता महानगर आए और 'लालता प्रसाद सीताराम' फर्म की स्थापना की।



तरुणावस्था से स्वाधीनता संघर्ष में आप योग देने लगे और क्रूर अंग्रेज सरकार द्वारा दण्डित कर सीतापुर जेल में बंद कर दिए गए। कलकत्ता आने के बाद आन्दोलनों में भाग ले कर आप फिर से जेल गए। जेल ही में आप ने भूतपूर्व मुख्य मन्त्री प्रफुल्ल चन्द्र सेन से बंगला भाषा सीखी और धार्मिक ग्रन्थों तथा महापुरुषों के जीवन-चरित्र का अध्ययन किया। चारुचन्द्र भण्डारी, प्रफुल्ल चन्द्र घोष आदि गणमान्य नेताओं के सानिध्य में कार्य करने का आप को अवसर मिला। १९२१ ई० में अंग्रेज शासन के विरुद्ध बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी के आन्दोलन में आप ने भाग लिया। १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के समय सत्यनारायण पार्क में आयोजित महती जनसभा की आप ने निर्भीकता से अध्यक्षता की। कालांतर में सीतापुर जिला राजनैतिक पीड़ित सम्मेलन द्वारा आप का अभिनन्दन किया गया था।

आर्य समाज में आप की दृढ़ आस्था थी। बड़ाबाजार आर्य समाज के आप सभापति रहे। इस के भवन निर्माणार्थ आप ने अथक परिश्रम से चन्दा एकत्र किया और १ नं० मुंशी सदरुद्दीन लेन में इस के लिए भूमि खरीदी। धर्म एवं संस्कृति के प्रचार हेतु की गई अपनी महत्वपूर्ण सेवाओं के लिए आप बड़ाबाजार आर्य समाज द्वारा सम्मानित किए गए।

सार्वजनिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं से आप का गहरा लगाव था। काशी विश्वनाथ सेवा समिति, बड़ाबाजार व्यायामशाला, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, हिन्दी नाट्य समिति आदि में आप ने सोत्साह योगदान किया।

१२ अक्टूबर १९६६ ई० को आप का देहावसान हुआ। आप की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए सीतापुर आर्य समाज मन्दिर में आप का चित्र लगाया गया है। कलकत्ता आर्य समाज तथा सम्बद्ध संस्थाओं ने आपको श्रद्धांजलि अर्पित की।

आप अदम्य उत्साही राष्ट्रकर्मी तथा कर्मठ समाजसेवी थे। ●

स्व. यशवन्ती बेन जेठी

कलकत्ता महानगर की आप सम्भ्रान्त गुजराती महिला थीं। स्वाधीनता संग्राम में महात्मा गांधी के आह्वान पर आप ने विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। विदेशी वस्त्रों की दुकानों के सामने धरना देते हुए गिरफ्तार हो कर आप ने कारावास का दण्ड भी सहा। साथ ही 'स्वदेशी' के प्रचार-प्रसार हेतु आप ने गुजराती

समाज के घर-घर में जा कर खादी के वस्त्र बेचे।

आप देशभक्त तथा दृढ़-संकल्पी महिला थीं। ●

प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका

आप का जन्म १६ अगस्त १८८९ ई० को दुमका (संथाल परगना) में हुआ। रामरिखदास हिम्मतसिंहका आप के पिता थे। १९०९ ई० में विद्याध्ययन हेतु आप कलकत्ता आ गए। कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त कर आप ने कानून की परीक्षा उत्तीर्ण की। वर्त्तमान में आप ख्यातिप्राप्त विधिवेत्ता (सालीसिटर) के रूप में कलकत्ता उच्च न्यायालय में कार्यरत हैं।



प्रारम्भ से ही स्वाधीनता संग्राम में आप की रुचि रही। जब आर. बी. रोडा कम्पनी में जर्मनी से आए ५० पिस्तौलों तथा ५०,००० कारतूसों को सशस्त्र क्रान्तिकारियों ने उड़ा दिया, तब इन्हें छिपाने में आप ने बहुत मदद दी। इसी सिलसिले में गुप्तचर विभाग ने क्रान्तिकारी अतुल नाग के लिखे पत्र आप के यहाँ से बरामद किए और फलतः आप दुमका में ४ वर्ष नजरबन्द रहे। १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में भी आप ने सक्रिय भाग लिया।

१९२७ ई० में आप बंगाल कौंसिल के सदस्य बने। १९३७ से १९४८ ई० तक आप तीन बार संयुक्त बंगाल विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। १९४८ से १९५२ ई० तक 'संवैधानिक तथा अन्तरिम लोक सभा' के आप सदस्य रहे। १९५६ से १९६२ ई० तक राज्य सभा तथा १९६२ से १९७१ ई० तक लोक सभा के सदस्य के रूप में आप ने अपनी कार्य-क्षमता का प्रखर परिचय दिया।

सामाजिक क्षेत्र में आप का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। १९१२ ई० में आप ने 'मारवाड़ी समाज' नामक छात्रावास की स्थापना की। १९१३ ई० में अपने सहयोगियों के साथ आप ने 'ज्ञानवर्द्धिनी सभा' की स्थापना की जिसमें व्याख्यान-वाचस्पति पं० दीनदयाल शर्मा प्रभृति विभूतियाँ युवा पीढ़ी का मार्ग-दर्शन करती थीं। १९१३ ई० में ही मारवाड़ी सहायक समिति (सम्प्रति मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी) की स्थापना में आप ने महत्वपूर्ण योग दिया और कालान्तर में आप इस के सभापति भी बने। कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी के अध्यक्ष के रूप में आप ने गोसेवा में विशेष अंशदान किया। समाज सुधार के लिए आप प्रबल आग्रही हैं। नारमल लिल्हा द्वारा विधवा-विवाह करने पर तत्कालीन रूढ़िवादी समाज ने उनके समर्थक जिन १२ व्यक्तियों को जाति-बहिष्कृत किया, उनमें आप भी थे। अनेक शैक्षणिक तथा औद्योगिक संस्थानों के ट्रस्टी के रूप में आप सार्वजनिक सेवा में अहर्निश संलग्न हैं।

बास्केटबाल, योगासान, व्यायाम आदि विभिन्न क्रीड़ाओं में आप सक्रिय भाग लेते रहे हैं। आज भी ९३ वर्ष की वयोवृद्ध अवस्था में आप पूर्णतः स्वस्थ युवक के समान ही अपनी दिनचर्या व्यतीत कर रहे हैं।

आप अग्रगण्य राष्ट्रसेवी तथा उद्भट विधिवेत्ता के रूप में समाज के लिए प्रेरणा-स्रोत बने हुए हैं। ●